चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–2

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Cheen: Dant Kathayen Aur Vishwas-2 (China: myths and beliefs-2)
Cover Page picture: The Great Wall of China
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of China

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5
चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–2 7
19 वॉग ऐर और सोने की हेयर पिन 9
20 जंगली बिल्ले की गलती 27
21 लिऑग यू चिंग की सजा 32
22 शहतूत के पेड़ का बच्चा 41
23 यो लुंग पहाड़ 48
24 ड्रैगन गेट पहाड़ 57
25 चॉदी का बर्तन और उबलता समुद्र 66
26 पॉच आदमियों के पहाड़ 81
27 मुर्गे की कलगी की कहानी 88
28 बॉसुरी बजाने वाला गूॅगा 97
29 पगोडा का पेड़ 106
30 केंचुए की ऑखें क्यों नहीं होतीं 118
31 मिन नदी 122
32 तिंग लिंग देवी 128
33 छोटा लोमड़ा और अनार राजा 136
34 पाई हुआ झील 146
35 पागल साधु 152
36 अमर लोगों का टापू 161
37 शेर के मुॅह में 167
38 मा चैन और अमर कलम 177

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–2

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या **1355** मिलियन से ज़्यादा है।

इस देश की सभ्यता भी दूसरी सभ्यताओं, जैसे भारत की मोहनजोदड़ो सभ्यता, यूरोप की रोमन सभ्यता, दक्षिण अमेरिका की माया सभ्यता आदि की तरह बहुत पुरानी है। चीन की मुख्य नदी ह्वॉग हो[1] है और चीन की सभ्यता यहीं से शुरू होती है। इसको यहाँ की "पीली नदी" भी कहते हैं। इसमें हर साल बाढ़ आती हे और उस बाढ़ में बहुत सारे लोग मारे जाते हैं। चीन का मुख्य खाना चावल है शायद इसी लिये वहाँ चावल से सम्बधित कई लोक कथाऐं हैं। इस पुस्तक में भी चावल की एक दंत कथा शामिल की जा रही हैं जो यह बताती है कि चावल चीन में कैसे आया। चीन का मुख्य उद्योग रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तन हैं।

चीन का साहित्य भी बहुत पुराना लिखा हुआ है। इनकी लोक कथाऐं और दंत कथाऐं तो **2000** साल से भी ज़्यादा पुरानी हैं। उनकी कथाऐं लिखे और कहे रूप में तब से अभी तक चली आ रही हैं जब पिरैमिड की खबर बहुत नयी थी और ब्रिटेन के स्टोनहैन्ज[2] का तो तभी हाल ही में पता चला था। चीन के साहित्य में ये कथाऐं बहुत मिल जाती हैं। चीन का पुराना साहित्य वहाँ के राजाओं के समय का है। वहाँ के शुरू के लोग, ताओ और बौद्ध लोग[3], कहानियों के जरिये ही अपनी बातों को फैलाना ज़्यादा ठीक समझते थे।

इससे पहले हमने चीन की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की थी – "चीन की लोक कथाऐं" जिसमें वहाँ की कुछ लोक कथाऐं दी गयी थीं। इस पुस्तक में हम वहाँ की कुछ दंत कथाऐं और विश्वासों की कहानियाँ दे रहे हैं। वहाँ की कहानियों में भूत, मरे हुए और स्वर्ग के जीव हमेशा से ही रहे हैं। इनमें से कुछ लोक कथाऐं इधर उधर से इकट्ठी की गयीं है पर शेष कथाऐं अंग्रेजी की एक पुस्तक[4] से ली गयी हैं। उस पुस्तक में **37** कहानियाँ हैं। उसमें से **18** कहानियाँ "चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–**1**" में प्रकाशित की गयी थीं और शेष **19** कहानियाँ इस पुस्तक के दूसरे भाग में प्रकाशित की जा रही हैं।

आशा है कि चीन देश की ये दंत कथाऐं अपने हिन्दी भाषा भाषियों को चीन के विश्वासों के बारे में काफी जानकारी देंगी।

---

[1] Hwang Ho – it is the 6th largest river of the world. It is called "Yellow River" also. Since every year it brings flood in it, it is also known as "The Sorrow of China".

[2] Pyramids of Egypt and Stonehenge of Great Britain

[3] Tao people and Bauddh people

[4] "Chinese Myths and Legends", translated by Kwok Man Ho, 2011. Available in English at the Web Site : https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends

संसार के सात महाद्वीप

Some terms used in Chinese folktales –
-- Cheng Huang -- the District god
--Crab Guard – these crabs are the guards of the Sea Dragon King who lives in the Sea
--Eastern Sea
--Jade – a semi-precious stone mostly found in South-eastern countries of Asia
--Jade Emperor – the Emperor of Sky
--Sea Dragon King – the King of the Eastern Sea
--Yen Lo Wan – The Emperor of the Sea
--Yangtzi River
A famous and the longest river of China (flowing in one country) and in Asia too. It is the third lomgest river of the world after Nile of Africa and Amazon of South America.
--China’s Great Wall –
The Great Wall of China is counted among 8 man-made wonders of the world because of being the longest structure ever built by humans. Rather than being one long continuous wall, the Great Wall of China is made up of a number of different sections. These sections were built by various dynasties over a long period of time from stone and other materials. Its main purpose was protection against attacks and invasions from the north. It stretches around 3,915 miles (6,300 kms) in length. If you measure the length of all the different sections of wall, the distance is more like 13,670 miles (22,000 kms).

Its widest section is around 30 ft (9 mtrs) wide and its highest point is around 26 ft (8 mtrs) high. Its first parts were built over 2000 years ago. A large number of workers lost their lives while building the wall. Major rebuilding of the Great Wall took place during the Ming Dynasty that began in the 14th century. Earlier sections of the wall were made from stone, wood and compacted earth. Rumours that astronauts can see the Great Wall from the Moon with the naked eye are a lie.

19 वॉग ऐर और सोने की हेयर पिन[5]

एक बार की बात है कि चीन में वॉग ऐर नाम का एक लकड़हारा रहता था। वह एक घने जंगल के किनारे पर एक छोटी सी लकड़ी की झोंपड़ी में रहता था। उसकी झोंपड़ी से बादशाह का महल एक दिन की दूरी पर था।

एक दिन जब वह जंगल के मैदान में लकड़ी काट रहा था तो उसने देखा कि एक काला बादल उसके सिर के ऊपर से गुजरा तो उसने सूरज को ढक लिया।

वॉग ऐर ने कुछ देर तक बादल की तरफ देखा तो उसको लगा कि वह बादल तो एक आदमी की शक्ल का था। उसमें उसको एक लड़की की शक्ल भी दिखायी दी जो उसको हाथ हिला रही थी।

तब वॉग ऐर को लगा कि उस लड़की को तो कोई भगा कर ले जा रहा था और यह कोई आदमी नहीं था बल्कि कोई शैतान था।

उसने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और उस बादल के पीछे पीछे भागा। उसने दूरी का अन्दाजा लगा कर अपनी कुल्हाड़ी उस बादल की तरफ फेंकी।

बादल की वजह से वह कुछ देख तो नहीं सका पर उसने एक ज़ोर की चीख सुनी। कुछ पल बाद ही उसने ऊपर से खून की कुछ बूँदें जमीन पर टपकती देखीं। उस खून के गिरने से जंगल की

[5] Wang Erh and the Golden Hair Pin – a myth from China, Asia.

जमीन पर उस बादल के जाने की दिशा में एक लकीर बनती चली जा रही थी।

वॉग ऐर उस खून की लकीर के पीछे पीछे चला और चलता चलता दूर एक घाटी में पहुॅच गया। वहॉ पहुॅचते पहुॅचते उसको रात हो गयी। बादल घाटी के आधे रास्ते में ही रुक गया और वहॉ से फिर वह गायब भी हो गया।

जैसे जैसे वॉग ऐर चॉद की रोशनी के सहारे उस पहाड़ी पर चढ़ रहा था कि अचानक ही उसको एक गुफा मिल गयी जो उस पहाड़ी को खोखला कर के बनी थी। वह गुफा ठीक उसी जगह के नीचे थी जहॉ वह बादल गायब हुआ था।

बड़ी सावधानी से वह उस गुफा में घुस गया। अन्दर उसको कुछ बोलने और फुसफुसाने की आवाजें सुनायी तो पड़ रही थीं पर ॲधेरे की वजह से उसको कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

वह उस समय यह नहीं सोच सका कि उसको क्या करना चाहिये सो वह दबे पॉव उस गुफा से लौट पड़ा और घर लौट गया।

उस रात वॉग ऐर अपने दिमाग में बहुत कुछ सोचता रहा। उसने कई तरकीबें सोचीं। आखीर में वह एक ऐसी तरकीब पर आ कर रुक गया जो ठीक काम कर सकती थी।

अपने इस नये विचार से खुश हो कर वॉग ऐर अगली सुबह बाजार गया जहॉ उसके दोस्तों की दूकानें थीं। उसको अपने उन दोस्तों की सहायता चाहिये थी।

जब वह वहाँ पहुँचा तो काफी लोग गपशप मार रहे थे और बादशाह के सिपाही चारों तरफ उन सब लोगों से सवाल करते घूम रहे थे जो भी उनको रास्ते में मिल रहा था।

वॉग ऐर ने एक जाते हुए किसान से पूछा — "क्या बात है? क्या हो गया?"

वह बोला — "अरे तुम्हें पता नहीं? बादशाह की एकलौती बेटी को कल सुबह कोई शैतान भगा कर ले गया और तबसे न किसी ने उसे देखा है और न ही उसके बारे में किसी ने कुछ सुना है।

बादशाह का कहना है कि जो कोई भी उनकी बेटी को वापस ले कर आयेगा वह उसी से अपनी बेटी की शादी कर देंगे। ज़रा सोचो बादशाह की बेटी हममें से किसी से भी शादी कर सकती है अगर हम उसको शैतान से छुड़ा कर ला दें तो।"

इस खबर के साथ ही वह किसान ठीक उस जगह की तरफ दौड़ गया जहाँ से वह शैतान उसको ले कर गया था ताकि वह उसको ढूँढ सके। वॉग ऐर की अब समझ में आ गया था कि कल क्या हुआ था।

बादशाह हर उस आदमी से मिलने के लिये तैयार थे जो भी उनकी बेटी की खबर ला रहा था। उन्होंने आधी रात तो बहुत सारे लोगों की कहानियाँ और कई भविष्य बताने वालों को सुनते सुनते ही गुजार दी थी। इन सबका कहना था कि वे राजकुमारी के बारे में जानते थे।

बादशाह ने वॉग ऐर को भी बुलाया। वॉग ऐर ने बादशाह के सामने सिर झुकाया और फिर उसने अपनी कहानी बादशाह को सुनायी। पहले तो बादशाह ने उसकी कहानी कुछ बेमन से सुनी पर जैसे ही उसकी कहानी आगे बढ़ी तो बादशाह को उसमें रुचि हो आयी।

वॉग ऐर की कहानी में बादशाह को काफी सच्चाई लगी। वॉग ऐर ने भी देखा कि बादशाह को उसकी बात पर विश्वास है तो उसने अपनी बात पॉच सौ सूअर, एक कुल्हाड़ी, एक बड़ी टोकरी, एक घंटी और एक एक हजार फीट लम्बी रस्सी की मॉग के साथ खत्म की।

बादशाह ने वॉग ऐर को न केवल जो कुछ उसने मॉगा वह दिया बल्कि अपना एक कप्तान और बीस सिपाही भी उसकी सहायता के लिये दे दिये।

लकड़हारा उन इक्कीस लोगों के साथ अपना मॉगा हुआ सामान ले कर उस गुफा की तरफ चल दिया जहॉ वह शैतान गायब हुआ था। उनको वहॉ तक पहुॅचने में दो दिन लग गये।

सब लोग वॉग ऐर के पीछे पीछे बड़ी सावधानी से उस गुफा के अन्दर घुसे। उन्होंने देखा कि उस गुफा में नीचे एक जगह थी पर उसमें नीचे जाने का रास्ता कोई दिखायी नहीं दे रहा था।

एक लालटेन की रोशनी की सहायता से उन्होंने एक सूअर को रस्सी से बाँधा और उसको एक डंडे के सहारे नीचे उतार दिया। यह डंडा उनको वहीं गुफा के एक कोने में पड़ा मिल गया था।

जब वह सूअर नीचे की तरफ उतारा जा रहा था सब लोग चुपचाप खड़े देख रहे थे। जब वह नीचे तली में पहुँच गया तो उन्होंने कुछ कदमों के चलने की आवाजें सुनी और फिर खुशी की आवाजें आयीं।

उसके बाद कैप्टेन ने वह रस्सी खींच ली। रस्सी में से सूअर तो जा चुका था पर रस्सी टूट गयी थी और उसमें खून लगा था। इसी तरह से बाकी के चार सौ निन्यानवे सूअर भी नीचे उतारे गये और हर बार रस्सी वैसी ही हालत में वापस आयी।

आखिरी सूअर को नीचे उतारने के बाद वॉग ऐर ने घंटी टोकरी में बाँधी और कुल्हाड़ी ले कर उस टोकरी में सिकुड़ कर बैठ गया। वॉग ऐर ने उन सबसे कहा कि जब वह घंटी बजाये तो वे लोग रस्सी खींच लें।

तीन सिपाहियों ने मिल कर लकड़हारे वाली टोकरी धीरे धीरे नीचे गिरा दी। वॉग को वह यात्रा बहुत लम्बी लगी पर जब वह नीचे पहुँचा तो वह फिर से एक बड़ी सी गुफा में पहुँच गया।

वहाँ आग जल रही थी और उस आग की रोशनी से उस गुफा में बहुत हल्की सी रोशनी हो रही थी।

जब वॉग ऐर की ऑखें ॲधेरे में देखने के लायक हो गयीं तो उसने अपने चारों तरफ बहुत सारे शैतान देखे। इनमें से कुछ बहुत ज़ोर से खर्राटे मार रहे थे। कुछ दर्द से कराह रहे थे। कुछ अपने पेट पर हाथ फेर रहे थे।

वे अपने बीच किसी अजनबी को देख नहीं पाये सो वॉग ऐर अपनी कुल्हाड़ी हाथ में लिये हुए टोकरी में से बाहर निकला और हर एक शैतान के पास जा कर उसने अपनी तेज़ धार वाली कुल्हाड़ी से उसका सिर काट दिया। जल्दी ही वह गुफा खून भरी लाशों और कटे हुए सिरों से भर गयी।

सारी गुफा शान्त पड़ी थी। उसी शान्ति में उसने एक धीमी सी आवाज सुनी जो गुफा की मोटी मोटी दीवारों से टकरा कर गूॅज कर आ रही थी।

वॉग ऐर उसी दिशा में चल दिया जिधर से वह आवाज आ रही थी तो वह एक ऐसे ऊबड़ खाबड़ रास्ते पर आ गया जो उसी गुफा में से काट कर बनाया गया था।

वह रास्ता इतना नीचा था कि उस रास्ते में उसको अपने हाथों और घुटनों के बल रेंग कर जाना पड़ रहा था। साथ में वह रास्ता गन्दा और ॲधेरा भी था। उस रास्ते से हो कर वह एक और ॲधेरे कमरे में आ गया।

उसी कमरे के बीच में राजकुमारी बैठी हुई थी। वह एक कपड़े धोने वाले टब के सहारे बैठी हुई थी जिसमें बहुत सारे कपड़े भरे हुए थे और वह रो रही थी।

वॉग ऐर ने उसको बड़ी कोमल और धीमी आवाज में पुकारा ताकि और दूसरे शैतानों को उसकी आवाज न सुनायी दे जो इधर उधर छिपे हो सकते थे।

राजकुमारी वॉग ऐर को वहॉ देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। वॉग ऐर ने उसके सामने सिर झुकाया।

राजकुमारी बोली — "मैं तुमको यहॉ देख कर बहुत आश्चर्य में हूॅ। पर तुम हो कौन? और तुमने मुझे ढूॅढा कैसे? तुमको कैसे पता कि मैं कौन हूॅ?"

तब वॉग ऐर ने पिछले तीन दिनों की सारी घटनाऐं उसको जल्दी जल्दी बता दीं। वह बोला — "जब आप आजाद हो जायें तब आप मुझसे कोई भी सवाल पूछ सकती हैं पर अभी तो आप मुझे यह बतायें कि इन शैतानों का राजा कहॉ छिपा है।"

राजकुमारी ने कहा — "वह अपनी गुफा में आराम कर रहा है। वह तुम्हारी कुल्हाड़ी की मार से बहुत घायल हो गया था। वह अब चल भी नहीं सकता और मुझे उसकी सेवा करनी है।"

यह कह कर राजकुमारी ने गुफा के एक तरफ को जाते हुए एक रास्ते की तरफ इशारा कर दिया जो उस गुफा की तरफ जाता

था जिसमें वह शैतानों का राजा आधी बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ था।

वॉग ऐर ने राजकुमारी को एक पुल्टिस[6] तैयार करने के लिये कहा सो उसकी सलाह के अनुसार राजकुमारी ने वह पुल्टिस तैयार की जो उसको उस शैतानों के राजा के सिर पर लगानी थी।

वह पुल्टिस ले कर शैतानों के राजा के कमरे की तरफ चल दी और वॉग ऐर उसके पीछे पीछे चल दिया।

शैतानों का वह राजा आधी बेहोशी की हालत में अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था। उसने अपना सिर पकड़ा हुआ था और वह धीरे धीरे कराह रहा था।

वहाँ जा कर वह राजकुमारी बोली — "ओ शैतानों के राजा, मैं तुम्हारे दर्द के लिये एक बहुत अच्छी दवा ले कर आयी हूँ। बस तुम ज़रा आँखें बन्द कर के आराम से लेटो। मैं जल्दी से तुम्हारा इलाज करती हूँ।"

कह कर उसने अपनी लायी हुई पुल्टिस उसके सिर पर रखी। वॉग ऐर चुपचाप उसके सिर के पीछे चला गया। वहाँ से उसने उस शैतान के सिर के दो टुकड़े कर दिये।

वॉग ऐर राजकुमारी को अपनी टोकरी तक ले आया जिसको सिपाहियों ने उस गुफा में नीचे लटकाया था। उसने राजकुमारी को

[6] Poultice – a kind of semi-solid paste made from herbs etc used to treat wounds.

उठा कर उस टोकरी में बिठाया और तीन बार घंटा बजा दिया। तुरन्त ही सिपाहियों ने वह टोकरी ऊपर खींच ली।

इससे पहले कि राजकुमारी वहाँ से ऊपर जाती उसने अपने घने काले बालों में से एक सोने की हेयर पिन निकाली, उसके दो टुकड़े किये और उनमें से एक टुकड़ा लकड़हारे की तरफ फेंक दिया।

वह बोली — "मुझे बचाने के लिये धन्यवाद ओ वॉग ऐर। तुम इसको मेरी याद समझ कर रखना और अगर तुमको मुझे ढूँढने की कभी जरूरत पड़ जाये तो इसको दिखा कर साबित कर देना कि तुम कौन हो। तुम महल आ जाना।"

पर उसके पीछे के शब्द हवा में ही खो गये क्योंकि राजा के सिपाहियों ने वॉग ऐर को उसी ॲधेरी गुफा में शैतानों के साथ छोड़ कर उस टोकरी को ऊपर खींच लिया था।

वॉग ऐर टोकरी के नीचे उतरने का इन्तजार करता रहा कि वे लोग राजकुमारी को उतार कर उस टोकरी को उसको ऊपर खींचने के लिये वापस भेजेंगे पर वह टोकरी तो वापस आयी ही नहीं।

उसको अपने सिर के ऊपर दिन की केवल एक बहुत छोटी सी रोशनी दिखायी दे रही थी। उसने सिपाहियों को ज़ोर से आवाज भी दी पर किसी ने कोई जवाब ही नहीं दिया।

उसको फिर यह डर भी लगा कि इस तरह चिल्लाने से तो वह और शैतानों का ध्यान भी खींच लेगा सो उसने चिल्लाना बन्द कर

दिया और वहीं गुफा में शान्ति से बैठ कर इन्तजार करने का फैसला किया।

उसकी ऑखें उस छेद पर ही लगी रहीं जहॉ से उसको वह दिन की रोशनी दिखायी दे रही थी। पर कुछ देर में उसको उस छेद में से वह रोशनी दिखायी देनी भी बन्द होने लगी।

पहले तो उसको लगा कि उसकी ऑखों को धोखा हो रहा है कि रात होने वाली होगी पर बाद में उसको पता चला कि रात नहीं हो रही थी बल्कि वे सिपाही तो उस छेद को जो वहॉ से बचने का एक ही रास्ता था पत्थर के टुकड़ों से बन्द कर रहे थे। इस बीच राजकुमारी को तुरन्त ही महल ले जाया गया।

असल में जैसे ही राजकुमारी वहॉ से चली गयी कप्तान ने सिपाहियों को उस छेद को बन्द करने का हुक्म दे दिया था और साथ में उसने उनको मारने की धमकी दे रखी थी अगर उन्होंने किसी को इस बारे में कुछ बताया तो वह कप्तान उनको मार देगा इसलिये वे भी उस छेद को बन्द कर के तुरन्त ही वहॉ से चले गये थे।

महल लौटने के बाद कप्तान ने बादशाह को बताया कि किस बहादुरी से वॉग ऐर राजकुमारी को उन शैतानों से छुड़ाने के लिये उनकी गुफा में नीचे गया पर जैसे ही उसने उस गुफा में कदम रखा तो कैसे उन शैतानों ने उसे खाने की कोशिश की।

फिर कैसे निडर हो कर वह खुद अपने आप ही उस छेद में गया और फिर कैसे अकेले ही उसने सौ से ज़्यादा शैतानों को मार कर राजकुमारी को बचाया।

बहादुरी के ये कारनामे सुन कर बादशाह उससे बहुत प्रभावित हुए और अपने वायदे के अनुसार अपनी बेटी की शादी उस चालाक कैप्टेन से करने का वायदा किया।

राजकुमारी ने जब यह खबर सुनी तो उसका दिल टूट गया। उसने कहा कि अगर कप्तान जो कुछ कह रहा है वह सही है तो वह उसको साबित करे।

पर उसकी बात किसी ने सुनी नहीं क्योंकि बादशाह ने तो उसको अपनी बेटी देने का पहले ही वायदा कर दिया था और शादी की तारीख भी पक्की कर दी थी।

जल्दी ही यह खबर और देशों में भी फैल गयी। महल और राज्य दोनों में शादी की तैयारियाँ बहुत ज़ोर शोर से होने लगीं। महल में शाही लोग शादी की तैयारियों के लिये मीटिंग करने लगे जबकि राजकुमारी अपने कमरे में बन्द हो कर बैठ गयी।

उसने खाना और बोलना बन्द कर दिया। बहुत इलाज कराया गया। रोज वैद्य[7] लोग राजकुमारी को नयी नयी दवाएँ देने लगे पर किसी से भी कोई फायदा नहीं हुआ। वह बार बार केवल दो ही शब्द बोलती "वॉग ऐर, वॉग ऐर"।

---

[7] Traditional doctors

उधर जब गुफा का दरवाजा बन्द कर दिया गया तो वॉग ऐर वहॉ से बच निकलने की उम्मीद में नीचे के रास्तों में घूमने लगा कि शायद कहीं उसे कोई और रास्ता मिल जाये।

उसको लगा कि जबसे उसने राजकुमारी को उन शैतानों से छुड़ाया था तब से उसको वहॉ के रास्तों में घूमते घूमते कई घंटे हो गये या फिर शायद कई दिन हो गये। और अब पता नहीं वह राजकुमारी को कभी देख पायेगा भी या नहीं।

वह बार बार उस जगह पर आता जहॉ वह टोकरी से उस गुफा के अन्दर घुसा था कि शायद वह फिर से उन सिपाहियों को वहॉ देख ले पर उतने ॲधेरे में तो उसको उस गुफा की छत भी दिखायी नहीं दे रही थी।

तभी उसने पास की गुफा से कुछ फड़ फड़ की आवाज सुनी तो वह तुरन्त ही उस आवाज से दूर एक ॲधेरे कमरे की तरफ चला गया। वह इस कमरे में पहले नहीं आया था। अपने पास से ही आती फड़ फड़ की हल्की सी आवाज सुन कर वह चौंक गया।

वह उस आवाज की तरफ बढ़ा तो फर्श पर पड़ी एक बॉस की डंडियों की बनी टोकरी से टकरा गया। वॉग ऐर ने वह टोकरी उठा ली और उसमें देखने की कोशिश की तो उसमें से आती एक पीली रोशनी ने उसको पल भर के लिये आश्चर्य में डाल दिया।

वह रोशनी तो एक सुनहरी मछली से आ रही थी। उसने उसको हाथ से छू कर यह देखने की कोशिश की कि वह सच था या शैतानों की कोई चाल थी।

पर उसने देखा कि वहाँ तो सचमुच की मछली थी और उसके छूने पर हिल रही थी। उसका सुन्दर चिकना सिर एक जंग लगी कील के सहारे उस टोकरी से गड़ा हुआ था।

उसको मछली की यह हालत देख कर बहुत दुख हुआ। उसने वह कील उसके सुनहरी शरीर से निकाल ली। जैसे ही वह कील उसके शरीर से बाहर आयी वह टोकरी हवा में उछल गयी और उसमें से एक सुन्दर नौजवान निकल पड़ा।

वह नौजवान वॉग ऐर के सामने झुका और बोला — "स्वर्ग के देवता मेरी जान बचाने के लिये तुम्हारे ऊपर दया करें। मैं समुद्र का राजकुमार हूँ – समुद्री ड्रैगन राजा का तीसरा बेटा[8]।

दो दिन पहले मैं पास की एक नदी में घूम रहा था कि इस गुफा के शैतानों ने मेरे ऊपर हमला कर दिया। मुझे तो लगा कि मैं अब फिर कभी पानी को अपने शरीर पर महसूस ही नहीं कर पाऊँगा पर आज आपने मुझे बचा लिया और अब मेरा यह फर्ज बनता है कि मैं आपको इसका बदला चुकाऊँ।"

[8] The third son of the Deagon King of Sea

उस समुद्र के राजकुमार ने अपनी सिल्क ब्रोकेड[9] की जैकेट की जेब से तीन गोलियॉ और एक मुड़ी हुई सीपी निकालीं। उसने वॉग ऐर को दो गोलियॉ और सीपी दी और बोला — "मेरा विश्वास करना। मैं इनमें से एक गोली निगल रहा हूॅ और तुम भी वैसा ही करना।

तुम्हारे यहॉ से बच निकलने का केवल एक ही तरीका है और वह है धरती के नीचे बहती नदी जो इस गुफा में से हो कर बहती है। दूसरी गोली तुम तब निगल सकते हो जब तुमको कभी उसकी जरूरत पड़े। लो बस अब तुम जल्दी से यह गोली निगल लो और इस नदी में तैर जाओ।"

वॉग ऐर ने राजकुमार का कहना माना और उसने वह गोली तुरन्त ही निगल ली। इससे वह एक सुनहरी मछली में बदल गया।

राजकुमार ने भी वह गोली निगल ली थी और वह भी फिर से एक सुनहरी मछली बन गया था। राजकुमार तुरन्त ही नदी में कूद पड़ा और राजकुमार के पीछे पीछे वॉग ऐर भी नदी में कूद गया। जैसे ही वह नदी में कूदा तो उसने अपने पीछे चीखने चिल्लाने की आवाजें सुनीं।

वे दोनों कुछ देर तक तो उस काले ॲधेरे पानी में तैरते रहे पर बाद में वे बाहर निकल आये। अब उनको दिन की रोशनी दिखायी

[9] Silk Brocade – a kind of very expensive silken cloth woven with golden and silver threads

दे रही थी और उनके शरीरों को सूरज की गर्मी भी महसूस हो रही थी। इससे उनको लगा कि वे उस गुफा में से बच निकले हैं।

वॉग ऐर अपनी पूँछ फटकार कर नदी के किनारे पर कूद गया। विदा कहने के लिये वह राजकुमार हवा में कूदा और फिर उसी नदी के तेज़ बहते पानी में कूद गया।

वॉग ऐर नदी के किनारे एक सूखी जगह पर जा कर लेट गया और सो गया। जब वह सुबह को जागा तो वह आदमी बन चुका था पर उसके शरीर पर लगी मछली की सूखी हुई खाल यह बता रही थी पिछली रात की घटना सपना नहीं थी सच थी।

वह नदी में नहाया, पास के पेड़ से कुछ फल तोड़े और उनको खाता हुआ तुरन्त ही महल की तरफ चल दिया। रास्ते में वह जिस गॉव से भी गुजरा उसी गॉव में उसको राजकुमारी की शादी की बातें सुनने को मिली।

जब वह महल के दरवाजे पर आया तो उसने अपनी कहानी सुना कर महल के चौकीदारों से बादशाह से मिलने की इजाज़त मॉगी। महल के चौकीदारों ने उसकी कहानी पर विश्वास तो नहीं किया पर वे उस पर दया कर के उसको बादशाह के पास ले गये।

वॉग ऐर ने बादशाह को झुक कर सलाम किया और वह सीपी निकाल कर बादशाह के पैरों के पास उसके सिल्क ब्रोकेड के पैर रखने के स्टूल पर रख दी।

वह बोला — “योर मैजेस्टी, आपको धोखा दिया गया है। मैं ही वह आदमी हूँ जिसने आपकी बेटी को शैतानों से छुड़ाया है। मैं ही वह आदमी हूँ जो नीचे उस गुफा में गया।

मैं ही वह आदमी हूँ जिसने शैतानों को मारा और राजकुमारी को बचाने के लिये अपनी ज़िन्दगी खतरे में डाली। कप्तान ने तो मुझे मारने की कोशिश की थी। आप राजकुमारी को बुलाइये तो वह मेरी कहानी को सच साबित कर देंगी।”

बादशाह बोले — “मेरी बेटी बीमार है। वह यहाँ नहीं आ सकती इसलिये अब यह तुम्हारे ऊपर ही है कि तुम अपनी कहानी अपने आप ही साबित करो। तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुम सच बोल रहे हो?”

वॉग ऐर ने राजकुमारी के बालों के हेयर पिन का आधा हिस्सा बादशाह को दिखाया जो राजकुमारी ने उसको जाते समय फेंक कर दिया था।

बादशाह के अपने रक्षक ने वह हेयर पिन बादशाह के हाथ में दिया और बादशाह ने उसको एक दासी को दिया जिसने उसको राजकुमारी के तकिये पर रखा।

जैसे ही राजकुमारी ने उस पिन को देखा तो वह उठ कर बैठी हो गयी — “अरे यह पिन तो मेरा अपना है। यह तो उसके पास था जिसने मुझे बचाया।”

राजकुमारी की दासियों को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि राजकुमारी उस पिन को देखते ही अपने पलंग से उठ खड़ी हुई।

उसने जल्दी से अपनी दरबारी पोशाक पहनी और बीमारी की वजह से कमजोर होते हुए भी वह अपने पिता के पास दौड़ गयी। वहाँ जा कर उसने अपने पिता से प्रार्थना की कि वह वॉग ऐर की बात का विश्वास करें।

अपनी बेटी को चलता देख कर ही बादशाह इतना खुश हो गये कि उन्होंने वैसे ही वॉग ऐर की बातों का विश्वास कर लिया। वहीं दरबार के सामने ही उन्होंने वॉग ऐर को अपना दामाद घोषित कर दिया और उस कप्तान को बहुत बुरा भला कहा।

वॉग ऐर अपनी इस खुशकिस्मती से इतना खुश हुआ कि उसने अपनी पत्नी को हमेशा तन्दुरुस्त रहने की भेंट दी। उसने उस समुद्री ड्रैगन राजकुमार की दी हुई दूसरी गोली उसको दी और उसको निगलने के लिये कहा।

राजकुमारी ने वह गोली तुरन्त ही निगल ली। वह अब बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गयी थी। सारे राज्य में उसकी शादी की तैयारियाँ पहले से भी ज़्यादा ज़ोर शोर से होने लगीं।

उसी रात रात के अँधेरे में बादशाह के बहादुर सिपाहियों की एक टुकड़ी उस गुफा में उन सारे शैतानों को नष्ट करने के लिये और उस गुफा को हमेशा हमेशा के लिये बन्द करने के लिये भेज दी

गयी। उस टुकड़ी ने जा कर उन सब शैतानों को मार दिया और वह गुफा हमेशा के लिये बन्द कर दी।

वॉग ऐर और राजकुमारी की शादी धूमधाम से हो गयी। दोनों बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

20 जंगली बिल्ले की गलती[10]

एक बार एक जंगली बिल्ला तैवान के पा चीन पहाड़[11] के ऊपर रहता था। बहुत ही घमंडी किस्म का जानवर था वह। उसके बहुत सुन्दर से सुनहरे बाल थे जो धूप में खूब चमकते थे।

उसको अपनी सुन्दरता का अहसास था इसलिये उसके पास पहाड़ के दूसरे जानवरों से मिलने जुलने का समय भी नहीं था।

दूसरी तरफ एक चींटी खाने वाला जानवर रहता था जो बहुत ही आलसी और बदसूरत था पर वह बहुत ही सादगी से रहने वाला और बहुत ही दयालु था। उसकी पीठ तिकोने खुरदरे टुकड़ों[12] से ढकी हुई थी।

उसको इससे ज़्यादा कुछ और अच्छा ही नहीं लगता था कि वह अपनी चिपचिपी जीभ को बिजली की सी तेज़ी से बाहर निकाल कर उन चींटियों को खा ले जो भी उसके रास्ते में आयें।

---

[10] The Wild Cat's Mistake – a folktale from China, Asia.
[11] Pa Chien Mountain in Taiwan area
[12] Like fish scales. See their picture above

एक दिन उस चालाक जंगली बिल्ले ने उस चींटे खाने वाले को एक बरगद के पेड[13] के साये में सोते हुए देखा तो उसके दिमाग में एक चाल आयी।

वह दबे पॉव बरगद के पेड़ की एक शाख पर चढ़ गया और उसकी छाल को जितनी कस कर पकड़ सकता था पकड़ लिया। फिर उस शाख को वह खूब ज़ोर से तब तक हिलाता रहा जब तक कि उसकी आवाज से वह चींटे खाने वाला अपनी गहरी नींद से जाग नहीं गया।

पर चींटे खाने वाले कीड़े ने इस बात पर बिल्कुल भी नाराजी नहीं दिखायी बस ज़रा सी अपनी करवट बदली। पर बिल्ला फिर भी पेड़ को हिलाता ही रहा जब तक एक चींटी का घर उस पेड़ से टूट कर जमीन पर धम्म से नीचे नहीं गिर गया।

चींटे खाने वाले को अपनी खुशकिस्मती पर विश्वास ही नहीं हुआ कि उसके सामने इतनी सारी चींटियॉ पड़ी थीं। बस वह तुरन्त ही भूखे की तरह से उन चींटियों पर टूट पड़ा।

यह देख कर जंगली बिल्ले को अपने ऊपर बहुत गुस्सा आया कि उसने उस चींटे खाने वाले को इतनी आसानी से इतना स्वादिष्ट खाना दे दिया।

---

[13] Banyan tree – it is a very large tree. See its picture above

सो वह उस पेड़ की शाख पर से बड़ी तेज़ी से कूदा और चींटियों के घर में एक पैर मारा जिससे उनका घर सूखी घास में जा पड़ा। वह फिर चींटे खाने वाले से बोला — “अगर तुम उन चींटियों को खाने की सोचते हो तो पहले जंगली बिल्लों के राजा को यानी मुझे भेंट दो।”

पर चींटे खाने वाले कीड़े ने उसकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। वह यह कहते हुए उधर की तरफ चल दिया जिधर चींटियों का घर जा कर पड़ा था कि भगवान आज उस पर कितना मेहरबान था कि उसने उसको कितनी आसानी से इतना अच्छा खाना दे दिया।

पर इस बात से वह जंगली बिल्ला और भी ज़्यादा नाराज हो गया और वह भी उस सूखी घास की तरफ भागा गया जहाँ वह चींटियों का घर पड़ा था।

वह तब तक के लिये लम्बी डंडियों के बीच में छिप गया जब तक कि वह चींटे खाने वाला उन चीटियों को खाने के लिये ठीक से बैठ नहीं गया।

जैसे ही उसने चींटियों को खाना शुरू किया कि बिल्ले ने सूखी घास में आग लगा दी। दो मिनट के अन्दर अन्दर वहाँ का सारा हिस्सा आग के लपेटे में आ गया और सारी हवा में धुँआ ही धुँआ भर गया।

चालाक जंगली बिल्ला बोला — "दोस्त आनन्द करो। तुम्हारा तो अब भुना हुआ खाना बन जायेगा।"

उसके पीछे से एक आवाज आयी — "तारीफ के लिये धन्यवाद।"

यह सुन कर वह जंगली बिल्ला चौंक गया और उसने पीछे मुड़ कर देखा तो चींटे खाने वाले को अपने बराबर घास पर बैठे पाया।

चींटे खाने वाला बोला — "क्या मैं भी तुमको इस स्वादिष्ट खाने के लिये धन्यवाद दे सकता हूँ? चमकीली आग की लपटों को नीले आसमान की तरफ जाते देखने से ज़्यादा अच्छा दृश्य और क्या हो सकता है? कभी तुम भी देखने की कोशिश करना।"

बिल्ला हकलाता हुआ बोला — "अरे क्या तुम ज़िन्दा हो?" तुम जले क्यों नहीं? क्या यह आग तुमको जलाती नहीं? क्या मैं भी आग में जा कर देखूँ?"

चींटे खाने वाला कीड़ा बोला — "थोड़ी शान्ति रखो ओ बिल्ले। मुझे ज़रा सा समय दो मैं तुम्हारे हर सवाल का जवाब दूँगा।

आग हमेशा ही नुकसानदायक नहीं होती। असल में तो वह बहुत ही आनन्ददायक होती है। मेरी सलाह है कि तुमको भी इसके आनन्द का अनुभव करना चाहिये। यह एक ऐसा अनुभव है जिसे तुम कभी भूल ही नहीं पाओगे।

तुम खुद आग के अन्दर घुस कर क्यों नहीं देखते? वहाँ बहुत सारे भुने हुए साँप और मेंढक तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।"

चालाक लालची बिल्ले को इतने स्वादिष्ट खाने का विचार ही बहुत अच्छा लगा सो उसने एक बहुत ज़ोर की कूद मारी और वह सीधे जलती हुई घास में कूद पड़ा।

पर तुरन्त ही आग में से आती एक भेदती हुई चीख सुनायी दी और बिल्ला उसमें से अपनी जान बचाने के लिये भागता नजर आया। उसके सुन्दर सुनहरे बाल भूरे हो गये थे।

असल में हुआ क्या था कि चींटे खाने वाले ने तो जमीन में अपनी रक्षा के लिये एक सुरंग खोद रखी थी। दूसरे उसके उन तिकोने खुरदरे टुकड़ों ने उसको उस भयानक आग से कुछ पल के लिये बचा कर रखा था जबकि उस जंगली बिल्ले के पास तो ऐसी कोई सुरक्षा नहीं थी।

जंगली बिल्ला साये में जा कर अपने काले पड़े बालों को साफ करने लगा पर फिर भी वह कभी भी अपने वे पुराने सुनहरे बाल नहीं पा सका। आज तक जंगली बिल्ले अपने भूरे बाल लोगों की नजर से छिपा कर रखते हैं।

21 लिऑग यू चिंग की सजा[14]

एक बार आसमान के बादशाह जेड बादशाह[15] ने अपनी बेटियों को आसमान की और देवताओं और भूतों की रोजमर्रा की ज़िन्दगी से बचाने के लिये एक सोने और जेड[16] का महल बनवाया।

क्योंकि जहाँ वे रहती थीं वहाँ देवता और भूत अक्सर ही आते रहते थे और वह नहीं चाहता था कि वे उसकी बेटियों को परेशान करें।

उस महल में हर एक को, यहाँ तक कि दासियों और कपड़ा बुनने वाली लड़कियों को भी, एक सितारे वाला ताज पहनना होता था ताकि वह महल एक घूमती हुई दैवीय दुनियाँ[17] के रहने वाली लगें।

कपड़ा बुनने वाली लड़कियों को और दूसरे लोगों से बहुत ज़्यादा काम करना पड़ता था ताकि वे राजकुमारियों की पोशाकों के लिये नये नये कपड़े बना सकें। महल में रहना एक इ़ज़्ज़त की बात समझी जाती थी और वहाँ सबको अपना अपना काम भी ठीक से करना पड़ता था।

---

[14] Liang Yu Ching's Punishment – a myth from China, Asia.

[15] Jade Emperor – is the Emperor of Sky

[16] Jade is a kind of gemstone found in most Eastern countries. See its picture above.

[17] Revolving Heavenly Galaxy

पर वहाँ सिवाय दो कपड़ा बुनने वाली लड़कियों के बाकी सब लोग अपना अपना काम ठीक से करते थे। लिआँग यू चिंग और वी शिंग ज्वान[18] अपनी हर शाम तितलियाँ पकड़ने और छिपे छिपे धरती पर भाग जाने के प्लान बनाने में गुजारा करती थीं ताकि वे जब चाहें कहीं भी और कभी भी खेल सकें।

एक दिन ताई पी स्टार परी[19] अपने रथ में महल के बागीचे पर नीची नीची उड़ रही थी कि उसने दो लड़कियों को बात करते सुना। ये दोनों लड़कियाँ वही कपड़ा बुनने वाली दोनों लड़कियाँ थीं।

पहली बात तो वह परी अपने घूमने से थक गयी थी और दूसरे उसको उन लड़कियों के बारे में भी जानने की उत्सुकता थी सो वह उस बागीचे के ऊपर एक बादल के अन्दर उड़ने लगी।

बादल के अन्दर उड़ने के बावजूद उन कपड़ा बुनने वाली दोनों लड़कियों ने उसके सितारे की चमकीली रोशनी से उसको देख लिया और उस रोशनी ने उनको चौंका दिया क्योंकि उस रोशनी से वे उस देवी को पहचान गयी थीं।

लिआँग यू चिंग उसको देख कर चिल्लायी — "आओ तुम भी हमारे साथ बैठो न स्टार परी। किसी को पता भी नहीं चलेगा कि तुम यहाँ हो।"

---

[18] Liang Yu Ching and Wei Shing Jwan

[19] Tai Pei Star Fairy

बिना कुछ और बात किये ताई पी स्टार परी ने जमीन पर उतरने के लिये अपना रथ नीचे किया पर जैसे ही उसके रथ के पहिये जमीन से छुए वे दोनों लड़कियाँ उसके रथ में कूद कर बैठ गयीं।

वी शिंग ज्वान बोली — "हमारे पास एक बड़ा अच्छा विचार है। चलो नीचे चल कर धरती पर खेलते हैं। वहाँ हमको कोई नहीं देख पायेगा।"

ताई पी स्टार परी को धरती पर ले जाना आसान था क्योंकि उन कपड़ा बुनने वाली लड़कियों की तरह से वह भी जेड बादशाह के राज्य से निकलना चाहती थी। सो वे तीनों धरती की तरफ चल दीं।

वे लोग वी शहर[20] में शहर के बाहर एक गुफा में आ कर उतरीं। पर ऐसा होना तो बहुत मुश्किल था कि कोई देवता उनको देख न लेता इसलिये उस गुफा में से वे केवल रात को ही निकलती थीं और तभी तक बाहर घूमतीं जब तक सूरज निकलता। उसके बाद वे फिर अपनी गुफा में चली जातीं।

उन सबके धरती पर आने के छियालीस दिन बीतने के बाद सारे चीन के लोगों ने देखा कि ताई पी स्टार परी तो आसमान से गायब ही हो गयी है। उन्होंने अपने साथ कुछ भी बुरा होने से बचने के लिये जेड बादशाह को भेंट चढ़ानी शुरू कर दी।

---

[20] Wei City of China

इस बीच जेड बादशाह को भी पता चल गया कि ताई पी स्टार परी आसमान से गायब हो गयी है सो वह भी ताई पी स्टार परी पर बहुत गुस्सा हो गया। उसने पाँच पहाड़ के देवताओं[21] से उस परी और दोनों लड़कियों को ढूँढने के लिये कहा।

पाँच पहाड़ के देवताओं ने उनको ढूँढने के लिये प्लान बनाने के लिये कई मीटिंग कीं पर उनके नीचे तो इतना बड़ा चीन पड़ा था इसलिये वे यह निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि वे उनको कहाँ से ढूँढना शुरू करें।

आखिर वे इस नतीजे पर पहुँचे कि देश को पाँच हिस्सों में बाँट लिया जाये – उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और बीच का हिस्सा। और फिर हर एक देवता उनको ढूँढने के लिये अपने अपने हिस्से में अपने अपने सिपाही और जासूस धरती पर भेजे।

वे सब भी उनको तब तक ढूँढेंगे जब तक वे मिल नहीं जातीं। ऐसा ही किया गया।

जब ये लोग ताई पी स्टार परी को ढूँढ रहे थे तो वह ताई पी स्टार परी और दोनों लड़कियाँ रात में घूम रहे थे। असल में तो उन तीनों को पता ही नहीं था कि जेड बादशाह ने उनको ढूँढने के लिये लोग भेजे हुए हैं।

---

[21] Gods of Five Mountains

जब वे पूर्वीय पहाड़ों के ऊपर से हो कर जा रही थीं तो लिऑग चू चिंग ने नीचे का गॉव देखने के लिये अपने रथ से नीचे झॉका।

पर वह कुछ ज़रा ज़्यादा ही नीचे झुक गयी और इस झुकने में उसका सितारों वाला ताज उसके सिर से फिसल कर नीचे गिर पड़ा। वह पहाड़ की ढाल पर से लुढ़कता हुआ दूर नीचे घाटी में जा पड़ा।

लिऑग चू चिंग को ॲधेरे में कुछ दिखायी नहीं दे रहा था इस लिये उसने स्टार परी से अपना रथ रोकने के लिये और अपना खोया हुआ ताज ढूँढने में उसकी सहायता करने के लिये कहा।

तीनों ने रथ को पहाड़ की चोटी पर छोड़ा और बाकी बचे दो ताजों की रोशनी में पहाड़ के ढाल पर इस उम्मीद में चल दीं कि उनको वह ताज सुबह होने से पहले पहले मिल जायेगा।

पर जब वे पहाड़ी रास्ते के एक मोड़ पर थीं तो उनको ढूँढने के लिये पॉच पहाड़ के देवताओं के जो सिपाही पूर्वीय हिस्से में निकले हुए थे वे उनको मिल गये। उनको देख कर वे तुरन्त ही वहॉ से लौट लीं और अपने रथ की तरफ भाग लीं।

जाने की जल्दी में उनकी सिल्क की पोशाकें उस पहाड़ में निकले पत्थरों में अटकने लगीं और उनके घाव भी होने लगे।

पर उन्होंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। यहॉ तक कि वे अपने सितारों वाले ताज उतारना भी भूल गयीं जो उन सिपाहियों

को उनकी रोशनी में उनका पीछा करने के लिये रास्ता दिखा रहे थे।

ताई पी स्टार परी और लिऑग यू चिंग तो समय से अपने रथ में बैठ गयीं पर वी शिंग ज्वान पथरीली जमीन पर ठोकर खा कर गिर गयी और समय से उस रथ पर नहीं चढ़ सकी।

वी शिंग ज्वान ने उन दोनों लड़कियों से कहा कि वे उसके बिना ही वहाँ से चली जायें। सो जैसे ही रथ हवा में ऊपर उठा वी शिंग ज्वान वहीं पास की एक गुफा में भाग गयी और फिर कभी दिखायी नहीं दी।

इधर देवताओं के सिपाहियों को अँधेरे मे यह पता ही नहीं चला कि उन तीन लड़कियों में से एक लड़की बच कर भाग निकली है। वे आसमान में उड़ते हुए रथ का पीछा करने लगे। रथ उड़ कर वी शहर के पास वाली गुफा के पास उतर गया जिसमें वे लड़कियाँ रुकी हुई थीं।

मिनटों के अन्दर ही उस गुफा को घेर लिया गया और स्टार परी और लिऑग यू चिंग दोनों ही उसमें से बाहर नहीं निकल पायीं। उनको गिरफ्तार कर लिया गया और स्वर्ग ले जाया गया।

जेड बादशाह अपने सोने के सिंहासन पर उनका न्याय करने बैठे। बन्दियों ने झुक कर उनको सलाम किया। बादशाह के सामने उनको कुछ बोलने की इजाज़त भी नहीं थी।

बादशाह बोले — "ताई पी स्टार परी, तुम तो एक बहुत ही जिम्मेदार सितारा हो तुमको तो कम से कम ठीक से बर्ताव करना चाहिये था ताकि दूसरे लोग तुम्हारी नकल कर सकें। अब हमेशा के लिये तुम आसमान में इसी जगह रहोगी और यहाँ से कभी नहीं हिलोगी।

और तुम लिऑग यू चिंग, तुम जो कि मेरी सबसे प्रिय कपड़ा बुनने वाली थीं तुमको जामुनी सितारे[22] पर देश निकाला दिया जाता है जहाँ तुम चावल के खेतों में रहोगी। वहाँ तुम तब तक चावल के हर दाने का भूसा निकालती रहोगी जब तक मैं तुमको रुक जाने के लिये न कहूँ।"

इस तरह हजारों साल तक लिऑग यू चिंग बिना कोई शिकायत किये हुए वहाँ चावल के खेतों में रही और वहाँ के चावल के खेतों में पैदा होने वाले चावल के दानों का भूसा निकालती रही।

जब जेड बादशाह को लगा कि लिऑग यू चिंग ने अपनी सजा पूरी कर ली है तब उसने उसको एक बेटी देने का फैसला किया – सुई–कू[23], जो उसके बूढ़े होने पर उसकी देखभाल करती।

सुई–कू को बादशाह ने बहुत सारी भेंटें दीं। वह एक बहुत ही होशियार कपड़ा बुनने वाली थी। वह गाना भी बहुत अच्छा गाती

---

[22] Purple Star

[23] Sui Ku – the daughter of Liang Yu Ching. Later she became the Goddess of Rains

थी और दयावान भी बहुत थी। वह हर एक को माफी देने को तैयार थी सिवाय अपनी माँ के।

सुई–कू की शादी नदी के देवता हो पी[24] से हो गयी। जेड बादशाह ने उसको उसकी शादी की भेंट के रूप में उसको बारिश की देवी[25] बना दिया।

अब यह देखने के लिये कि कौन सी जगहें सूखी हैं और कौन सी जगहों में बाढ़ आयी हुई है वह रोज आसमान में घूमती।

जैसे जैसे साल बीतते गये चीन देश की जमीन खूब खुशहाल होती गयी और वहाँ के लोग सुई–कू की बहुत इज़्ज़त और पूजा करने लगे। पर इतना सब कुछ होने के बाद भी सुई–कू अपनी माँ के किये गये शर्मनाक काम को नहीं भूली।

हर बार जब भी सुई–कू वी शहर के बाहर उस गुफा की तरफ जाती जहाँ वे तीनों रही थीं वह वहाँ बारिश नहीं करती और हर बार जब भी ताई पी स्टार परी चमकीली चमकती तो वह स्वर्ग से ही बाहर नहीं निकलती।

आज भी वी शहर के आस पास की जमीन बंजर है। जब ताई पी स्टार परी सबसे ज़्यादा चमकती है तब वहाँ बारिश नहीं होती। हालाँकि वहाँ आज भी कभी कभी पूर्वीय पहाड़ पर एक अजीब सी रोशनी दिखायी देती है।

---

[24] Ho Pei

[25] Goddess of Rain

कुछ लोगों का कहना है कि वहॉ वी शिंग ज्वान सुई–कू का ध्यान खींचने की कोशिश करती है ताकि शायद कभी उस जगह बारिश हो जाये।

22 शहतूत के पेड़ का बच्चा[26]

तीन हजार सात सौ साल पहले चीन में जब सिया साम्राज्य[27] था तब वहाँ एक कुँआरी बुढ़िया रहती थी। उसके पास पहाड़ पर एक खेत था जिसको वह अकेली ही बिना किसी दोस्त और पड़ोसी की सहायता के देखती भालती थी।

बीज बोने से और फसल काटने से पहले वह हमेशा जेड बादशाह[28] को भेंट चढ़ाती थी। और किसी भी जानवर को जो वह जंगल में मारती थी पकाने से पहले वह अपने पुरखों को भेंट चढ़ाती थी।

इस तरह से वह अपनी सारी ज़िन्दगी आसमान और धरती के साथ मिल कर रहती चली आ रही थी।

एक रात उसने सपने में देखा कि जेड बादशाह एक बादल पर सवार हो कर धरती पर उतरे और उसके सामने आ कर ठहर गये। उन्होंने उस बुढ़िया से कहा — "तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है और तुम बहुत दयावान हो। मैंने देखा है कि तुम हमेशा ही आसमान को भेंट देती रही हो।

---

[26] The Child of Mulberry Tree – a legend from China, Asia.

[27] Hsia Dynasty or Xia Dynasty (2070 – 1600 BC) – supposed to be the FIrst Dynasty. According to tradition, the dynasty was established by the legendary Yu the Great after Shun, the last of the Five Emperors, gave his throne to him. The Xia was later succeeded by the Shang dynasty (1600–1046 BC).

[28] Jade Emperor – the Emperor of Sky

तुम्हारी इस सेवा का इनाम यह है कि मैं तुमको एक सलाह देता हूँ जो तुम्हारी ज़िन्दगी बचायेगा। कल तुम अपने चावल कूटने वाले पत्थर[29] में से पानी निकलता हुआ देखोगी।

जैसे ही उसमें से पानी निकल कर बहना शुरू हो तुम पूर्व की तरफ भाग जाना और किसी भी हालत में पीछे मुड़ कर नहीं देखना जब तक कि तुम अगले गाँव तक न पहुँच जाओ।"

इतना कह कर वह जेड बादशाह तुरन्त ही गायब हो गये। उस बुढ़िया को जेड बादशाह से यह भी पूछने का मौका नहीं मिला कि उसको पीछे मुड़ कर क्यों नहीं देखना चाहिये।

जब वह सुबह जागी तो जो कुछ भी उसने सपने में देखा था वह सब उसको याद रहा पर इसके बारे में उसने सोचा कुछ भी नहीं और वह दिन भर अपना चावल इकट्ठा करने की तैयारी में लगी रही।

शाम को वह अपने घर के बाहर अपने पत्थर के बर्तन में चावल कूटने बैठी तो उसकी तली से पानी बह निकला तब उसको जेड बादशाह के शब्द याद आये। वह तुरन्त अपने पड़ोसियों को इस बारे में चेतावनी देने गयी।

जैसे जैसे वह भागती जा रही थी वह चिल्लाती जा रही थी "मेरे पीछे आओ, मेरे पीछे आओ"। गाँव वाले उसकी इस पागलों जैसी

---

[29] Translated for the "Mortar and Pestle". See its picture above

चीख को सुन कर डर के मारे कोई सवाल भी नहीं पूछ पा रहे थे और वे भी उसके पीछे पीछे भागे जा रहे थे।

और उसकी आँखों में डर देख कर तो उनको यह विश्वास भी हो गया कि कुछ बहुत ही बुरा होने वाला है। हालाँकि उनको खतरे की कोई भी बात लग नहीं रही थी फिर भी वे खेतों के बीच से हो कर उस बुढ़िया के पीछे पीछे भागे जा रहे थे।

उनके आगे आसमान साफ था और जमीन पर भी कुछ बुरा नहीं हो रहा था पर उनके पीछे पानी जो उस चावल कूटने वाले बर्तन में से बहना शुरू हुआ था वह मकानों के अन्दर बाहर से होता हुआ उनके पीछे पीछे तेज़ी से चला आ रहा था।

उसके इस तेज़ी से बहने से जो भी झाड़ियाँ आदि उसके रास्ते में आ रही थीं वह उन सबको उखाड़ता जा रहा था। पानी खेतों में हो कर बहता जा रहा था और वह सारे गाँव में फैल गया था।

अब तक वे लोग पास के गाँव के पास तक आ गये थे। अभी तक तो उस स्त्री ने पीछे मुड़ कर देखा नहीं था पर अब वह अपनी उत्सुकता नहीं रोक पायी और पीछे मुड़ कर पानी की उस दीवार को देखा जो उसके पीछे पीछे आ रही थी।

वह तुरन्त पूर्व की तरफ मुड़ी पर इस समय तक तो उसको देर हो चुकी थी। दूसरे लोग तो वहाँ से गायब हो गये थे और अब पानी उस स्त्री को अपनी लपेट में ले रहा था।

उसके पैर कीचड़ में धँस गये थे और जब तक पानी उसकी गर्दन तक पहुँचा वह लकड़ी की बन चुकी थी।

उसने अपने हाथ उठा कर सहायता के लिये पुकारा भी पर किसी ने उसकी चिल्लाहट भी नहीं सुनी। जैसे ही उसने सहायता के लिये पुकारने के लिये अपने हाथ उठाये तो उसके हाथ एक पेड़ की शाखें बन गये।

जब पानी रुक गया तो जहाँ वह स्त्री खड़ी थी वहाँ एक शहतूत का पेड़[30] खड़ा हुआ था। वह पेड़ उस पड़ोस के गाँव के पास ही था जहाँ तक वह स्त्री आ गयी थी।

यह गाँव एक बहुत ही अमीर आदमी यू सीन शी[31] का था। उसकी एक सिल्क का कपड़ा बुनने वाली ने अपनी दोस्तों से सुना कि गाँव के बाहर शहतूत का एक पेड़ अचानक ही प्रगट हो गया है सो वह उसको देखने के लिये और अपने सिल्क के कीड़ों के खाने के लिये शहतूत के कुछ पत्ते लाने के लिये चल दी।

उस दिन खूब धूप निकल रही थी और हवा भी नहीं थी। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि वहाँ तो वाकई शहतूत का एक पेड़ खड़ा है जो पहले वहाँ नहीं था। उसने उस पेड़ से काफी सारी पत्तियाँ तोड़ लीं।

---

[30] Translated for the word "Mulberry Tree". See its picture above. Silk worms live on this tree and eat the leaves of this tree only.

[31] Yu Sin Shih

पर तभी उसको एक बच्चे के रोने की आवाज सुनायी दी। उसने आस पास देखने की कोशिश की कि वह आवाज कहाँ से आ रही थी पर जब उसको अपने आस पास कोई दिखायी नहीं दिया तो उसको यह पक्का हो गया कि रोने की वह आवाज उस शहतूत के पेड़ के तने में से ही आ रही थी।

उसने धीरे धीरे उस पेड़ के तने के चारों तरफ अपने हाथ फेरे तो उसको एक जगह कुछ मुलायम सी महसूस हुई। वह जगह इतनी मुलायम थी कि वह उसमें अपना हाथ घुसा सकती थी सो उसने उसके अन्दर अपना हाथ घुसा दिया।

घुसाते घुसाते उसका हाथ उस पेड़ के तने के बीच के हिस्से तक पहुँच गया और वहाँ उसके हाथों ने एक बच्चे का कोमल माँस महसूस किया। बहुत सँभाल कर उसने उस बच्चे को उस शहतूत के पेड़ के तने से बाहर निकाल लिया।

उसने यह समझ लिया था कि वह कोई मामूली बच्चा नहीं था सो उसने उस बच्चे को शहतूत के पेड़ की पत्तियों में लपेटा जो उसने अपने सिल्क के कीड़ों के खाने के लिये इकट्ठा की थीं और उसको अपने घर ले गयी।

अब क्योंकि वह बच्चा नदी के किनारे खड़े एक पेड़ से मिला था उस सिल्क बुनने वाली ने उस नाम आई यिन[32] रख दिया।

[32] I Yin – name of the child of Mulberry Tree

वह बच्चा ला कर उसने अपने मालिक यू सीन शी को दे दिया और यू सीन शी ने वह बच्चा पालने के लिये अपने नौकरों को दे दिया।

बच्चा उस मालिक के नौकरों की देख रेख में बड़ा होता गया। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया वह बहुत अक्लमन्द और गुणवान होता गया। वह हमेशा ही जरूरतमन्द लोगों की सहायता करने को तैयार रहता था।

उस समय चीन में बादशाह ची कुई[33] का राज था। वह एक बहुत ही बेरहम और मारने पीटने वाला राजा था। सभी उसके राज्य में उसके कारनामों से दुखी थे चाहे वे कुलीन हों या किसान। ऐसे हालात में एक क्रान्तिकारी नेता चिंग टॉग[34] वहाँ क्रान्ति लाने की कोशिश कर रहा था।

जब वह लोगों में अपनी क्रान्ति जगाने के सिलसिले में इधर उधर आ जा रहा था तो उसने आई यिन के अच्छे चरित्र के बारे में बहुत कुछ सुना। वह उससे मिला तो बहुत खुश हुआ और उससे अपने कामों में शामिल होने के लिये कहा।

आई यिन ने दो बार तो मना कर दिया पर जब उसने उससे तीसरी बार भी जिद की तो वह उसके साथ हो लिया।

---

[33] Chieh Kuei – name of the King of China

[34] Ching Tang – name of the Revolutionary leader

कई साल की कोशिशों के बाद वहाँ क्रान्ति आ गयी और ची कुई बादशाह को राजगद्दी से उतार दिया गया। ची कुई बादशाह को गद्दी से उतार कर चिंग तॉग ने शॉग साम्राज्य[35] की स्थापना की और आई यिन को अपना वजीर बना लिया।

उस आदमी ने जो बाढ़ के पानी और शहतूत के पेड़ से पैदा हुआ था चीन में सौ साल से भी ज़्यादा राज किया।

[35] Shang Dynasty (1766-1122 BC) – ruled in 2nd Millenium BC succeeding the Hsia (Xia) Dynasty and followed by the Zhou Dynasrty – 1766-1122 BC

23 यो लुंग पहाड़[36]

यह बहुत साल पहले की बात है कि एक बार पश्चिमी चीन के एक गॉव पाई ली[37] में बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। वह अकाल इतने ज़ोर का था कि उस अकाल में जमीन में दरारें पड़ गयीं और नदियॉ बिल्कुल सूख गयीं।

उस गॉव का नाम पाई ली एक सफेद नाशपाती के पेड़ के नाम पर पड़ गया था जो वहॉ बहुतायत से होता था पर अब पानी की कमी की वजह से उन पेड़ों की जड़ें भी सूखने लगी थीं।

यो लुंग[38] इसी गॉव में अपनी अन्धी मॉ के साथ रहता था। इस आदमी की आमदनी का भी दूसरे गॉव वालों की आमदनी की तरह केवल एक ही ज़रिया था और वह था उसका नाशपाती के पेड़।

उसको मालूम था कि इस सूखे के समय में अब इस आशा में घर पर बैठना तो बेकार था कि आसमान से चावल या कुछ और खाने का सामान उनके लिये बरसेगा सो उसने एक चाकू लिया और पहाड़ की तरफ कुछ खाने लायक घास की जड़ें लाने चल दिया।

---

[36] Yo Lung Mountain – a legend from China, Asia.

[37] Pai Li

[38] Yo Lung – name of a man

वह मीलों तक गर्म जमीन और उस पर पड़े नुकीले पत्थरों पर चलता रहा पर पहाड़ पर उगी हुई घास भी इस सूखे के मौसम में नहीं बच सकी थी। वह भी सब सूख गयी थी।

वह खाना ढूँढते ढूँढते थक गया तो वहीं एक चोटी पर बैठ गया। जहाँ वह बैठा था वहाँ उसने एक स्त्री के रोने की आवाज आती सुनी।

उसको लगा कि यहाँ इस अकेली जगह में कौन हो सकता है सो वह चिल्लाया — "कौन है? नीचे कौन है?"

उसके सवाल का किसी ने कोई जवाब नहीं दिया पर वह अभी भी उस स्त्री के रोने की आवाज सुन पा रहा था सो वह पहाड़ के नीचे की तरफ चल दिया।

जब तक वह पहाड़ के नीचे की अँधेरी गुफा के पास पहुँचा जहाँ से उसको लग रहा था कि रोने की आवाज आ रही थी तब तक पूर्व में चाँद निकल आया था।

उसने पास में पड़ी एक झाड़ी की लकड़ी में आग लगायी और उसकी रोशनी में एक गहरी साँस ले कर उस गुफा के अन्दर घुसा।

जल्दी ही उसको सफेद बालों वाली एक बुढ़िया नजर आ गयी। वह फर्श पर सिकुड़ी पड़ी थी। वह उसी के रोने की आवाज सुन रहा था। उसके रोने की वजह जानने के लिये वह आगे बढ़ा।

उस बुढ़िया के पैरों के चारों तरफ लोहे की जंजीर बॅधी थी और उस जंजीर का दूसरा सिरा गुफा के दूर के एक कोने में रखी एक पत्थर की चट्टान से कस कर बॅधा था।

यो लुंग ने बजाय डरने के आश्चर्य से उस बुढ़िया से पूछा — "मॉ जी, आप यहॉ कैसे? क्या आप कोई भूत हैं?"

उस बुढ़िया ने कॉपते हुए जवाब दिया — "नहीं बेटा, न तो मैं कोई भूत हॅू और न ही कोई बुरी आत्मा हॅू। मैं समुद्री ड्रैगन राजा[39] की पत्नी हॅू और पहले मैं समुद्र की तली में रहती थी।

मेरा काम था कि मैं रोज एक बार आसमान पर जाऊॅ और वहॉ से धरती पर बारिश करूॅ पर एक दिन मैं जेड बादशाह[40] से बात करने में रह गयी सो उतने समय में ही बहुत सारी बारिश पड़ गयी और इससे धरती पर बाढ़ आ गयी।

मेरे पति इस बात पर इतने गुस्सा हो गये कि उन्होंने मुझे ड्रैगन डंडे[41] से तीन सौ बार मारा और फिर यहॉ चार सौ साल के लिये बन्द कर दिया।"

इतना कह कर वह बुढ़िया चुप हो गयी और चुपचाप रोने लगी। हर सुबकी के साथ उसका सारा शरीर कॉप रहा था।

यो लुंग ने उससे कहा — "मॉ जी आप रोयें नहीं। मैं आपको बचाने की कोई न कोई तरकीब जरूर निकालूॅगा। मैं आपसे वायदा

[39] Sea Dragon King

[40] Jade Emperor – the King of the Sky

[41] Translated for the word "Dragon Cudgel". See its picture above.

करता हूँ कि जब तक आप आजाद नहीं हो जायेंगी मैं आपको यहाँ अकेला छोड़ कर नहीं जाऊँगा।"

वह बुढ़िया बोली — "अगर तुम्हारे पास समय है तो मुझे आजाद करने की एक तरकीब है बेटा। अगर तुम इस पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाओ तो वहाँ तुमको एक हू पेड़[42] मिलेगा।

वह पेड़ तीन हजार साल पुराना है। तुमको उस पेड़ से तीन हजार सूखी पत्तियाँ तोड़नी होंगी पर यह ध्यान रखना कि वे सब पत्तियाँ तुम्हारी हथेली के नाप की ही हों।

तुम उन पत्तियों को यहाँ ले आना और उनको इस लोहे की जंजीर के नीचे जला देना। उन पत्तियों की गर्मी और धुँआ इस जंजीर को गला देगा और मैं आजाद हो जाऊँगी।"

यो लुंग को जैसा कि उस बुढ़िया ने कहा था उसके लिये और ज़्यादा कहने की जरूरत नहीं थी। वह बिना सोचे समझे कि उस पहाड़ की अँधेरी चोटी पर उसके लिये कितना खतरा होगा या वह उस काम को कैसे करेगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ने चल दिया।

हू पेड़ को ढूँढना आसान था पर उस पेड़ की ठीक नाप की पत्तियाँ इकट्ठी करने में उसको सारी रात और सारी सुबह लग गयी। उसने उन सब पत्तियों को अपनी जैकेट की जेब में ठूँसा और उस पहाड़ की चोटी से नीचे उतर आया।

---

[42] Hu Tree

जब तक वह उस गुफा में वापस आया उसके कपड़े फट गये थे और हाथ पैर घायल हो गये थे। उन घावों से खून बह रहा था फिर भी उसने उस जंजीर के नीचे आग जलायी और उस बुढ़िया के पास बैठ कर सारी रात उस जंजीर के गलने का इन्तजार करने लगा। वह जंजीर अगली सुबह तक जा कर गली।

उस बुढ़िया ने धन्यवाद देने के लिये लू युंग के हाथ पकड़े और फिर धीरे से उठी। उसने वायदा किया कि वह उसको उस गुफा की छत तक पहुँचने वाला खजाना देगी।

लो युंग उसकी बात सुन रहा था जिसमें वह उसको कीमती जवाहरात देने की बात कर ही रही थी कि उस बुढ़िया ने उस लड़के का खाली खाली चेहरा देखा तो उसकी आवाज डूबती चली गयी।

लो युंग जल्दी से बोला — "मैं आपकी इस दया को मना नहीं कर रहा हूँ पर मुझे आपके इस पैसे में कोई रुचि नहीं है। अगर आप मेरी तीन इच्छाऐं पूरी कर दें तो वह मेरे लिये ज़्यादा अच्छा होगा। क्या आप ऐसा कर सकती हैं?"

बुढ़िया ने हॉ में अपना सिर हिलाया तो लो युंग आगे बोला — "मेरी मॉ दस साल से अन्धी है। क्या आप उनको ऑखें दे सकती हैं?"

उस बुढ़िया ने हॉ में सिर हिलाया तो लो युंग ने अपनी दूसरी दो इच्छाऐं आगे रखीं — "मैं चाहता हूँ कि हमारे बागीचे के फलों के पेड़ों पर फिर से फल आ जायें और तीसरी बात यह कि क्या आप

हमारे गॉव में बारिश फिर से ला सकती हैं जिससे कि हम गॉव वालों के पेड़ फिर से फूल सकें?”

जब बुढ़िया ने लो युंग की यह तीसरी इच्छा सुनी तो उसको उसकी इस इच्छा पूरी करने में कुछ शक सा हुआ सो उसने ना में अपना सिर हिलाया।

वह दुनियॉ की कोई भी इच्छा पूरी कर सकती थी सिवाय इसके क्योंकि उसको चार सौ साल तक बारिश करने से मना कर दिया गया था। पर उसको यह भी मालूम था कि यह उसका फर्ज था कि वह लो युंग को अपने आजाद कराने के बदले में कुछ दे।

इसलिये उसने अपनी स्कर्ट की एक जेब से एक क्रिस्टल की गेंद[43] और एक कटोरा निकाला, उस गेंद को कटोरे के ऊपर रखा और फिर उसने उस गेंद के ऊपर भगवान की प्रार्थना कह कर उस गेंद को तीन बार हिलाया।

उसके हर बार हिलाने पर उस गेंद की तली से सूरज की किरन की तरह पानी की एक धारा निकल कर उस कटोरे में गिर पड़ी। उसने वह गेंद तो अपने स्कर्ट में रख ली और वह कटोरा उसने लो युंग को दे दिया।

कटोरा देते हुए वह उससे बोली — “लो यह पानी लो। यह अमर पानी है। इस पानी को अपनी मॉ की ऑखें वापस लाने के

[43] Crystal is a specially formed mineral or glass which is clear, transparent and resembles the ice.

लिये उनको धोने के लिये इस्तेमाल करना तो उनकी ऑखों की रोशनी वापस आ जायेगी।

फिर इसमें से एक घूॅट पानी तुम खुद पी लेना। उसके बाद दूसरी बार मुॅह में पानी लेना और उसको अपने बागीचे में चारों तरफ थूक देना। इससे तुम्हारे नाशपाती के पेड़ हरे हो जायेंगे।

पर अगर तुम दो बार से ज़्यादा पानी लोगे तो तुम एक मेंढक बन जाओगे। और अगर चौथी बार यह पानी पियोगे तो तुम डूबने से मरोगे।

तुमको यह भी पता होना चाहिये कि मैं तुम्हारी किस्मत तो बदल सकती हूॅ पर तुम्हारे सारे गॉव की किस्मत नहीं बदल सकती। मेरी कही बात ध्यान रखना। अगर तुमने मेरा कहा नहीं माना तो फिर तुम अपनी मॉ को कभी नहीं देख पाओगे।"

लो युंग जब उस अमर पानी को ले कर घर लौटा तो उसके दिमाग में उस बुढ़िया की चेतावनी और गॉव वालों की प्रार्थना दोनों घूमती रहीं।

जब उसने अपनी मॉ को अपनी कशमकश के बारे में बताया तो वह केवल इतना ही बोली — "बेटा, जैसा तुम ठीक समझो करो।"

उसकी यह सलाह सुन कर वह अपनी मॉ के सामने अपने घुटनों के बल बैठ गया और उसको तीन बार सिर झुका कर प्रणाम किया। उन दोनों को कुछ कहने की जरूरत नहीं थी क्योंकि वे दोनों जानते थे कि वे दोनों आखिरी बार मिल रहे थे।

लो युंग ने उस अमर पानी से अपनी माँ की आँखें धोयीं। इस से उसकी माँ अब देखने लगी। उसके बाद पहले उसने एक घूँट पानी पिया और फिर दूसरा घूँट पानी अपने मुँह में ले कर अपने घर के पीछे के बागीचे में फेंक दिया।

जैसा कि वह उम्मीद कर रहा था उसके पेड़ तुरन्त ही बढ़ने शुरू हो गये और उनमें हरी हरी पत्तियाँ निकल आयीं और फिर उनमें कलियाँ भी निकल आयीं।

फिर अपनी किस्मत को जानते हुए कि अब उसका क्या होने वाला है वह पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ जा कर उसने उस कटोरे से दो घूँट पानी अपने मुँह में लिया और पाई ली गाँव की तरफ मुँह कर के उसको उधर फेंक दिया।

वह पानी हवा में ही अटक गया जब तक कि एक बहुत बड़ा बादल छतरी की तरह से वहाँ नहीं छा गया और उसमें से बहुत ज़ोर की बारिश नहीं होने लगी जिससे हफ्तों तक खेतों में पानी भरा रहा।

उधर गाँव वालों ने एक दूसरे को बधाई दी और इधर लो युंग के पैरों के नीचे से जमीन फट गयी और बिजली की सी तेज़ी के साथ उसने उसको अपने अन्दर निगल लिया। उस समय अगर वहाँ कोई होता भी तो भी उसको बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकता था।उसको निगलने के बाद उसी समय धरती बन्द भी हो गयी और वहाँ से पानी का एक स्रोत फूट पड़ा।

इस स्रोत की खासियत यह थी कि सूखे के समय में भी यह स्रोत सूखता नहीं था और उन गॉव वालों के खेतों को सींचता रहता था। लोग उस पानी को लो युंग की भेंट कह कर पुकारते हैं।

सारे चीन में यह पहाड़ लो युंग के नाम से जाना जाता है और वहॉ से निकलती यह पानी की धारा अमर धारा कहलाती है।

24 ड्रैगन गेट पहाड़[44]

ता यू[45] सरकार के पानी के रास्तों, जैसे नदियॉ, नहरें बड़े बड़े तालाब आदि की देखभाल करने की नौकरी करता था।

अगर नदियॉ बहने से रुक जातीं या फिर पानी का बहाव तेज़ हो जाता या फिर नदी के पानी का रास्ता बदलना होता तो ता यू ही वह पहला आदमी होता था जिसको सरकार यह सब करने के लिये बुलाती थी।

तेरह साल तक यह काम करने के बाद अब वह इस काम में इतना होशियार हो गया था कि सभी लोग उसकी इज़्ज़त करते थे और देवता भी उसको बहुत प्यार करते थे।

एक दिन ता यू को शॉसी प्रान्त के ड्रैगन गेट पहाड़ [46] पर बुलाया गया। वहॉ एक तेज़ बहने वाली नदी का पानी उस पहाड़ के पत्थरों को उत्तर की तरफ से टकरा कर मार रहा था और उससे खेतों में पानी भर रहा था। फिर वह नदी पहाड़ की तलहटी में उस पहाड़ के चारों तरफ घूम कर दक्षिण की तरफ जा रही थी।

ता यू को कहा गया कि वह उस पहाड़ में एक ऐसी सुरंग बनाये जिससे उस नदी का तेज़ पानी उत्तर की तरफ से हल्का हो कर दक्षिण की तरफ को चला जाये।

---

[44] Dragon Gate Mountain – a legend from China, Asia.

[45] Ta Yu – a name of a Chinese man

[46] Dragon Gate Mountaoin of Shansi Province

ता यू उस पहाड़ को देखने के लिये कई बार गया ताकि वह यह देख सके कि वह सबसे अच्छी तरह से किधर से उस पहाड़ को खोद कर सुरंग निकाले और नदी का पुराना रास्ता बदले।

वह वहाँ पर सोया भी ताकि वहाँ उसको शायद कोई विचार आ जाये पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

आखिर उसने एक प्लान बनाया जिसको कि उसने सोचा कि उसका वह प्लान ठीक से काम करेगा। इसके लिये उसको तीन सौ आदमियों की एक टीम दी गयी थी।

पहले दिन से ही उसके इस प्लान में बहुत सारी मुश्किलें आने लगीं, जैसे पत्थर में छेद करने वाली मशीनें जैसे ही पहाड़ को छूतीं तो वे टूट जातीं, पानी का बहाव बढ़ गया, उत्तर की तरफ के बहने वाले तेज़ पानी में बहुत सारे लोग मर गये आदि आदि।

ता यू को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था कि जिस काम को वह खुद नहीं करना चाहता था वह काम वह अपने आदमियों से कराये इसलिये उसने उनके साथ साथ अपनी ज़िन्दगी भी दाँव पर लगा रखी थी।

इतने लोगों के मारे जाने के बावजूद सरकार वह सुरंग बनाने पर तुली हुई थी। काफी लोगों की मौत के बाद कहीं जा कर उस पहाड़ में एक बहुत बड़ा छेद किया जा सका।

एक शाम जब सब लोग काम कर के घर लौट आये थे तो ता यू काम की जॉच करता हुआ उस पहाड़ की तलहटी में घूम रहा था।

जैसे जैसे वह उस सुरंग को हर कदम पर देखता जा रहा था वह बहुत खुश था कि इस तरह से तो उसकी यह योजना बहुत अच्छी चल रही थी और वह जल्दी ही पूरी हो जायेगी और फिर सैंकड़ों लोगों की जिन्दगियॉ बच जायेंगी।

उसके बाद वह सुरंग से कुछ दूर हट कर एक रास्ते पर चलने लगा। अगर वह जानता होता कि वह किस रास्ते पर जा रहा है तो शायद वह उस रास्ते पर कभी न जाता क्योंकि यह रास्ता घूम कर पहाड़ के ऊपर जाता था। पर वह अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि उसको पता ही नहीं चला कि वह किधर जा रहा है।

एक पल के लिये तो शाम के सूरज ने उसके शरीर को गर्मी दी पर दूसरे ही पल ठंडी हवा ने उसको कॅपकॅपा दिया। चलते चलते वह एक ऐसी गुफा में घुस गया जिसको उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसके सामने एक सुरंग थी जो रोशनी के डंडों से चमक रही थी और जो उसको लगा कि उस पहाड़ के अन्दर मीलों दूर तक चली गयी थी।

असल में किसी अनजानी ताकत ने उसको मजबूर किया कि वह उस गुफा के अन्दर घुसे सो वह उस गुफा के अन्दर घुस गया

और जैसे ही उसने उस तंग नीची छत वाली सुरंग में चलना शुरू किया तो वह बाहर की दुनियाँ के बारे में कुछ भी नहीं सोच सका।

पहले तो वह उस सुरंग के पत्थरों वाले खुरदरे रास्ते पर उन डंडों की रोशनी के सहारे चलता चला गया पर बाद में वे रोशनी वाले डंडे भी एक एक कर के गायब होते चले गये और वह ॲधेरे में ही चलता रहा। फिर वहाँ इतना ॲधेरा हो गया कि उसको वहाँ दिखायी देना बिल्कुल ही बन्द हो गया।

सो वह पलटा और वापस लौटने लगा। जब वह उस सुरंग से बाहर निकला तो शाम के पहले तारे निकल रहे थे। उसका समय का हिसाब किताब सब खो गया था।

अगली सुबह ता यू ने अपने आदमियों को वहीं छोड़ा और एक तेल का लैम्प ले कर फिर उसी गुफा के पास आया और अपने पुराने कदमों के निशानों पर ही चलने लगा।

उस सुरंग की दीवारें खुरदरी थीं और नम थीं। उसने कहीं कहीं उन पर कुछ खुदा हुआ भी देखा पर उसको यह पता नहीं चल सका कि उन पर क्या खुदा हुआ था।

एक घंटा चलने के बाद उसके लैम्प की रोशनी एक सोते हुए जानवर पड़ी जो उस सुरंग की दीवार के सहारे सिकुड़ा हुआ पड़ा था।

ऊपर से तो वह सूअर लगता था पर उसकी खाल का रंग एक अजीब से पीले रंग का था और उसके मुँह में एक चमकीले रंग का बिल्कुल गोल मोती रखा हुआ था।

ता यू उस सुरंग में उस जानवर से कुछ दूर और आगे तक गया तो उसको हरे रंग का एक भयानक कुत्ता मिला। वह कुछ झुका हुआ ऐसे बैठा था जैसे अभी अभी वह उस पर हमला बोल देगा।

उसको देख कर ता यू तो वहीं का वहीं जमा सा खड़ा रह गया पर कुत्ते ने ऐसा कुछ नहीं किया था जिससे वह डर जाता, सिवाय भोंकने के। और वह भौंका भी ऐसे जैसे कि वह उससे कुछ कहना चाहता हो।

इस बीच वह पीछे वाला सूअर जाग गया और ता यू के पीछे आ कर खड़ा हो गया। अब ता यू के पास और कोई रास्ता नहीं रह गया कि वह उस कुत्ते के पीछे पीछे जाये। तीनों चुपचाप मीलों तक चलते रहे। ता यू को समय और दिशा का कुछ पता नहीं था।

हालाँकि इतना चलने के बाद वह सोच रहा था कि वह थक जायेगा पर वह थका बिल्कुल भी नहीं था बल्कि उसको उसका शरीर तो बिल्कुल ही हल्का लग रहा था। जितना वह आगे चलता जा रहा था वह अपने आपको उतना ही ज़्यादा तन्दुरुस्त महसूस करता जा रहा था।

आगे जा कर उसको एक चमकीली सफेद रोशनी मिली जिसको देखते ही अचानक उसका शरीर लोहे जैसा भारी हो गया।

कुत्ता अचानक रुक गया, घूमा और अपनी तेज़ आँखों से ता यू की तरफ देखा।

जबकि कुत्ता ता यू का ध्यान अपनी तरफ खींचे रख रहा था सूअर ने अपनी शक्ल बदलनी शुरू कर दी। उसकी पीली खाल और गहरे रंग की हो गयी और उसके आगे और पीछे के पैर आदमी के हाथ पैरों में बदल गये।

अन्त में कुत्ते ने अपना सिर एक दैवीय शक्ल की तरफ देखने के लिये घुमाया तो ता यू ने भी उधर देखा। सूअर एक काले कपड़े पहने आदमी में बदल चुका था। उसी समय कुत्ते ने भी अपनी शक्ल बदल ली और वह भी काले कपड़े पहने एक आदमी बन गया।

हालँकि अभी तक कोई बोला नहीं था पर ता यू समझ गया कि वह जेड बादशाह[47] के दो नौकरों के साथ खड़ा है। ता यू ने उन दोनों नौकरों के उस पार उस सफेद चमकीली रोशनी की तरफ देखा तो उसने वहाँ उस रोशनी के गोले पर साँप के मुँह वाला एक आदमी बैठे देखा।

निडर हो कर ता यू उस आदमी की तरफ बढ़ा तो उसको लगा कि वह तो एक देवता के सामने खड़ा था। देवता ने अपने पास से नीचे फर्श पर से भोजपत्र का एक कागज उठाया और ता यू को अपने और पास बुलाया और उसको उसके सामने पत्थर के फर्श पर खोल दिया।

[47] Jade Emperor – the Emperor of the Sky
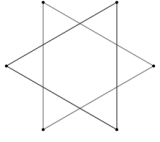
उस पर काली स्याही से लाइनों के आठ समूह बने हुए थे जिनमें से कुछ टूटे हुए थे और कुछ पूरे थे। ता यू ने उनको देख कर तुरन्त पहचान लिया कि वे छह कोनों वाले आठ तारे थे।

उसने देवता से पूछा — "क्या आप वा ज़ू[48] के बेटे हैं?"

देवता बोले — "हॉ। मेरी मॉ एक बहुत अच्छी धरती पर रहती थी। एक दिन जब वह उस धरती पर अकेली इधर उधर घूम रही थी तो उसको दो घंटे तक एक इन्द्रधनुष[49] ने घेर लिया।

जेड बादशाह ने उस समय मेरी मॉ को एक बच्चा धरती पर भेजा और फिर बारह साल बाद मैं पैदा हुआ।"[50]

देवता जब यह बता रहे थे ता यू को वह कहानी याद करने का समय मिल गया जो उसकी मॉ बचपन में उसको सुनाती थी। आज वह उसी देवता के आमने सामने खड़ा था जो एक बार कभी चीन का राजा था। यह सोचते ही वह उसको प्रणाम करने के लिये अपने घुटनों पर बैठ गया।

---

[48] Wah Zu

[49] Translated for the word "Rainbow". See its picture above.

[50] This incident reminds us the stories of the births of Ved Vyaas, the author of Mahaabhaarat, from Satyavatee; and Karn born from Kuntee.

बादशाह पलटा और उसने एक एक फुट लम्बी जेड[51] की तख्ती उठायी। उस तख्ती का हर इंच दिन का एक हिस्सा दिखाता था और साल का एक हिस्सा दिखाता था।

बादशाह वह तख्ती और कागज ता यू को देते हुए बोले — "ड्रैगन गेट पहाड़ की सुरंग तुम्हारा आखिरी इम्तिहान था और अब तक तुमने वह भी बहुत अच्छा किया है। स्वर्ग के देवताओं ने यह निश्चय किया है कि अब समय आ गया है जब तुम चीन पर राज करो।

इस कागज पर बने ये सितारे तुमको रास्ता दिखायेंगे। ये तुमको अच्छे साल बताने में तुम्हारी सहायता करेंगे। और जेड की यह तख्ती तुमको न्याय करने का अधिकार देगी। सबसे ज़्यादा अक्लमन्द भी तुम्हारी अक्ल पर शक नहीं कर पायेगा।"

ता यू ने देवताओं की वह भेंट बड़ी नम्रता से ले ली और उन देवता को उस अमर रोशनी में नहाया हुआ छोड़ कर वापस चल दिया।

जेड बादशाह के नौकरों के साथ वह बाहर की दुनियाँ में आया और फिर अपने काम करने की जगह आया जहाँ वह ड्रैगन गेट पहाड़ में सुरंग बना रहा था। उसकी सुरंग जल्दी ही खत्म हो गयी जिसको अमीर और गरीब सभी एक जैसी ही इस्तेमाल करते थे।

[51] Jade is a semi-precious stone found mostly in South-eastern countries. See its picture above.

सुरंग खत्म करने के बाद जैसा कि उन अमर देवता ने कहा था ता यू ने अपने आपको चीन का बादशाह घोषित कर दिया।

कहा जाता है कि उसने चालीस साल तक बहुत अक्लमन्दी से राज किया और उसके राज में कभी सूखा नहीं पड़ा, कभी बाढ़ नहीं आयी और कभी अकाल नहीं पड़ा।

25 चॉदी का बर्तन और उबलता समुद्र[52]

तो लो[53] देवता जो पूर्वीय समुद्र[54] के उस पार स्वर्ग के महल में रहता था वह जादू की चीज़ों को बनाने और उनको और ज़्यादा अच्छा बनाने का देवता था।

एक दिन उसके काम करने वाले कमरे में एक सारस[55] की बहुत ज़ोर की आवाज सुनायी पड़ी। वह सारस उस कमरे की खुली खिड़की से उड़ कर उसके कमरे में आ गया था।

उसने तो लो के सिर के ऊपर तीन बार चक्कर काटा और अपनी चोंच में रखी एक चिट्ठी उसके कमरे के फर्श पर डाल दी और फिर उसी खिड़की के रास्ते उड़ कर बाहर चला गया। तो लो ने अपना काम छोड़ा और उस चिट्ठी को पढ़ने के लिये उठा लिया।

यह चिट्ठी स्वर्ग की राजकुमारी सी वॉग मू की थी जो कुनलुन पहाड़ पर रहती थी।[56]

---

[52] The Silver Pot and the Boiling Sea – a myth from China, Asia.
[53] To Lo – a god
[54] Eastern Sea
[55] Translated for the word "Crane". See its picture above.
[56] Heavenly Princess Hsi Wang Mu who lived on Kunlun Mountain.

"मेरे प्यारे तो लू,

मैंने अभी हाल ही में अपने जन्म दिन मनाने के लिये यौ ची झील[57] पर एक दावत रखी थी। शाम को चिन तुंग और यू नू[58], मेरा नौकर और नौकरानी, दोनों ने बहुत सारी अमर शराब पी ली। शराब के कई घड़े तोड़ने और मेरे कई मेहमानों की काफी बेइज़्ज़ती करने के बाद वे तीन दिनों के लिये गायब हो गये।

हालाँकि वे अब लौट आये हैं और उन्होंने मुझसे माफी भी माँग ली है पर फिर भी यह मेरा काम है कि मैं उनको सजा दूँ। मैं यह चाहती हूँ कि मैं चिन तुंग को एक इन्सान बना दूँ और यू नू को समुद्री ड्रैगन राजा[59] के महल में भेज दूँ।

इससे पहले कि मैं उनको फिर से मिलने दूँ और वे शादी करें उनको वहाँ काफी समय बीत जायेगा। जब उनका यहाँ आने का समय आये तब क्या तुम उनकी आत्माओं को आजाद कर के मेरे पास भेज दोगे? मुझे पूरा विश्वास है कि तुम मेरा कहा जरूर करोगे।

तुम्हारी दोस्त

सी वॉग मू

---

[57] Yau Chih Lake

[58] Chin Tung and Yu Nu – names of a man and a woman's names respectivey in the service of the Princess.

[59] Sea Dragon King – the King of the Sea

तो लो ने वह चिट्ठी सँभाल कर रख दी और अपने काम में लग गया। उसको यह पक्का विश्वास था कि जब भी देवी को उसकी जरूरत पड़ेगी तब वह उसको बतायेगी।

जैसा कि देवी ने कहा था चिन तुंग को उसने एक लड़के बच्चे में बदल दिया था और चॉग परिवार[60] में रख दिया। उसके माता पिता को उसके असली रूप का पता नहीं था। उन्होंने उसका नाम चॉग यू[61] रख दिया और उसको एक इज़्ज़तदार पढ़े लिखे आदमी की तरह से बड़ा किया।

जब चॉग यू बाईस साल का हुआ तो उसके माता पिता चल बसे। चॉग यू ने उनकी सारी चीज़ें लीं, अपने परिवार का घर छोड़ा और चीन घूमने चल दिया – चीन के मन्दिर और मौनैस्टरीज़ जिनकी उसके गुरू बात किया करते थे।

चॉग यू का ध्यान खास कर के एक मन्दिर की तरफ खिंच गया जो पूर्वीय समुद्र के किनारे अकेले खड़ा हुआ था। उसने वहीं रहने का निश्चय किया और वहीं रह कर उस मन्दिर के पुजारी से कुछ पढ़ने लिखने का विचार किया सो वह वहीं ठहर कर उस मन्दिर के पुजारी से कुछ कुछ सीखने लगा।

पहली शाम को पढ़ने और ध्यान करने के बाद उसने अपने यात्रा वाले थैले में से अपनी ल्यूट[62]

---

[60] Chang family

[61] Chang Yu

[62] Lute is a string musical instrument similar to Guitar. See its picture above.

निकाली और पूर्वीय समुद्र की तरफ मुँह कर के बैठ गया। समुद्र शान्त था और चाँद पूरा था। उसने एक बहुत ही मीठी धुन बजानी शुरू कर दी जो उसको उसके पिता ने उसको तब सिखायी थी जब वह बच्चा था।

उसकी धीमी धुन रात के वातावरण में झील के काले पानी के उस पार तक फैल गयी। यह धुन एक जवान लड़की यू लीन[63] के कानों में भी पड़ी जो समुद्री ड्रैगन राजा के महल में रह रही थी।

महल के नौकरों के अनुसार उस लड़की को एक केंकड़े[64] चौकीदार ने समुद्र की तली में पाया था। वह केंकड़ा चौकीदार उस लड़की को महल में ले आया था और समुद्री ड्रैगन राजा ने उसे अपने पास रख लिया था।

यू लीन को पता नहीं था कि वह असल में कौन थी। वह वह दिन भी भूल गयी थी जब उसको और चीन तुंग को स्वर्ग से निकाल दिया गया था।[65]

ल्यूट के उन तारों से निकली हुई धीमी आवाज जो बहुत दूर से उसके ऊपर से आ रही थी यू लीन पर जादू सा डाल गयी। वह

[63] Yu Lien – the girl servant of the Princess

[64] Translated for the word “Crab Guard”. See the picture of crab above. Crabs are the guards of the Dragon King

[65] This incident points out some incidents of Hinduism where the Divine figures take birth on Earth as a result of curses, such as King Shaantanu by the curse of Brahmaa Jee or Bheeshm by the curse of Vashishth Jee. The second thing that when people are born on Earth they tend to forget from where they have come and who were they before coming on the Earth.

महल से उस जगह को ढूँढने के लिये निकल पड़ी जहाँ से ल्यूट की वह आवाज आ रही थी।

बहुत ध्यान से वह उन केंकड़ों से बचती हुई महल से बाहर निकल गयी जो समुद्री ड्रैगन के महल के चौकीदार थे। वह समुद्र की सतह पर आयी और फिर समुद्र के किनारे की तरफ तैर गयी।

धीरे धीरे वह समुद्र के रेतीले किनारे पर पहुँची जहाँ चॉग यू अपना ल्यूट बजा रहा था। वहाँ जा कर वह उसके पास एक गड्ढे में लेट गयी ताकि वह उसका संगीत ठीक से सुन सके।

अचानक ही चॉग लू की ल्यूट का एक तार टूट गया और चॉग लू उस टूटे तार की मार से अपनी उँगली बचाने के लिये थोड़ा पीछे की तरफ हट गया।

तभी उसने अपने बराबर में रेत में से आती कुछ आवाज सुनी तो उसने उधर देखा तो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की उसकी तरफ देख रही थी।

एक पल के लिये दोनों की आँखें मिलीं फिर लू चीन वहाँ से उठ कर समुद्र की तरफ भाग गयी और पानी में गायब हो गयी। चॉग यू भी समुद्र का किनारा पार कर के उसके पीछे पीछे भागा पर वह रेत में पड़ी किसी तेज़ नुकीली चीज़ पर पैर पड़ जाने से गिर पड़ा।

जब तक वह पानी के किनारे तक पहुँचा तब तक तो यू लीन समुद्र की सतह के नीचे पहुँच गयी थी पर जिस तेज़ नुकीली चीज़ की वजह से वह गिर पड़ा था उसमें उसको कुछ उम्मीद दिखायी दी। वह तेज़ नुकीली चीज़ यू लीन की पोशाक का जेड का एक ब्रूच[66] था।

उस रात वह उस ब्रूच को लिये हुए ही सोता रहा। अगले दिन वह फिर उसी जगह पहुँच गया कि शायद उस दिन भी उसको उस लड़की की एक झलक दिखायी दे जाये।

वह वहाँ शाम ढले तक उसका इन्तजार करता रहा पर वह उसको कहीं दिखायी नहीं दी तो फिर वह मन्दिर वापस चला आया और दुखी हो कर बैठ गया।

उसी समय एक ताओ पुजारी[67] वहाँ आया और उसने उससे पूछा — "बेटा तुम इतने दुखी क्यों बैठे हो?"

चॉग यू यह सुन कर खुश हुआ कि कम से कम कोई तो था जो उसकी चिन्ता करता था और वह किसी से बात कर सकता था। उसने उस पुजारी को अपनी कहानी सुना दी और उसका वह जेड का ब्रूच भी उसको दिखाया।

पुजारी ने उस ब्रूच को ठीक से देखा भाला और बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुमको यह पता है कि यह जेड कितना खास है।

[66] A piece of jewelry tucked on a dress or hat for its beauty. Jade is a semi-precious stone. Although Jade comes in many colors but here its most common green color is shown. See its picture above.
[67] Tao Priest is the priest of Tao religion of China

यह ब्रूच समुद्री ड्रैगन की राजकुमारी का है और उसने इसको यहाँ ऐसे ही नहीं छोड़ा होता अगर वह तुमसे दोबारा मिलना नहीं चाहती।"

चॉग यू ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के उसे ढूँढने में मेरी सहायता कीजिये। मैं उसको एक बार फिर देखने के लिये कुछ भी करूँगा।"

उस पुजारी ने उसकी बॉह पकड़ कर उसको तसल्ली दी और बोला — "इतने ज़्यादा उतावले न हो। अगर तुमने सोच लिया है कि तुमको उससे मिलना ही है तो तुमको पहले उसके पिता समुद्री ड्रैगन राजा को समझना पड़ेगा।

समुद्री ड्रैगन राजा एक बहुत ही गुस्से वाला राजा है। अगर तुम ने उसको गुस्सा कर दिया तो फिर तुम यह कहानी किसी और को सुनाने लायक भी नहीं रहोगे। यहाँ तक कि उसको भी जिसको देखने से ही बहुत से देवता और अमर लोग कॉप जाते हैं।

उसका गहरे हरे रंग का लम्बा चेहरा है। उसके दो बड़े दॉत उसके नीचे वाले होठ तक आते हैं। वह किसी को भी जिससे भी वह गुस्सा हो उसको खा जाने की ताकत रखता है। यहाँ तक कि उन आदमी और इमारतों को भी वह खा सकता है जो दुनियाँ के किसी बहुत दूर के कोने में होती हैं।

वह अपने दाँतों से पत्थरों को भी काट सकता है और सोने के टुकड़े कर सकता है। उसके शरीर का बोझ इतना है कि वह सौ आदमियों को एक साथ मार सकता है।

वह इतना ताकतवर है कि वह दुनियाँ के ऊँचे से ऊँचे पहाड़ से भी ऊँची लहर पैदा कर सकता है जो उस पहाड़ को उसके किनारे पर ला कर गिरा दे और हर जहाज को डुबो दे और हर गाँव को बहा ले जाये जो उसके रास्ते में आ जाये।

अब बताओ क्या तुम अभी भी ऐसे राजा की बेटी से शादी करना चाहोगे?"

चाँग यू बोला — "अगर मैं सोच पाता कि उससे मिलने का कोई और रास्ता है तो भी मैं उससे मिलने की जरूर कोशिश करता। जो कुछ भी आपने मुझे बताया उससे तो मुझे ऐसा लगता है कि जैसे ही मैं समुद्र में घुसूँगा मैं मारा जाऊँगा पर फिर भी मैं उम्मीद नहीं छोड़ता।"

ताओ पुजारी उसके यू लीन को ढूँढने के इरादे जान कर बहुत खुश हुआ और उसको लगा कि शायद उन दोनों की किस्मत में उन दोनों का मिलना पहले से ही लिखा है।

वह रेत पर घुटनों के बल बैठा और एक चमड़े का थैला खोल कर उसने अपने पैरों के पास रख लिया। उस थैले मे कई अजीब अजीब चीज़ें थीं पर पुजारी ने उनमें से केवल तीन चीज़ें ही उठायीं

– एक चाँदी का बर्तन, एक पीतल का चमचा और एक सोने का सिक्का।

उसने वे सब चीजें चॉग यू को दे दीं और कहा — "इस पीतल के चमचे से समुद्र का पानी भर कर चाँदी के बर्तन में डाल लो और फिर यह सोने का सिक्का भी इसी बर्तन में डाल लो।

इसके बाद इस बर्तन के पानी को आग के ऊपर रख कर गर्म करो। जैसे जैसे इस बर्तन में पानी उबलेगा वैसे वैसे समुद्र का पानी भी उबलने लग जायेगा।

जब इस पानी के एक इंच का दसवाँ हिस्सा भाप बन कर उड़ेगा तब समुद्र की सतह दस फीट ऊपर आ जायेगी। और जब इस बर्तन का सारा पानी भाप बन कर उड़ जायेगा तो तुमको समुद्र की नीचे की तली दिखायी देने लगेगी।

उसी समय समुद्री ड्रैगन राजा को मारना ठीक रहेगा क्योंकि तभी वह सबसे ज़्यादा कमजोर होगा।"

यह कह कर ताओ पुजारी चला गया सो चॉग यू को यह सब अब अकेले ही करना था। उसने किनारे से कुछ लकड़ी इकट्ठी की और आग जलायी। पीतल के चमचे से उसने चाँदी के बर्तन में पानी

भर लिया और वह सोने का सिक्का उस बर्तन में डाल दिया। फिर वह चॉदी का बर्तन उसने उस आग के ऊपर रख दिया।

जब वह पानी उस बर्तन में उबलने लगा तो उसने देखा कि समुद्र का पानी भी उबलने लगा। समुद्र का पानी जल्दी जल्दी भाप बन कर उड़ जाये इसलिये उसने उत्सुक हो कर उस बर्तन के नीचे और ज़्यादा लकड़ियॉ लगा दीं।

बहुत जल्दी ही सारा समुद्र भाप से ढक गया। उसकी गर्मी इतनी ज़्यादा थी कि चॉग यू को पसीना आने लगा। समुद्र में से भी केंकड़े और मछलियॉ आदि समुद्री जानवर चीखते हुए उबलते पानी की गर्मी से परेशान किसी ठंडी जगह की तलाश में बाहर आने लगे।

तभी एक बौद्ध साधु[68] चॉग यू की तरफ दौड़ा आया और उससे यह सब रोकने की प्रार्थना की — "तो यह सब तुम कर रहे हो? इसको तुरन्त रोक दो। कुछ देर पहले ही समुद्री ड्रैगन राजा के चौकीदार मुझसे मिलने आये थे और वे उस आदमी के बारे में पूछ रहे थे कि वह कौन है जो यह सब हंगामा मचा रहा है।

समुद्री ड्रैगन राजा तुमको वह सब देने को तैयार है जो तुमको चाहिये पर तुम समुद्र का यह पानी उबालना बन्द करो।"

[68] Translated for the words "Buddhist Monk"

चॉग यू गुस्से से बोला — "तुम मुझे बेवकूफ मत बनाओ। मैं समुद्र की तली में तैर कर कैसे जा सकता हूॅ? यह तो बहुत गहरा है।"

बौद्ध साधु ने उसको शान्त करते हुए कहा — "उसकी तुम चिन्ता न करो। तुम मेरे साथ आओ और मैं तुमको विश्वास दिलाता हूॅ कि मैं तुमको एक बूॅद पानी छुआए बिना ही समुद्र की तली तक ले जाऊॅगा।"

चॉग यू ने वह आग बुझायी और उस बौद्ध साधु के पीछे पीछे चल दिया। जैसे ही समुद्र का पानी ठंडा हो गया उसके ऊपर की भाप छॅट गयी और समुद्र का पानी भी अपनी पुरानी सतह तक आ गया।

वह बौद्ध साधु उसको समुद्र की तरफ ले गया। वहॉ जा कर उसने अपना लकड़ी का डंडा समुद्र की तरफ किया तो उसका पानी उछलने लगा और उसकी ऊॅची ऊॅची लहरें उछल उछल कर एक दूसरे से टकराने लगीं। कुछ ही देर में वहॉ से पानी दो हिस्सों में बॅट गया और समुद्र की तली में जाने के लिये रास्ता खुल गया।

दोनों उस समुद्र की तली पर चलने लगे और तब तक चलते रहे जब तक वे एक पत्थर के महल तक नहीं आ पहॅुचे। यह महल अक्सर आदमियों की नजर से छिपा रहता था।

जैसे ही वे दोनों उस महल के पास पहुँचे तो बहुत ही बड़ी बड़ी आँखों वाले चार लौब्सटर[69] जो उस महल के दरवाजों की चौकीदारी करते थे एक तरफ को हट गये।

दो कछुओं ने महल के मूँगे[70] के बने दरवाजे धीरे धीरे खोले। महल की दीवारें जवाहरातों और बहुत सारे कीमती पत्थरों से सजी हुई थीं। उसमें पड़े हुए सिल्क के परदे बहुत सुन्दर मोतियों से सजे हुए थे।

छतों में मूँगे के लैम्प लगे थे जिनसे निकली हुई रोशनी क्रिस्टल की गेंदों में से हो कर चारों तरफ फैल रही थी। उसकी मेज कुरसियाँ आदि सब सोने, जेड और हाथी दाँत के काम से सजे हुए थे।

वे दोनों बीस कमरे पार कर के उस जगह पहुँचे जहाँ समुद्री ड्रैगन राजा अपने सिंहासन पर बैठा हुआ था। वहाँ वह एक बड़े से पीले रंग के स्पंज से अपनी भौंहें साफ कर रहा था।

उसने उन दोनों को अपने सामने पड़े स्टूलों पर बैठने के लिये कहा पर गुस्से के मारे उसने उनको नमस्ते तक नहीं की।

[69] Lobster – a kind of sea animal. Normally it is red in color. See its picture above

[70] Translated for the word “Coral”. See its picture above. Coral is found in many colors.

राजा ने एक घूमती हुई सीपी[71] उठायी और उसको अपने मुँह से लगा कर उसको लम्बी साँस ले कर ज़ोर से बजाया जिसकी गूँज सारे महल में फैल गयी।

इससे पहले कि चाँग यू पीछे मुड़ कर यह देख सकता कि उसके पीछे क्या हो रहा है छह मत्स्य कन्याऐं[72] उसकी यू लीन को अपने साथ ले कर उस कमरे में आ गयीं और राजा के सिंहासन के पास आ कर खड़ी हो गयीं।

समुद्री ड्रैगन राजा गुस्से से काँपता हुआ बोला — "तुमको मुझसे यह कहने की जरूरत नहीं कि तुमको मेरी बेटी से प्यार हो गया है। मेरी मछली जासूसों ने मुझे यह सब पहले ही बता दिया है।

मैं इस काम में अपना समय बरबाद करना नहीं चाहता सो पूर्वी समुद्र के राजा होने के नाते मैं अपनी बेटी को तुम्हारी पत्नी बनने की इजाज़त देता हूँ। पर तुम स्वर्ग और धरती की पूजा जरूर करते रहना। भगवान करे तुम्हारा यह गँठजोड़ हमेशा अमर रहे।

अब कोई मुझे शराब ला कर दे ताकि मैं अपने आपको ठंडा कर सकूँ।"

तुरन्त ही एक शराब से भरी घूमती हुई सीपी राजा के हाथ में दे दी गयी और उसकी बेटी की

[71] Translated for the words "Spiral Shell". See its picture above. Spiral shells come in several shapes. One of its shapes is our Conch (Shankh which we blow at worship time) also

[72] Translated for the word "Mermaid". See its picture above.

शादी की तैयारियाँ शुरू हो गयीं। कई घंटे बाद उस कमरे में सब लोग पीने, गाने और नाचने के लिये आ गये।

अभी यह सब हँसी खुशी का शोर शुरू ही हुआ था कि राजा के सिंहासन के पास लगी घंटी के बजने से सब लोग रुक गये। तो लो आसमान से सी वॉग मू का हुक्म पालन करने के लिये आ गया था। वह बादल के फर्श पर खड़ा था।

उसने वहाँ खड़ी भीड़ को बताया कि नये दुलहा दुलहिन असल में कौन थे। उन्होंने स्वर्ग में क्या खराब बर्ताव किया था और फिर उनको क्या सजा मिली। इस सबको जानने के लिये वहाँ खड़ी भीड़ आगे खिसक आयी थी।

इस बात ने चॉग यू और यू लीन को शादी में इकट्ठा हुई भीड़ में और भी ज़्यादा मशहूर कर दिया था। सबने अपनी अपनी शराब की सीपियाँ उठा उठा कर उनके लिये दुआऐं की कि वे खुश रहें।

पर जब भीड़ यह दुआ कर रही थी तो तो लो ने चॉग यू और यू लीन की शराब की सीपियों में एक जादुई पानी डाल दिया। जब चॉग यू और यू लीन ने वह शराब पी तो वे हवा की तरह से हल्के हो गये और बहुत ही खुश हो गये। उनकी आँखों के सामने महल के रंग बहुत ही साफ साफ तैरने लगे।

चौकीदार केंकड़ों, मछलियों, सितारा मछली आदि सभी ने उन दोनों को बहुत ही प्यार भरी विदाई दी और तो लो उन दोनों को ले कर स्वर्ग चला गया।

वे जब स्वर्ग पहुँच गये तो सी वॉग मू ने उनका स्वागत किया हालॉकि माफ तो उसने उनको बहुत साल पहले ही कर दिया था। वे लोग जब धरती पर रहे तो वे बड़े ढंग से रहे इसलिये उसने उनको अपने घर में फिर से रख लिया।

हर बार जब भी कोई परी या आत्मा धरती पर रह कर कुनकुन पहाड़ पर वापस आती तो चॉग यू और यू लीन दोनों ही उसका बड़े उत्साह से स्वागत करते। ऐसा कहा जाता है कि वे लोग आज भी वहॉ भटकती आत्माओं को खिलाते पिलाते देखे जाते हैं।

26 पॉच आदमियों के पहाड़[73]

ज़ैचुआन के शू राज्य[74] में एक ऐसा राजा राज करता था जो बहुत ही लालची और बहुत ही आलसी था। उसने अपना राज काज सब अपने मंत्रियों के ऊपर छोड़ा हुआ था। वह खुद कुछ नहीं करता था।

वह अपना आधा समय केवल यह सोचने में बिताता था कि वह अपना पैसा कैसे बढ़ाये और दूसरा आधा समय कोई ऐसी जादुई चीज़ की खोज में बिताता था जिससे वह अमर हो सके।

उसके राज्य के आस पास के राज्य उसके ऊपर हमला करने की सोचते थे पर वे ऐसा कर नहीं सकते थे क्योंकि पॉच बड़े साइज़ के आदमी[75] उसके राज्य की रक्षा करते थे।

ये बड़े साइज़ के लोग एक हाथ से ही बड़े बड़े पेड़ उखाड़ सकते थे। अपनी एक ही ठोकर से बड़े बड़े घर तोड़ सकते थे। अपनी एक छोटी सी सीटी से ही किसी भी बड़े से बड़े आदमी को दूर फेंक सकते थे।

[73] Five Men Mountains – a legend from China, Asia.
[74] In the Shu State of Szechuan
[75] Translated for the word “Giant”

इसी शू राज्य के उत्तर में एक चिन राज्य[76] था। दोनों राज्यों को मिलाने का केवल एक ही रास्ता था और वह थी एक गहरी घाटी जिसके दोनों तरफ बहुत ही खड़ी चढ़ाई वाले पहाड़ खड़े थे।

इस मुश्किल रास्ते ने और पाँच बड़े साइज़ के आदमियों के डर ने चिन राज्य के राजा को शू राज्य पर हमला करने से रोका हुआ था पर फिर भी वह शू राज्य को अपने राज्य में मिलाने के लिये अपने आस पास के दूसरे राजाओं से कहीं ज़्यादा इच्छुक था।

महीनों के सोच विचार के बाद चिन राज्य के राजा को एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि पहले शू राज्य के पड़ोसी राजाओं के रक्षा के तरीकों को कमजोर कर दिया जाये।

उसने अपने महल के पत्थर काटने वालों को हुक्म दिया कि वे एक पहाड़ से कुछ पत्थर काटें और उनसे गायों की कुछ मूर्तियाँ बनायें।

जब उन पत्थर काटने वालों ने अपना गायों को बनाने का काम खत्म कर लिया तो उन गायों को खींच कर उस तंग घाटी के मुँह की तरफ ले जाया गया। हर गाय के पीछे एक एक टुकड़ा सोने का बँधा था।

इसके बाद चिन राज्य के राजा ने अपने जासूसों को शू राज्य में एक अफवाह उड़ाने का हुक्म दिया कि ये गायें रोज गोबर के साथ साथ उसमें सोने के बड़े बड़े टुकड़े भी निकाल रही थीं।

---

[76] Chin State

शू राज्य के राजा ने जब यह सुना तो उसने अपनी फौज की एक टुकड़ी को उन गायों की रक्षा के लिये भेज दिया और कुछ लोगों को चिन राज्य के राजा से उन गायों को खरीदने के लिये सौदा करने के लिये भेज दिया।

ये गायें दोनों राज्यों की हद के अन्दर थीं ताकि उन पर दोनों राज्य अपना अपना दावा कर सकें। पर चिन राज्य के राजा ने कहा कि वह उन गायों पर अपना दावा नहीं करेगा क्योंकि उसका राज्य पड़ोसी राज्यों से ज़्यादा बड़ा और अमीर था।

शू राज्य का राजा अपनी इस खुशकिस्मती पर अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका। उसने उन बड़े साइज़ के आदमियों को हुक्म दिया कि वे उन गायों को उसके महल में ले आयें। वहाँ वे आराम से रह सकेंगी और और ज़्यादा सोने के टुकड़े दे सकेंगी।

उन बड़े साइज के लोगों ने उन गायों को अपने कन्धों पर उठाया और उनको उस तंग घाटी में से हो कर लाने लगे।

पर उन्होंने देखा कि दोनों पहाड़ों के बीच की जगह तो बहुत ही तंग थी और वे लोग उन गायों को लाते समय हर कदम पर बार बार पत्थरों और पेड़ों से टकरा रहे थे।

उनको यह भी डर लग रहा था कि कहीं वे उन कीमती गायों को कोई नुकसान न पहुँचा दें सो उन्होंने उस घाटी की चौड़ाई को बढ़ाने का निश्चय किया ताकि वे उन गायों को आसानी से और

बिना कोई नुकसान पहुँचाये शू राज्य के राजा के महल तक पहुँचा सकें।

उन्होंने वे गायें तो एक तरफ को रख दीं और अपने हाथों से ही उन पहाड़ों को तोड़ दिया। वहाँ से पेड़ उखाड़ उखाड़ कर तो उन्होंने पड़ोस के राज्यों में डाल दिये और पत्थरों को दूर हवा में उड़ा कर चिन राज्य में उछाल दिया।

जब दोनों पहाड़ों के बीच में काफी जगह हो गयी तो उन लोगों ने पाँच पाँच गायें अपने कन्धों पर उठा लीं और उनको महल के आँगन में ला कर रख दिया। इस तरह चिन राज्य के राजा ने अपना एक उद्देश्य पूरा कर लिया।

अब उसके प्लान में उन बड़े साइज़ को लोगों को मारना था जो उसके रास्ते का काँटा थे। उसको बताया गया था कि उन दोनों राज्यों के बीच वाले जंगल में एक एक हजार साल बूढ़ा अजगर रहता था।

यह सुन कर उसने उस एक हजार साल बूढ़े अजगर के बारे में एक अफवाह फैलायी कि उसकी आँखें इतनी ताकतवर हैं कि अगर कोई उसकी उन आँखों को खा ले तो वह आदमी अमर हो जायेगा।

जब शू राज्य के राजा ने यह नयी अफवाह सुनी तो उसको तो बस यह लगा कि अगर वह उन आँखों को खा ले तो वह अमर हो जायेगा। सो उसने अपने उन पाँचों बड़े साइज़ के आदमियों को

फिर बुलाया और उनको उस अजगर की ऑखें लाने के लिये भेजा।

उन बड़े साइज़ के आदमियों को यह लग रहा था कि चिन राज्य का यह राजा जरूर ही यह कोई जाल बिछा रहा था पर वे अपने राजा से इस बारे में कोई बहस नहीं कर सकते थे सो वे उस अजगर की ऑखें लाने के लिये चल दिये।

जंगल में काफी खोजने के बाद उनको एक गुफा के बाहर एक अजगर की बहुत बड़ी पूँछ पड़ी दिखायी दे गयी।

उस अजगर की वह पूँछ चार फीट चौड़ी थी और इतनी भारी थी कि एक बड़े साइज़ का आदमी तो उसको हिला भी नहीं सकता था। सो दो बड़े साइज़ के आदमियों ने उसको हिलाने की कोशिश की पर दो आदमी भी उसको नहीं हिला सके।

तब दो आदमी उसको हिलाने के लिये और लगे पर फिर भी अजगर की वह पूँछ हिल कर नहीं दी। आखिर पॉचवा बड़े साइज़ का आदमी भी उस पूँछ को हटाने के लिये आया तब कहीं जा कर वे सब मिल कर उसको हिला सके।

फिर उन्होंने उसको धूप में खिसका दिया। अजगर वहॉ जमीन पर बिना हिले डुले पड़ा रहा और वे आदमी उसकी ऑखें निकालने के इरादे से उसके सिर की तरफ चल दिये।

जैसे ही वे अपने तेज़ नाखून उसके सिर में घुसाने वाले थे कि वह अजगर इतने ज़ोर से हिला कि पूरी की पूरी धरती हिल गयी और उनके ऊपर का पहाड़ टूट कर उनके ऊपर गिर पड़ा।

इससे पहले कि वे बड़े साइज़ के आदमी वहाँ से बच कर भाग पाते वह अजगर गुफा के अन्दर खिसक गया। उस पहाड़ से बहुत बड़े बड़े पत्थर के टुकड़े टूट कर नीचे गिर रहे थे और उन बड़े साइज़ के आदमियों को घायल कर रहे थे।

जैसे ही वह पहाड़ पूरा टूट कर गिरा तो उसके गिरने से सारे में बहुत ज़ोर की आवाज फैल गयी और उस पहाड़ ने उन सब बड़े साइज़ के आदमियों के ऊपर गिर कर उनको मार दिया। जैसे ही वे सब मरे तो उनके शरीर बहुत सख्त हो गये और वे पाँच पहाड़ों में बदल गये।

जब चिन राज्य के राजा ने उन पाँचों बड़े साइज़ के आदमियों की मौत की खबर सुनी तो उसने शू राज्य पर हमला कर दिया पर शू राज्य के राजा ने बिना लड़े ही अपनी हार मान ली।

चिन राज्य के राजा की जीत की खुशी मनाने के लिये उस घाटी का नाम सोने की गाय घाटी[77] रख दिया गया।

[77] Gold Cow Gap

बड़े साइज़ के आदमियों के मरने की यादगार में उस जगह का नाम जहाॅ वे मरे थे पाॅच आदमी वाले पहाड़[78] रख दिया गया और वह जगह आज भी इसी नाम से जानी जाती है।

[78] Five Men Mountains

27 मुर्गे की कलगी की कहानी[79]

बहुत पुराने समय में चीन के पश्चिमी हिस्से में एक शिकारी एक अकेली घाटी में रहता था। वह दिन में तो शिकार करता था पर अपनी हर शाम वह अपने बागीचे में लगे पेड़ पौधों की देखभाल में लगाता था। अपने इस बागीचे को वह अपने बचपन से ही बहुत प्यार करता था।

एक बार जब वह शाम को शिकार कर के लौटा तो उसने देखा कि उसका प्रिय शहतूत का पेड़[80] मुरझाने लगा है। उसको डर लगा कि हो सकता है कि शायद कहीं जमीन खराब हो गयी हो जिसकी वजह से वह पेड़ मुरझाने लगा हो सो उसने उस पेड़ को वहाँ से उखाड़ कर एक दूसरी जगह नया गड्ढा खोद कर उसमें उसे लगा दिया।

उसने उस पेड़ के चारों तरफ झरने का पानी भी छिड़क दिया और उसकी जड़ के चारों तरफ अच्छी खाद भी डाल दी। रात को सोने से जाने से पहले वह उस पेड़ से बोला — "तुम चिन्ता न करो ओ शहतूत के पेड़, तुम कल तक बिल्कुल ठीक हो जाओगे।"

सुबह उठते ही वह अपने उस पेड़ को देखने के लिये फिर से बागीचे में गया तो उसने देखा कि उस पेड़ की शाखें तो पिछले दिन

---

[79] The Story of the Cockscomb – a myth from China, Asia.

[80] Translated for the words "Mulberry Bush". See its picture above.

से भी ज़्यादा कमजोर हो रही हैं और उसके फल भी सड़ने लगे हैं। शिकारी को लगा कि उसका शहतूत का पेड़ तो मर रहा है।

वह उस पेड़ के चारों तरफ देख कर यह जानने की कोशिश करने लगा कि शायद उसको उस पेड़ के मरने की कोई दूसरी वजह मिल जाये पर वहाँ की मिट्टी में उसको कोई ऐसी खास बात नजर नहीं आयी जिसकी वजह से उस पेड़ को मरना पड़े।

सो न तो वहाँ की मिट्टी ही खराब थी और न ही वहाँ के आस पास के पेड़ ही इस बात के लिये जिम्मेदार थे तो फिर क्या बात थी कि उसका वह पेड़ मर रहा था।

उसने आसमान में सूरज की तरफ देखा जो बहुत ज़ोर से चमक रहा था तो उसके सवाल का जवाब उसे मिल गया। वह सूरज की तरफ देख कर बहुत ज़ोर से गुस्सा होता हुआ और अपनी मुट्ठी हवा में हिला कर चिल्ला कर बोला — "अच्छा तो वह तुम हो जो मेरे शहतूत के पेड़ को मार रहे हो?"

पर इसके जवाब में सूरज तो केवल चमक कर ही रह गया।

"तुमने ऐसा क्यों किया? तुम मेरे पौधे क्यों मारना चाहते हो? तुम तो इतने गर्म हो कि तुम्हारी किरनें तो जिसको भी छू लेंगी उसी को बर्बाद कर देंगी।

और यह केवल तुम ही नहीं बल्कि तुम्हारा वह दोस्त चाँद, वह भी कुछ कम नहीं है। उसकी भी रोशनी कुछ कम नहीं है।"

कहता हुआ वह तूफान की तरह से अपने घर में घुस गया और अपने कमरे में इधर उधर यह सोचते हुए चक्कर काटने लगा कि वह सूरज और चाँद को कैसे नष्ट करे।

हालाँकि उसके दिमाग में उनको मारने के कई तरीके आये पर फिर उनको मारने लिये उसने अपने तीर कमान का इस्तेमाल करना ही ज़्यादा ठीक समझा।

सूरज आसमान के बीच में ही था। शिकारी ने उसकी तरफ अपना निशाना साधा और बड़ी होशियारी से उसके ऊपर तीर चला दिया।

उसका तीर धरती के ऊपर उड़ा और अपने शिकार की तरफ चल दिया। जा कर उसने सूरज की आँख फोड़ दी। सूरज तो बेचारा दर्द के मारे लोट पोट हो गया और जा कर सबसे पास वाले बादल के पीछे छिप गया।

हालाँकि बादलों ने उसको वहाँ से आसमान में धक्का देखने की काफी कोशिश की पर उसने दुनियाँ के सामने आने से बिल्कुल मना कर दिया और उस बादल में और गहरे और और गहरे चलता चला गया जब तक कि उसकी रोशनी धरती से बिल्कुल नहीं चली गयी।

शिकारी अपने इस काम से बहुत खुश हुआ और अबकी बार उसने चाँद को अपना निशाना बनाने की सोची जो सूरज के अचानक छिप जाने से पैदा हुए अँधेरे से जाग गया था।

वह आसमान की तरफ चलने लगा था ताकि वह अपना रात का काम कर सके। पर जैसे ही उसने अपना चेहरा आसमान में बाहर निकाला कि एक तीर उसके चेहरे पर भी आ कर लगा और उसकी भी ऑख में घुस गया।

वह भी दर्द से इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि सूरज को भी अपनी छिपी हुई जगह से बाहर यह देखने के लिये निकलना पड़ा कि बाहर क्या हो रहा था पर फिर भी दूसरे तीर के विचार से वह पूरा बाहर नहीं निकला और एक तरफ को ही रह कर बाहर की तरफ देखता रहा।

चॉद रोया और चिल्लाया और फिर वह भी एक घने बादल के पीछे छिप गया। उसने कसम खायी कि वह अब कभी बाहर नहीं निकलेगा।

अब उस शिकारी ने सितारों की तरफ देखा तो उसने देखा कि उनकी रोशनी तो उसके पेड़ पौधों को नुकसान पहुॅचाने के लिये बहुत ही धीमी थी। इसके अलावा थोड़ी सी रोशनी तो उसके पेड़ पौधों को बढ़ने के लिये चाहिये भी थी इसलिये उसने उनको वहीं छोड़ दिया।

अपने काम से सन्तुष्ट हो कर शिकारी अपने घर में आ गया पर अपने पेड़ के नष्ट होने में वह यह नहीं जान पाया कि उसने दुनियॉ का कितना बड़ा नुकसान कर दिया है। सारे जानवर, पेड़ पौधे और

आदमी बीमार पड़ने लगे। सारी फसलें अगर ज़िन्दा भी रहीं तो बहुत ही धीरे धीरे बढ़ रही थीं।

जैसे ही सूरज और चॉद आसमान में से गायब हुए तो धरती और आसमान के सभी जीव जन्तुओं ने यह विचार करने के लिये एक मीटिंग बुलायी कि अब क्या किया जाये।

गोल्डिन ओरिओले[81] चिड़िया ने यह मीटिंग शुरू की। वह बोली — "कौन इस मामले में सलाह दे सकता है कि सूरज और चॉद को आसमान में कैसे वापस लाया जाये?" कह कर वह वहॉ इकट्ठा हुई भीड़ के ऊपर उड़ गयी।

उसने जानवरों के पास जा जा कर अपने पंख फड़फड़ाये, बैल के सिर के ऊपर चक्कर लगाया और उससे पूछा — "तुम क्या कहते हो बैल? सूरज तुम्हारी भारी आवाज जरूर सुनेगा और फिर वह तुम्हारा सन्देश चॉद को भी दे देगा।"

बैल इस बात से बहुत खुश हुआ कि सारे जीव जन्तुओं में से इस काम के लिये उसी को चुना गया। वह घूमता हुआ भीड़ के आगे की तरफ गया और फिर पहाड़ी के एक तरफ जा कर एक ऐसी जगह जा कर खड़ा हो गया जहॉ से सारे जानवर और सूरज उसको ठीक से देख सकें।

---

[81] Golden Oriole is a small bird species mostly found in Eurasia and in some parts of Africa. It is different from the bird found in Eastern Asia. See its picture found in Eurasia part of the world.

वह बोला — "मिस्टर सूरज, अब तुम बाहर आने के लिये सुरक्षित हो। हम तुमको फिर से देखना चाहते हैं सो अब तुम जल्दी से बाहर आ जाओ।"

सूरज ने बैल की गहरी आवाज सुनी तो पर उसकी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं हुई। तो बैल ने उसको फिर से पुकारा पर सूरज बार बार उसकी पुकार को अनसुनी करता रहा और वह बाहर नहीं निकला।

बैल ने उसको विश्वास दिलाते हुए कि वह अब बाहर निकलने के लिये सुरक्षित है अठारह बार आवाज लगायी पर सूरज को वह उसकी सुरक्षित जगह से बाहर निकलने के लिये इस बात का विश्वास नहीं दिला सका कि वह अब सुरक्षित है।

तभी एक सूअर पीछे से चिल्लाया — "शायद बैल की आवाज इतनी तेज़ नहीं है कि वह सूरज तक पहुॅच सके।"

एक कुत्ता जो सामने ही बैठा था बोला — "क्यों न हम किसी दूसरे को चुनें। शायद चीता हमारी सहायता करने को तैयार हो। वह चॉद को पुकार सकता है शायद वह उसकी सुन ले।"

चीते ने खुशी में भर कर एक चीख मारी और भीड़ के सामने आ कर उसी पहाड़ी की तरफ दौड़ गया जहॉ वह बैल खड़ा हुआ था। उसने अपना सिर पीछे किया और चॉद की तरफ देख कर दहाड़ा — "चॉद ओ चॉद, अब तुम बाहर आ जाओ, आसमान अब बिल्कुल सुरक्षित है। तुम्हें अब कोई खतरा नहीं है।"

चीते की दहाड़ सारे आसमान में और सारे बादलों में गूँज गयी पर चाँद भी बाहर निकलने के लिये इतना डरा हुआ था कि चीते की आवाज भी उसको अपना चेहरा दिखाने के लिये हिम्मत नहीं दे सकी।

चीते ने फिर एक बार कोशिश की पर फिर उसका कोई असर न देख कर उसने अपना सिर नीचे कर लिया।

जानवरों की काउन्सिल ने हार मान ली और सब अपने अपने घरों को, घोंसलों को, गुफाओं को लौट गये।

तीन साल बाद जब धरती के तीन चौथाई लोग और जानवर भूख और बिना सूरज और चाँद की रोशनी के मर गये तो बचे हुए चिड़ियों और जानवरों ने अपनी काउन्सिल की फिर एक मीटिंग बुलायी।

अब वे सब इस पर विचार करने के लिये एक गोले में बैठ तो गये पर शान वाले चीते और ताकतवर बैल की नाकाम कोशिशों को याद कर के वे अब किसी का भी नाम लेने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे कि वह सूरज और चाँद से आसमान में प्रगट होने की प्रार्थना करे कि वे आसमान में बाहर निकल कर आयें।

जब उन्होंने अपनी हर उम्मीद छोड़ दी तो एक मुर्गा उस गोले के बीच में फुदकता आया और बोला — "आप लोग मुझे एक

मौका क्यों नहीं देते? सूरज मेरा भाई[82] है मुझे यकीन है कि वह मुझे जरूर सुनेगा।"

कुत्ता बोला — "यह मुर्गा ठीक बोलता है। इसकी आवाज साफ है, यह सूरज का रिश्तेदार है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि अगर इसने उनको पुकारा और अगर सूरज चाँद बाहर नहीं भी आये तो भी हमारा कुछ नुकसान तो होता नहीं है।"

दूसरों की इजाज़त का इन्तजार किये बिना ही मुर्गे ने अपना सिर पीछे की तरफ टेढ़ा किया और बहुत ज़ोर से बाँग दी — "भाई सूरज, तुम बहुत दिनों से छिपे हुए हो। अब तुमको नुकसान पहुँचाने वाला यहाँ कोई भी नहीं है। अब तुम बाहर निकल आओ और हमारी दुनियाँ को फिर से रोशनी दे दो।"

मुर्गे की आवाज आसमान तक गयी और उसने सोते हुए सूरज को जगा दिया। सूरज अपने बादल में से बाहर निकलने लगा तो मुर्गे ने उसको एक बार और पुकारा।

सूरज अपने भाई के हिम्मत दिलाने पर और बाहर आया और इतना बाहर आ गया जब तक कि धरती और आसमान दोनों ही में उसकी रोशनी की बाढ़ नहीं आ गयी।

सूरज अपने धरती और उस पर रहने वाले साथियों को देख कर बहुत खुश हुआ पर वह यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया

[82] Translated for the word "Cousin"

कि शर्मीला चॉद अभी भी बादलों में छिपा हुआ था। सूरज आसमान में नाचने लगा और चॉद को भी बादल में से बाहर निकाल लाया।

उसने चॉद से कहा — "आज हम दोनों आसमान में एक साथ चमकेंगे और तुम देखोगे कि डरने की कोई बात नहीं है। जब मैं आज रात को आराम करूँगा तब तुम देखोगे कि तुम आसमान में अपनी जगह बिल्कुल सुरक्षित रहोगे।"
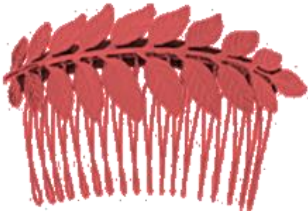
उसके बाद सूरज आसमान में थोड़ा नीचे की तरफ आया और मुर्गे से चिल्ला कर बोला — "मुझे मालूम है कि तुमने जितना बोला है उससे तुम थक गये होगे। लो मेरी तरफ से तुम यह कंघी भेंट में लो। रोज सुबह तुम इससे अपने पंखों को कंघी कर लिया करना।"

यह कह कर सूरज ने एक कंघी नीचे फेंक दी पर मुर्गा उसको लेने की इतनी जल्दी में था कि वह उसको लेने के लिये उधर की तरफ भागा जिधर वह कंघी गिरने वाली थी।

जब वह उधर पहुँचा तो वह कंघी उसके सिर पर उलटी गिर पड़ी। उस कंघी का एक सिरा सूरज की तरफ था।

आज भी सूरज की यह भेंट मुर्गे के सिर पर उलटी ही रखी है।

28 बॉसुरी बजाने वाला गूॅगा [83]

हालॉकि आह चिन गूॅगा था पर जब वह गूॅगा बॉसुरी बजाता था तो जिन्होंने उसको सुना था उनका कहना था कि जो कोई भी आदमी जो कुछ भी कर रहा होता था वह अपना वह काम छोड़ कर उसकी बॉसुरी सुनने लग जाता था।

चिन बिना रुके दिन रात बॉसुरी बजा सकता था। गॉव के लोग उसको बहुत प्यार करने लगे थे पर पॉच साल तक उसकी बॉसुरी सुनने के बाद उसकी पत्नी को लगा कि बस अब काफी हो गया और उसने उसकी बॉसुरी काफी सुन ली।

एक सुबह जब उसका पति तीन दिन तक बॉसुरी बजाता रहा और उसके बाद भी उसके बॉसुरी बजाना खत्म नहीं हुआ तो उसने अपने पति को घर से बाहर निकाल दिया और चेतावनी देते हुए उससे कहा कि वह तब तक घर वापस लौट कर न आये जब तक उसको कोई काम न मिल जाये।

इससे उस बॉसुरी बजाने वाले का दिल टूट गया। वह समुद्र के किनारे चला गया और बहुत देर तक वहॉ घूमता रहा। वहीं उसने फिर एक दुख भरी धुन बजानी शुरू कर दी।

समुद्र की मछलियॉ उस धुन को सुन कर उस पर इतनी मोहित हो गयीं कि वे तैर कर समुद्र के किनारे पर आ गयीं। यहॉ तक कि

[83] The Dumb Flute Player – a legend from China, Asia.

समुद्र की लहरें भी उसकी धुन के ऊपर नाच नाच कर किनारे की तरफ आ रही थीं।

एक घंटे के अन्दर अन्दर ही समुद्र का किनारा बहुत सारी सीपियों[84], केंकड़े[85], जैली मछली आदि समुद्री जानवरों से भर गया और वे सब उसकी धीमी धुन पर जो हवा और पानी में गूॅज रही थी नाच रहे थे।

अचानक मछलियों में तभी एक हलचल मची और समुद्र का पानी अलग हो गया और इससे समुद्र में समुद्र तल का रास्ता दिखायी देखने लगा।

बॉसुरी बजाने वाले ने देखा कि उसके सामने से केंकड़े और प्रौन मछली[86] की एक फौज उसी की तरफ चली आ रही थी। उस फौज के आगे आगे समुद्री ड्रैगन राजा[87] था।

गॅूगे बॉसुरी बजाने वाले ने अपना बॉसुरी बजाना तब तक जारी रखा जब तक राजा उसके सामने आ कर खड़ा नहीं हो गया और उसने अपना हाथ उठा कर सबको शान्त रहने का हुक्म नहीं दे दिया।

---

[84] Translated for the word "Oyster". See its picture above – above the picture of the Crab. Pearl is produced by an Oyster

[85] Translated for the word "Crab". See its picture above – below the picture of Oyster.

[86] Prawn is a kind of fish. See its picture above.

[87] Sea Dragon King – the King of the Sea.

राजा ने बॉसुरी बजाने वाले को हाथ पकड़ कर उठाया और उसको समुद्र में बने रास्ते से ले कर समुद्र के अन्दर चल दिया। रास्ते में वह बोला — "तुम्हारा संगीत उन सबमें मीठा है जो मैंने अब तक सुने हैं।

मेरी रानी बीमार है पर वह भी तुम्हारा संगीत सुन कर अच्छा महसूस करने लगी है। क्या तुम रोज अपनी यह बॉसुरी उसके लिये बजाओगे ताकि मेरी पत्नी ठीक हो सके?"

बॉसुरी बजाने वाले ने हॉ में सिर हिलाया और राजा के महल के मोती वाले दरवाजे में से हो कर महल के अन्दर घुसा। क्योंकि रानी बीमार थी इसलिये महल में सब जगह उदासी छायी हुई थी।

यह देख कर बॉसुरी बजाने वाले ने एक धुन बजानी शुरू की जिससे महल की वह दुख और उदासी दूर हो गयी और कुछ दिनों में ही रानी बिल्कुल ठीक हो गयी।

इसके इनाम में बॉसुरी बजाने वाले को राजा के महल में आने जाने की आजादी दे दी गयी और वह शाही परिवार का एक बहुत ही अच्छा दोस्त बन गया।

बॉसुरी बजाने वाला अक्सर खुशी की धुनें बजाया करता था पर एक शाम राजा ने अपने महल के बागीचे से एक दुख भरी धुन सुनी तो राजा उस बॉसुरी बजाने वाले की खोज में चल दिया।

राजा ने देखा कि बॉसुरी बजाने वाला एक दीवार के सहारे बैठा बॉसुरी बजा रहा था और उसकी ऑखों से ऑसू बह रहे थे।

राजा ने पूछा — "क्या बात है तुम रो क्यों रहे हो? क्या तुम अकेले हो इसलिये?"

बाँसुरी बजाने वाले ने हाँ में सिर हिलाया।

"क्या तुमको अपने घर परिवार की याद आ रही है?"

बाँसुरी बजाने वाले ने फिर हाँ में सिर हिलाया।

राजा बोले — "तो मैं तुमको तुम्हारी इच्छा के बिना यहाँ और नहीं रख सकता। हालाँकि तुमको छोड़ते हुए मुझे बहुत दुख हो रहा है फिर भी मैं अपने केंकड़े चौकीदारों को बोलूँगा कि वे तुमको तुम्हारे घर छोड़ आयें।

पर इससे पहले कि तुम अपने घर जाओ मैं तुमको यह सीपी देना चाहता हूँ जो जैसे ही तुम्हारा संगीत सुनेगी यह खुलेगी और तुमको वह सब कुछ देगी जो कुछ भी तुम उससे माँगोगे।"

कह कर राजा ने वह सीपी उस बाँसुरी बजाने वाले की रेशमी पोशाक की जेब में रख दी और उसको अन्तिम विदा किया। समुद्र का पानी एक बार फिर फटा और समुद्री ड्रैगन राजा के चौकीदार केंकड़े उस बाँसुरी बजाने वाले को सुरक्षित समुद्र के किनारे पर पहुँचा आये।

बाँसुरी बजाने वाला जब अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पहले तो उसका बड़ी सावधानी से स्वागत किया पर जब उसने उसकी सीपी की कहानी सुनी तो उसका बर्ताव उसके साथ बिल्कुल ही बदल गया। अब वह बहुत खुश थी।

आह चिन ने वह सीपी रसोईघर की मेज पर रखी और अपनी बॉसुरी बजानी शुरू की। उसका सॅगीत सुन कर वह सीपी मेज पर चारों तरफ नाचने लगी। फिर फर्श पर कूद पड़ी और फिर उसने आह चिन और उसकी पत्नी के आगे अपना मुॅह खोल दिया।

पत्नी ने उत्सुकता से कहा — "क्या तुम मेरे पति के घर आने की खुशी में इस मेज पर बहुत बढ़िया खाना लगा सकती हो?" और उस सीपी ने उसका कहना मानते हुए उस मेज पर स्वादिष्ट खाने की बहुत सारी प्लेटें लगा दीं।

यह देख कर पत्नी चिल्लायी — "तुम्हारे बॉसुरी बजाने का यह तो बढ़िया इनाम है। अब तुम हमेशा बॉसुरी बजा सकते हो।"

गॉव के लोग अब आह चिन के घर ज़्यादा आने लगे क्योंकि अब उनके लिये वहॉ आने की दो वजहें थीं – बढ़िया संगीत और बढ़िया खाना या फिर वे लोग और जो कुछ भी चाहें।

जादुई सीपी की यह बात वहॉ के चालाक जिला मजिस्ट्रेट के कानों में भी पड़ी तो उसने उस सीपी को उस बॉसुरी बजाने वाले से ले लेने का निश्चय कर लिया और उसके घर पहॅुच गया।

जिला मजिस्ट्रेट को अपने घर आया देख कर आह चिन की पत्नी खुशी से भर गयी और अपने आपको बहुत ही खुशकिस्मत समझने लगी। उसने तुरन्त ही सीपी को खाने की एक बहुत बढ़िया खाने की मेज लगाने के लिये कहा।

जब वे सब खाना खा चुके तो जिला मजिस्ट्रेट ने आह चिन की बॉसुरी की और उसकी सीपी की बहुत तारीफ की और उसको उन दोनों को उसे बेचने के लिये कहा।

आह चिन की पत्नी तो मजिस्ट्रेट को मना करने से डरती थी पर आह चिन ने अपना सिर ना में बहुत ज़ोर से हिलाया। फिर भी मजिस्ट्रेट ने आह चिन की खामोशी को हॉ में लिया और अपने चमड़े के थैले में से एक तराजू निकाली।

वह बोला — "मैं अपनी ईमानदारी से आह चिन की बॉसुरी और सीपी के बराबर सोना और चॉदी तौल कर उसको दे दूॅगा।"

आह चिन ने एक बार फिर मजिस्ट्रेट को रोकने की कोशिश की पर मजिस्ट्रेट ने उसको एक तरफ को धक्का दे दिया और सीपी को तराजू के एक पलड़े में रख कर सोने के तीन टुकड़े उसने उसके दूसरे पलड़े में रख दिये।

पर सीपी भारी थी सो उसने तराजू के दूसरे पलड़े पर सोने के तीन टुकड़े और रखे पर सीपी फिर भी भारी ही रही।

मजिस्ट्रेट तराजू के दूसरे पलड़े पर सोना चॉदी और दूसरी कीमती धातु रखता रहा पर सीपी का पलड़ा बराबर भारी ही रहा। कोई भी चीज़ सीपी के पलड़े को ऊपर नहीं उठा पा रही थी।

आखिर मजिस्ट्रेट ने अपने नौकरों को एक और बड़ी तराजू लाने का हुक्म दिया। जब बड़ी तराजू आ गयी तो उसने अपने सारा

सोना चॉदी उस तराजू के एक पलड़े पर रख दिया और सीपी दूसरे पलड़े पर। पर फिर भी सीपी वाला पलड़ा भारी ही रहा।

अब तक वहॉ बहुत सारे लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी और मजिस्ट्रेट को डर था कि वह कहीं अपनी इज़्ज़त न खो बैठे सो वह अपने कीमती हीरे जवाहरात उस तराजू पर रखता ही रहा। उधर सीपी भी मजिस्ट्रेट के पैसे के मुकाबले में भारी ही रही।

जब मजिस्ट्रेट का सारा पैसा खत्म हो गया तो उसने अपनी सरकारी पोशाक और अपना ओहदा उस पलड़े पर रख दिया क्योंकि वह सीपी तो उस पैसे से कहीं ज़्यादा कीमती थी जो वह मजिस्ट्रेट बन कर कमा रहा था।

जैसे ही मजिस्ट्रेट ने अपनी सरकारी पोशाक और टोप उस तराजू पर रखा तो सीपी वाला पलड़ा हवा में ऊपर उठ गया और तराजू के दोनों पलड़े बराबर हो गये।

मजिस्ट्रेट ने माथे का पसीना पोंछते हुए और चैन की सॉस लेते हुए वह सीपी और बॉसुरी तुरन्त ही उठा ली और उस सीपी को जॉचने के लिये तुरन्त घर दौड़ पड़ा।

उसने अपने घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द किये और बॉसुरी बजाना शुरू किया और फिर सीपी से इतना सोना मॉगा जिससे उसका सोने वाला कमरा भर जाये।

जब मजिस्ट्रेट ने वह बॉसुरी बजानी शुरू की तो उसकी बॉसुरी की आवाज़ इतनी ऊॅची थी कि उसके घर के पास से गुजरने वाले भी डर गये।

हालॉकि बॉसुरी की आवाज सुन कर सीपी ने अपना मुॅह नहीं खोला और पड़ोसी भी उस बॉसुरी को बन्द करने के लिये कहने के लिये मजिस्ट्रेट का दरवाजा पीटते रहे पर फिर भी मजिस्ट्रेट निडर हो कर बॉसुरी बजाता ही रहा।

आखिर वह सीपी और देर तक यह सब नहीं सह सकी और फर्श पर कूद कर एक आलमारी में जा कर छिप गयी।

मजिस्ट्रेट की बॉसुरी के चीखते हुए स्वर गॉव भर में गॅूजते ही रहे जब तक कि सीपी दर्द से हवा में उछल कर छत के एक लकड़ी के लट्ठे से टकरा कर टूट नहीं गयी।

सीपी के टूटने पर मजिस्ट्रेट के घर की छत टूटने लगी, उसमें लगे लकड़ी के लट्ठे भी टूटने लगे, उसके घर की दीवारें गिरने लगीं पर मजिस्ट्रेट तो बस वह बॉसुरी बजाता ही रहा और बजाता ही रहा। टूट टूट कर उसका सारा घर उसी के ऊपर आ पड़ा।

जब मकान के गिरने की सारी धूल बैठ गयी तब मजिस्ट्रेट उस मलबे में से बाहर निकला। कई दिनों तक वह उस सीपी को ढूॅढता रहा पर वह उसको कहीं नहीं मिली।

इस बीच आह चिन नया मज्स्ट्रेिट घोषित कर दिया गया और उसने जो अपनी नयी दौलत हासिल की थी उसके सहारे उसने

अपनी सारी ज़िन्दगी अमर लोगों की तरह से जी। जबकि वह पुराना मजिस्ट्रेट एक गरीब की मौत मरा।

29 पगोडा का पेड़[88]

तुंग युंग[89] अपने लॅगड़े पिता के साथ शहर के बाहर एक गॉव में एक मिट्टी की बनी झोंपड़ी में रहता था। जब वह दस साल का था तभी से वह एक मजदूर का काम करता था।

उससे उसे जो आमदनी होती थी वह उसको वैद्यों और सुई लगाने वाले डाक्टरों पर अपने पिता का रोज इलाज करने में खर्च कर देता था।

जब उसका पिता मरा तब तुंग युंग केवल बीस साल का था और उसकी सारी कमाई उसके पिता के इलाज पर खर्च हो चुकी थी। अब उसके पास अपने पिता के दफ़न के लिये भी पैसे नहीं थे।

तुंग युंग ने अपने दोस्तों और पड़ोसियों से कुछ पैसे उधार मॉगे भी पर उन्होंने उसको कोई पैसा देने से मना कर दिया क्योंकि उनको मालूम था कि वह उनका पैसा वापस नहीं कर पायेगा।

अब उसको अपने पिता को तो दफन करना ही था सो उसने अपने आपको बेचने का निश्चय किया। उसने एक अमीर सौदागर लियू[90] को अपने आपको उसके नौकर के रूप में बेच दिया।

[88] The Pagoda Tree – a myth from China, Asia.
[89] Tung Yung – the name of the boy
[90] Liu – the name of the Merchant

लियू ने उसको उसके पिता के दफन के लिये पैसे दिये और इसके बदले में उसने लियू के घर में तीन साल काम करने का वायदा किया।

अपने पिता को दफन करने के बाद उसने अपने पुरखों को भेंट दी। वह जानता था कि वह अब तीन साल तक फिर से अपने पिता की कब्र पर नहीं आ सकेगा और न ही वह अपने पुरखों को भेंट दे सकेगा सो अपने पुरखों को भेंट देने के बाद उसने बड़े भारी दिल से वह कब्रिस्तान छोड़ा।

तुंग युंग के पास जो थोड़ा बहुत सामान था वह उसने एक थैले में भरा और सुबह सवेरे लियू के घर की तरफ चल दिया जो पहाड़ के उस पार था।

दोपहर तक वह उसके घर के आधी दूर तक पहुँच गया था। आराम करने के लिये वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया कि अचानक वहाँ वह एक लड़की आवाज सुन कर चौंक गया।

उस लड़की ने धीमी आवाज में पूछा — "क्या तुम तुंग युंग हो?"

तुंग युंग एक ऐसी मीठी आवाज सुन कर बहुत खुश हुआ हालाँकि उस लड़की को उसने कभी देखा नहीं था।

उसने उससे कहा "हाँ" और फिर उसको अपने पिता के मरने और उस सौदागर से उसके घर में नौकरी करने की पूरी कहानी सुना दी। कहानी सुना कर वह रो पड़ा।

लड़की बोली — "तुम रोओ नहीं, मैं तुम्हारे साथ उस सौदागर के घर चलूँगी और उसका खाना पकाने में, कपड़े धोने में और सफाई करने में तुम्हारी सहायता करूँगी।

काम करते समय अगर मैं तुम्हारे साथ रहूँगी तो तुम्हारा काम आधे समय में ही हो जायेगा और तुम तीन साल से पहले ही वहाँ से अपने घर वापस आ सकोगे।"

पहले तो तुंग युंग इस बात पर राजी होने को हुआ पर फिर उसने सोचा कि इस अजनबी लड़की को उसका नाम मालूम था तो इसका मतलब कहीं ऐसा तो नहीं कि देवता लोग उसके साथ कोई चाल खेल रहे हों।

और अगर यह लड़की आदमी भी है जो उसकी सहायता करने के लिये आयी है तो भी उसको उस सौदागर के घर एक अजनबी लड़की को साथ ले कर नहीं जाना चाहिये।

पर उस लड़की ने जान लिया कि वह क्या सोच रहा था। उसने उसको हाथ पकड़ कर उठाया और बोली — "अगर मैं तुम्हारी पत्नी बनने के लिये राजी हो जाऊँ तो क्या तुम मुझसे शादी करोगे?"

यह सुन कर तो तुंग युंग और भी ज़्यादा आश्चर्यचकित हो गया और कुछ बोल ही नहीं सका। वह कोई बहाना बनाने के लिये इधर उधर देखने लगा फिर बोला — "नहीं नहीं, यह मैं नहीं कर

सकता। यह नहीं हो सकता। हम तब तक शादी नहीं कर सकते जब तक कोई यह न कह दे कि हॉ हम शादी कर सकते हैं।[91]"

पर वह लड़की उसके इस जवाब से बिल्कुल भी परेशान नहीं हुई। वह पास में लगे एक बड़े से पेड़ के पास गयी और उसके तने में एक ठोकर मारी और शान्ति से बोली — "यह पेड़ बतायेगा कि हम शादी कर सकते हैं या नहीं।"

तुंग युंग को अब तक यकीन हो गया था कि या तो वह लड़की पागल है या फिर वह कोई बुरी आत्मा है। पर उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा जब उस पेड़ ने "हॉ" में सिर झुकाने के लिये अपनी डालियॉ झुका दीं।

अब तुंग युंग ने उससे मजाक करने की सोची। वह बोला — "यह क्या अच्छा शादी बताने वाला है जो बोल ही नहीं सकता।"

तभी उसके पीछे से एक भारी सी आवाज आयी — "कौन कहता है कि मैं बोल नहीं सकता? मैं तुम्हारी शादी बताता हूॅ और मैं तुमको हकुम देता हूॅ कि तुम लोग शादी कर लो।"

अब तुंग युंग को विश्वास हो गया कि अच्छी और बुरी दोनों तरह की आत्माऐं उसके ऊपर अपना अपना काम कर रहीं हैं तो उसने उन दोनों तरह की आत्माओं के सामने अपना सिर झुका दिया और उस लड़की से शादी कर ली।

[91] He wanted to consult some matchmaker.

जब वे दोनों लियू के घर पहुँचे तो उन लोगों को उसके बैठने वाले कमरे में ले जाया गया। लियू यह देख कर बहुत गुस्सा हो गया कि अब उसको एक और आदमी को खाना खिलाना पड़ेगा।

पर उस लड़की ने उसको विश्वास दिलाया कि वह सिलाई, कपड़े बुनना और सफाई उस घर के किसी भी नौकर से ज़्यादा अच्छी और जल्दी कर सकती थी इसलिये उसके बारे में उसको ज़्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

उस चालाक सौदागर ने उसकी बात पर सोचा और उसको इस शर्त पर अपने यहाँ रख लिया कि तीन दिन में वह उसको कपड़े के चौबीस टुकड़े बुन कर देगी।

यह सुन कर तुंग युंग ने उस सौदागर से पूछा कि उसकी पत्नी इस शर्त को किस तरह पूरा करेगी क्योंकि यह तो उसने उसके सामने बड़ी कठिन शर्त रख दी थी पर वह लड़की बीच में ही बोली — "तुम चिन्ता न करो कपड़ा बुनना तो मेरे बाँये हाथ का खेल है।"

तीन दिन में उसने वे चौबीस कपड़े बुन दिये और तीन दिन बाद उसने वह कपड़े लियू के सामने ले जा कर रख दिये। जब लियू उन कपड़ों को देख रहा था तो तुंग युंग ने अपनी पत्नी की बहुत तारीफ की।

पिछले तीन दिनों में उसने अपनी पत्नी को कोई धागा बुनते हुए नहीं देखा था फिर भी उसने तीन दिन में वह कपड़े बुन कर तैयार

कर दिये थे। यह उसके लिये तारीफ की बात नहीं थी तो क्या था।

लियू उस लड़की से बोला अब तुम यहाँ रह सकती हो पर मैं तुमको मुफ्त में खाना नहीं खिलाऊँगा जब तक तुम बढ़िया सिल्क के पचास टुकड़े मुझे तीन दिन में बुन कर नहीं दोगी। नहीं तो मैं तुमको घर से बाहर निकाल दूँगा।" यह कह कर वह कमरे से बाहर चला गया।

जब वह कमरे से बाहर चला गया तो तुंग युंग अपने घुटनों पर गिर पड़ा और बोला — "यह सौदागर तुमसे यह उम्मीद कैसे करता है कि तीन दिन में तुम उसके लिये पचास सिल्क के टुकड़े बुन कर दे दोगी? लगता है कि बस अब सब कुछ खत्म हुआ। मुझे मालूम है कि मैं अब तुमको कभी नहीं देख पाऊँगा।"

पर उस लड़की ने एक बार फिर उसको विश्वास दिलाया कि वह समय रहते रहते उसका सब काम खत्म कर देगी और वह इस सबके बारे में बिल्कुल भी चिन्ता न करे।

पर तुंग युंग को उस पर विश्वास ही नहीं था सो अगले दो दिनों में तुंग युंग अपनी पत्नी पर कड़ी निगाह रखे रहा। उसने देखा कि वह लड़की अपना समय बागीचे से फूल चुनने में बिताती रही और एक बार भी कपड़ा बुनने वाले कमरे में नहीं गयी।

यहाँ तक कि वह सौदागर भी यह देख कर आश्चर्यचकित था कि उस लड़की के तरीके से ऐसा लग रहा था जैसे कि उसको

कपड़ा बुनने की कोई चिन्ता ही नहीं थी सो वह उसको घर से बाहर निकालने के बारे में सोचने लगा।

दूसरे दिन की शाम को तो तुंग युंग को इतनी ज़्यादा चिन्ता हो गयी कि वह रात भर सो ही नहीं सका। उसको लगा कि शायद वह रात को कपड़ा बुन रही हो सो उसने बुनाई वाले कमरे में झॉकने की सोचा कि उसकी पत्नी ने बुनाई का काम शुरू किया या नहीं।

वह उस कमरे तक गया और उसने उस कमरे का दरवाजा बहुत ही ज़रा सा खोला और उस रोशनी भरे कमरे में झॉका।

उसने देखा कि एक सफेद सारस[92] ने उसकी पत्नी के हाथों में बुनाई की शटल[93] दी और उसकी पत्नी ने वह शटल एक बुनाई की मशीन में डाल दी।

उस मशीन ने बिना किसी की सहायता के बहुत जल्दी से अपना काम करना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में उस मशीन में से कपड़ा बुन कर बाहर निकल आया।

तुंग युंग ने आश्चर्य से अपनी ऑखें मलीं कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा और फिर जब उसने अपनी आखें खोलीं तो वह तो और भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि वहॉ से वह सारस और उसकी पत्नी दोनों ही गायब हो चुके थे और उस कमरे में ॲधेरा छा गया था।

[92] Translated for the word “Crane”. See its picture above.

[93] Weaving Shuttle

इससे उसको लगा कि वह वाकई सपना ही देख रहा था। तुंग युंग वापस अपने बिस्तर में आ कर लेट गया।

तीसरे दिन सुबह को उस लड़की ने सिल्क के पचास टुकड़े उस सौदागर के सामने रख दिये और बोली — "आपने इतने ही सिल्क के टुकड़े तो माँगे थे न?" इतना कह कर उसने लियू के सामने सिर झुकाया और उस कमरे में से निकल कर बाहर चली गयी।

लियू इन कपड़ों को देख कर इतना चकित हुआ कि सारी सुबह वह उसके गुण गाता रहा।

शाम को उसने उस लड़की को अपने बैठने के कमरे में बुलाया और उससे पूछा — "क्या तुम सिल्क पर कढ़ाई कर सकती हो?"

लड़की ने हॉ में सिर हिलाया।

लियू बोला — "अगर ऐसा है तो मैं चाहता हूँ कि तुम दस दिन में सिल्क के पचास टुकड़े बुन कर और उनको काढ़ कर मुझे दो। अगर तुम ऐसा कर दोगी तो मैं वह सिल्क बेच कर पचास दास खरीद लूँगा और फिर तुम्हें और तुम्हारे पति दोनों को यहाँ काम करने के बदले में आजाद कर दूँगा।

और अगर तुम ऐसा न कर सकीं तो फिर तुम लोगों को यहाँ तीन साल के बदले छह साल तक रहना पड़ेगा।"

इस बार उस सौदागर को यकीन था कि यह काम वह लड़की नहीं कर पायेगी। उसने इस बात को सोच कर ही खुशी से अपनी

दाढ़ी सहलायी कि अगर उस लड़की ने वह काम पूरा नहीं किया तो उसको उन दोनों को छह साल तक नौकर रख कर कितना पैसा मिलने वाला है।

अगले दस दिन तक तुंग युंग न तो दिन में ठीक से खाना ही खा सका और न वह रात को ठीक से सो ही सका। उसने अपनी पत्नी को हर दिन बागीचे में आराम करते देखा और वह बस यही सोचता रहा कि अगर उसकी पत्नी ने लियू का काम नहीं किया तो छह साल में उसके पिता की कब्र पर कितने सारे पेड़ पौधे उग आयेंगे।

हर बार जब भी वह अपनी पत्नी के पास गया तो उसने उसको दूर हटा दिया। नवीं रात को तो तुंग युंग चिन्ता से बिल्कुल पागल सा ही हो गया।

नवीं रात को आधी रात को तुंग युंग अपने कमरे में बचैनी से टहल रहा था कि उसने उस बुनाई के कमरे से कुछ स्त्रियों की आवाजें आती सुनी। वह फिर वहीं देखने के लिये पहुँच गया कि उस कमरे में क्या हो रहा था।

पर इस बार जो कुछ उसने वहाँ देखा उसको देख कर तो वह वहीं का वहीं जम गया। उसकी पत्नी और छह और लड़कियाँ बहुत ही बढ़िया सिल्क के टुकड़े बुन रही थीं और काढ़ रही थी।

तभी सात सफेद सारस उड़ते हुए वहाँ आये और उन सबको एक एक शटल दी और बहुत ही बढ़िया सिल्क का कढ़ाई का धागा दिया और उड़ कर वापस चले गये।

तुंग युंग इस सबको देख कर इतना ज़्यादा चकित हो गया कि वह वहीं बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब वह होश में आया तो उसकी पत्नी उसके सिर पर पानी डाल रही थी और उसको होश में लाने की कोशिश कर रही थी।

बाद में वह बोली — "मुझे तुम्हें इस तरह चौंकाने को लिये बहुत अफसोस है पर वे मेरी छह बड़ी बहिनें थीं जो कपड़ा बुनने में मेरी सहायता करने आयीं थीं। पर अब सब खत्म हो गया है और अब हम लोग यहाँ से जाने के लिये आजाद हैं।"

उन कपड़ों को देखने का जो समय निश्चित हुआ था, यानी कि दसवें दिन, उस दिन उस लड़की ने वे पचास सिल्क के कढ़े हुए कपड़े सौदागर लियू के सामने फैला दिये।

उन कपड़ों पर कई जानवर और चिड़ियें बनी हुई थीं। उन पर ड्रैगन[94] बने हुए थे।

[94] A dragon is a legendary creature, typically with serpentine or reptilian traits, that features in the myths of many cultures. There are two distinct cultural traditions of dragons: the European dragon, derived from European folk traditions and ultimately related to Greek and Middle Eastern mythologies, and the Chinese dragon, with counterparts in Japan, namely the Japanese dragon, Korea and other East Asian countries. See the picture of Chinese Dragon above

उन कपड़ों पर बतखें और फीनिक्स[95] बने हुए थे। उन सबको देख कर लियू के मुँह से तो आवाज ही नहीं निकली।

उसको अब पूरा विश्वास हो गया था कि वह इस लड़की के ऊपर या उसके पति के ऊपर न तो अपनी कोई ताकत आजमा सकता था और न ही उनको हरा सकता था सो उसने उन दोनों को वहाँ से भगा दिया।

तुंग युंग और उसकी पत्नी उसी शाम को वहाँ से पहाड़ों के ऊपर होते हुए अपने घर वापस चल दिये। लड़की ने तुंग युंग से कहा कि उनको उस पेड़ के पास रुक कर जाना चाहिये जहाँ वे पहली बार मिले थे।

वे उस पेड़ के पास रुके तो तुंग युंग जा कर उस पेड़ से खुशी से लिपट गया पर वह पेड़ तो कुछ बोला ही नहीं और जब वह यह कहने के लिये अपनी पत्नी की तरफ मुड़ा कि वह पेड़ तो बोल ही नहीं रहा तो उसने देखा कि वह लड़की अपना भूसे का बना थैला खोल रही थी।

उस लड़की ने उस थैले में से उसको दस बढ़िया सिल्क के कपड़े निकाल कर दिये और बोली — "मैं अब जा रही हूँ। यह

[95] A phoenix or phenix is a long-lived bird that is cyclically regenerated or reborn. Associated with the Sun, a phoenix obtains new life by arising from the ashes of its predecessor. See its picture above.

भेंट मैं तुमको अपने से अलग होने पर दे रही हूँ। मैं अमर हूँ। मैंने यह आदमी का रूप तुम्हारी सहायता करने के लिये लिया था।

पर क्योंकि जेड बादशाह[96] ने हमारी शादी के बारे में सुन लिया है इसलिये अब मैं यहाँ नहीं रह सकती। मुझे स्वर्ग वापस जाना ही पड़ेगा।

तुम यह सिल्क ले जाओ इसको बाजार में बेच देना और उससे मिले पैसे को ठीक से खर्च करना तो तुम बहुत अमीर हो जाओगे। अब तुम जाओ। मैं हमेशा ही तुम्हारी देखभाल करती रहूँगी।"

तुंग युंग ने उसको विदा करते समय चूमना चाहा पर इससे पहले कि वह उसको छूता भी वह आसमान की तरफ उड़ चली। उसने ऊपर की तरफ देखा तो उसने उसको सात सफेद सारसों के साथ स्वर्ग की तरफ जाते देखा।

[96] Jade Emperor – the God of the Sky

30 केंचुए की ऑखें क्यों नहीं होतीं[97]

बच्चों तुमने केंचुए[98] तो देखे ही होंगे। बरसात में बहुत निकलते हैं। पर क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि उनके ऑखें नहीं होतीं?

चीन के लोग जानते हैं कि ऐसा क्यों है। तो लो पढ़ो यह कहानी जो हमने चीन की दंत कथाओं से ली है कि केंचुए के ऑखें क्यों नहीं हैं।

ऐसा नहीं है कि केंचुए की ऑखें पहले से ही नहीं थी। पहले उसके ऑखें थीं और वह देख सकता था। वह तैर भी सकता था और ज़मीन पर बहुत तेज़ी से चल भी सकता था। पर अब ऐसा नहीं है।

केंचुए का सबसे अच्छा दोस्त प्रौन मछली था और हालॉकि प्रौन मछली के ऑखें नहीं थीं फिर भी केंचुआ उसको तैरने में और जमीन पर चलने दोनों में सहायता करता था।

केंचुए को तैरने में बहुत मजा आता था पर जब भी वह पानी में जाता तो जनरल केंकड़ा[99] उसकी बहुत बेइज़्ज़ती करता और उसको बहुत मारता।

---

[97] Why an Earthworm Does Not Have Eyes – a legend from China, Asia.
[98] Translated for the word "Earthworm". See its picture above.
[99] General Crab. See its picture above

एक दिन जनरल केंकड़े ने उसको डुबोने की कोशिश की पर किसी तरह वह उससे बच कर अपने बिल में भाग गया। पर इस बात से वह बहुत घबरा गया और वहाँ बैठा बैठा वह बहुत देर तक रोता रहा।

जब प्रौन मछली को इस बात का पता चला कि उसका दोस्त रो रहा है तो उसे बहुत दुख हुआ और उसने उससे पूछा कि वह इतना दुखी क्यों था और वह उसकी किस तरह सहायता कर सकता था।

केंचुआ दुखी हो कर बोला — "एक दिन यह जनरल केंकड़ा तो मुझे मार कर ही दम लेगा क्योंकि मैं अपनी रक्षा करने के लिये बहुत कमजोर और मुलायम हूँ।"

"किसने कहा कि तुम कमजोर हो और मुलायम हो? तुम तो बहुत मजबूत हो। तुम्हारे पास तो एक बहुत ही मजबूत हैल्मैट[100] भी है और अपने आपको सुरक्षित रखने के लिये एक कोट भी है।"

केंचुआ आगे बोला — "मैं तुमको अपनी ऑखें उधार दे सकता हूँ अगर तुम जनरल केंकड़े से मुझे बदला लेने में मेरी सहायता करो तो। पर क्या तुम जब अपना काम खत्म कर लोगे तो मुझे मेरी ऑखें वापस कर दोगे?"

प्रौन मछली ने अपने दोस्त की सहायता करने का वायदा किया और उसको चीखते हुए सुना जब वह केंचुआ अपनी ऑखें निकाल

[100] Helmet – a strong cap to be worn on head to save one's head in fall or hurt. See its picture above.

रहा था। केंचुए ने अपनी आँखें निकाल कर प्रौन की नाक के दोनों तरफ लगा दीं।

अब क्या था अब तो प्रौन मछली देख सकता था सो उसने हिम्मत बटोरी और जनरल केंकड़े से बदला लेने चल दिया।

वह जनरल केंकड़े को पुकारता हुआ पानी के किनारे तक तैर गया। पर जब वह केंकड़ा उसको दिखायी दिया तो वह उस खतरनाक अजीब से दिखायी देखने वाले जानवर से डर कर वहाँ से भाग कर पानी के नीचे चट्टानों के पीछे छिप गया।

जब सारा किनारा साफ हो गया तब वह प्रौन मछली उन चट्टानों के पीछे से बाहर निकला। उसको अपनी नयी आँखें इतनी ज़्यादा अच्छी लग रही थीं कि उसने उन आँखों को अपने दोस्त केंचुए को वापस न देने का निश्चय किया और उस दिन से वे उसी के पास हैं।

केंचुआ जिसके पास पहले आँखें थीं अब वह बेचारा अन्धा हो गया था और प्रौन मछली जो पहले अन्धा था अब उसके पास आँखें हो गयी थीं।

हालाँकि प्रौन के पास टाँगें थीं फिर भी अब वह सूखी जमीन पर चलने की हिम्मत नहीं करता था क्योंकि क्या पता कब उसको केंचुआ इधर उधर घूमता मिल जाये और वह उससे अपनी आँखें वापस माँग ले।

इस बीच केंचुआ अभी भी अपने दोस्त प्रौन के लौटने का इन्तजार कर रहा है। हालाँकि अब उसके पास आँखें नहीं हैं पर वह अभी भी तैर सकता है। पर वह बहुत दूर तक जाने में डरता है कि कहीं जनरल केंकड़ा उसको मार न दे।

इस तरह से केंचुए ने अपनी आँखें खोयीं और प्रौन मछली को आँखें मिल गयीं। बेचारा केंचुआ।

31 मिन नदी[101]

यह दो हजार साल से भी पहले की बात है कि एक बुरे स्वभाव वाले नदी के देवता ने मिन नदी[102] को अपना घर बना लिया।

जब भी किसी से उसका झगड़ा हो जाता तो वह कहीं बाढ़ ला देता और कभी आस पास के घर गिरा देता और वह अगर किसी से खास कर के गुस्सा होता तो वह नदी के आस पास घूमने वाले आदमियों को भी मार देता।

इसलिये वहाँ रहने वालों ने उस नदी के देवता को खुश करने के लिये जानवरों की भेंट देना शुरू कर दिया था। वे उसको हर हफ्ते एक गाय और एक भेड़ देते थे जिससे वह काफी दिनों तक खुश रहा।

पर एक दिन वह पानी से बाहर निकला और एक भारी गरज के साथ गाँव वालों से बोला कि वे उसको कहीं से एक सुन्दर लड़की ला कर दें। वह शादी करना चाहता था।

उन्होंने वहाँ एक सबसे सुन्दर लड़की को ढूँढा और बहुत सारे दहेज के साथ उसको नदी के देवता के पास भेज दिया। नदी के देवता ने उनकी वह भेंट स्वीकार कर ली और कहा कि वह अब शान्त रहेगा।

---

[101] The Min River – a myth from China, Asia.

[102] Min River in China

पर दो साल बाद उसको फिर गुस्सा आ गया और उसने बाढ़ ला कर गॉव वालों की फसल बरबाद कर दी।

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद वहॉ गॉव का एक नया मुखिया[103] ली पिंग[104] आया। एक दो दिनों के अन्दर ही उसके पास नदी के देवता के बारे में पचासों शिकायतें आ गयीं।

उसको यह जान कर बहुत ही धक्का लगा कि गॉव वाले बेचारे उस बुरे स्वभाव वाले नदी के देवता से कितना डर कर रह रहे थे।

अगली सुबह ली पिंग ने अपनी कमर की जेड[105] की बनी सरकारी पेटी बॉधी और नदी के देवता से समझौता करने के लिये नदी की तरफ चल दिया। गॉव के लोग भी उत्सुकतावश उसके पीछे पीछे नदी तक गये। वे सब उसके पीछे सॉस रोक कर खड़े रहे।

ली पिंग के हाथ में शराब का एक प्याला था और वह नदी के देवता के मन्दिर में बिल्कुल निडर हो कर खड़ा था। उसने नदी के देवता की तरफ शराब का प्याला बढ़ाया और उसको अपने बारे में बताया।

जैसे ही ली पिंग ने वह शराब का प्याला नदी के देवता के होठों से लगाया तो मन्दिर में हल्की सी हवा चली और सारे गॉव

[103] Translated for the word "Prefect"

[104] Li Ping – the name of the Chief of the village

[105] Jade is a semi-precious gemstone and is found in many colors, but it is more common color is green which is shown here above. It is commonly found in East Asian countries. See its picture above.

वाले डर के मारे पीछे हट गये। वे समझ गये थे कि नदी का देवता वहाँ आ रहा था।

हवा की तेज़ी बढ़ी और पानी चढ़ना शुरू हुआ। आसमान काला होने लगा और मोमबत्तियाँ और अगरबत्तियाँ[106] बुझने लगीं। गाँव वाले मन्दिर के खम्भों के पीछे छिपने लगे। उस समय गाँव के मुखिया की बस जेड की कमर की पेटी ही चमक रही थी।

अचानक हवा बन्द हो गयी, सूरज आसमान में दिखायी देने लगा और नदी का पानी भी शान्त हो गया। गाँव का मुखिया अभी भी मन्दिर में निडर हो कर खड़ा था।

भीड़ ने ऐसे आदमी की तारीफ में उसका जयजयकार किया जिसके अन्दर इतनी हिम्मत थी जो नदी के देवता के सामने निडर हो कर खड़ा हो सकता था।

केवल गाँव के मुखिया ने ही महसूस किया कि नदी का देवता उसके साथ था क्योंकि वह देख रहा था कि उसके शरब के प्याले में से शराब कम होती जा रही थी। इसका मतलब था कि वह शराब पी रहा था।

ली पिंग ने सब गाँव वालों को ढाँढस बँधाया और नदी के देवता से बोला — "ओ मिन नदी के देवता, मैं गाँव के लोगों को आपके साथ बात कराने के लिये ले कर आया हूँ। उनको आपका यह भरोसा चाहिये कि आप उनका भरोसा नहीं तोड़ेंगे।

[106] Translated for the words "Jos Sticks". They are the incense sticks used by Chinese.

मुझे पूरा यकीन है कि आपके पास बहुत ताकत और अक्लमन्दी है जिससे आप यह समझ सकते हैं कि जब आप बाढ़ ले कर आते हैं तो इन लोगों को कितनी तकलीफ होती है।"

जब ली पिंग ने अपना कहना खत्म किया तो किसी अनदेखी ताकत ने उसके हाथ से शराब का प्याला ले लिया और उसको जमीन पर फेंक दिया। शराब का वह प्याला पत्थर के फर्श से टकरा कर चूर चूर हो गया और गाँव का मुखिया वहाँ से गायब हो गया।

गाँव के लोगों की खड़ी भीड़ में हलचल मच गयी और सब लोग वहाँ से इस मन्दिर के तंग दरवाजे में से बच कर भागने की कोशिश करने लगे।

पर जैसे ही वे अपने गाँव की तरफ जाने वाले नदी के साथ वाले रास्ते पर जाने लगे तो उनको दो हरे रंग के राइनोसिरोस[107] नदी के किनारे लड़ते हुए दिखायी दिये।

उन दोनों के सींग एक दूसरे के सीगों में उलझे हुए थे और कोई किसी से हार मानने के लिये तैयार नहीं था। वह घास की जगह जहाँ वे लड़ रहे थे उनके पैरों तले कीचड़ बन गयी थी। वे एक दूसरे को कभी एक तरफ खींचते तो कभी दूसरी तरफ।

[107] Rhinoceros: a very large animal. See its picture above.

उन दोनों राइनोसिरोस में से एक राइनोसिरोस ने किसी तरह से अपने सींग दूसरे राइनोसिरोस के सींगों से छुड़ा लिये और नदी में भाग गया। दूसरा उसके पीछे भागा। दोनों ही नदी के पानी में नीचे जा कर गायब हो गये और नदी शान्त हो गयी।

गॉव के लोग तो इतने डरे हुए थे कि वे नदी के पानी में उन दोनों को देखने की भी हिम्मत नहीं कर सकते थे सो वे अपने रास्ते चलते रहे।

जैसे ही वे अपने गॉव के पास आये ली पिंग पानी में भीगा हुआ वहॉ भागा भागा आया और बोला — "मुझे आप सबकी सहायता चाहिये। नदी का देवता तो बहुत ताकतवर है और अपनी इच्छा से कोई भी रूप ले सकता है। मेरी ताकत तो उसकी ताकत के सामने बहुत कम है।

तुम लोगों ने अभी हम लोगों को लड़ते देखा है। अगर वह मुझ पर फिर से हमला करने आ जाये तो तुम लोग उसको जरूर मार देना। पर ध्यान रखना कि गलती से भी तुम मुझे मत मार देना क्योंकि हम दोनों की शक्ल बिल्कुल एक सी होगी।

अगर तुम लोग ध्यान से देखोगे तो तुम देखोगे कि मैंने अपने पिछले दाहिने पैर में सफेद जेड की पेटी पहन रखी होगी।"

ली पिंग अभी अपनी बात पूरी कर के ही चुका था कि एक राइनोसिरोस पानी में से बाहर निकला और गुस्से में भरा हुआ भीड़ की तरफ दौड़ा।

ली पिंग ने भी तुरन्त ही अपनी शक्ल बदली जबकि गॉव वालों ने अपने अपने तीर कमान उठाये और दोनों ताकतवर जानवर एक बार फिर आपस में भिड़ गये। उन दोनों के शरीर आपस में इतने ज़्यादा उलझे हुए थे कि यह पता लगाना मुश्किल था कौन सा राइनोसिरोस कौन सा था।

जल्दी ही उन दोनों में से एक राइनोसिरोस कमजोर पड़ने लगा तो गॉव वालों ने नदी के देवता को पहचान लिया। उन्होंने सबने मिल कर एक साथ कई तीर छोड़ कर उसकी मोटी खाल को छलनी कर दिया।

तीर खा कर देवता अपनी पुरानी शक्ल में आ गया और नदी की तरफ भागने लगा पर किनारे तक पहुँचते पहुँचते ही मर गया।

उस दिन से मिन नदी के पानी में कभी बाढ़ नहीं आती और जहाँ वह गॉव का मुखिया और नदी का देवता लड़े थे वह जगह आज भी "लड़ते हुए राइनोसिरोस की छत"[108] कहलाती है।

[108] Fighting Rhinoceros Terrace

32 तिंग लिंग देवी[109]

सत्रह सौ साल पहले "तीन राज्य" के समय में[110] चीन के किऑग्सु प्रान्त के हाई लिंग शहर में[111] एक पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था।

वे बहुत साल से बच्चे की कोशिश में थे पर फिर भी उनके कोई बच्चा ही नहीं हुआ सो उन्होंने अब बच्चे की उम्मीद ही छोड़ दी थी कि तभी पत्नी को बच्चे की आशा हो आयी और समय आने पर उसने एक सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया।

उन्होंने उसको स्वर्ग की एक भेंट माना और उसको "कीमती मोती" नाम दे दिया।

गॉव के लोगों ने बच्ची के बारे में उनकी खुशकिस्मती की बात की कि वे लोग उस बच्ची को पा कर कितने खुशकिस्मत थे क्योंकि वह एक ऐसी लड़की थी जो गॉव के दूसरों बच्चों से भी ज़्यादा अक्लमन्द, मेहरबान और दयावान थी।

जैसे जैसे वह लड़की बड़ी होती गयी तो शादी कराने वाले शादी के लिये रिश्ते ले कर उसके घर अक्सर आते रहते थे पर वह लड़की हर रिश्ते को यह कह कर मना कर देती कि उसके माता पिता बूढ़े हैं और उनको उसकी सहायता चाहिये।

---

[109] Ting Ling Goddess – a myth from China, Asia.

[110] At the time of "Three States" – Wei, Shu and Wu, preceding the Jin Dynasty – 220-280 AD.

[111] In the town of Hai Ling in Kiangsu Province

एक जाड़े के मौसम में जबकि बहुत तेज़ जाड़ा पड़ रहा था तो उसके माता पिता को निमोनिया हो गया। और जैसे जैसे ठंड बढ़ती गयी उन दोनों की हालत और खराब होती गयी।

उस लड़की को लग रहा था कि वे अब बचने वाले नहीं थे कि उन्हीं दिनों एक ताओ पुजारी लियू कॉग[112] उस शहर से गुज़रा। वह उस लड़की के घर पर कुछ खाना पानी मॉगने के लिये रुका था।

जब लड़की उसके लिये कुँए से पानी खींच रही थी और उसके लिये चावल बना रही थी तो वह पुजारी उसको ध्यान से देखता रहा। उसने देखा कि वह उसकी शिष्या बनने के लायक थी।

जब उस पुजारी ने अपना खाना खत्म कर लिया तो उसने उस लड़की से पूछा — "क्या तुम मेरी शिष्या बनोगी?"

वह लड़की तैयार हो गयी। सो उसने उसको अपनी शिष्या बना लिया। वह लड़की तो उसकी बहुत ही अच्छी और मेहनती शिष्या साबित हुई। उसने ताओ जादू इतनी जल्दी से सीख लिया कि उसका गुरू भी उसकी सीखने की तेज़ी देख कर आश्चर्यचकित रह गया।

एक हफ्ते के अन्दर अन्दर वह ताओ धर्म में स्वीकार कर ली गयी। जैसे जैसे इस धर्म में उसकी होशियारी बढ़ती गयी उसके माता पिता की हालत भी अच्छी होती गयी। एक महीने के अन्दर अन्दर उसके माता पिता बिल्कुल ठीक हो गये।

[112] Taoist Priest Liu Kang

तब तक वह भी ताओ रस्मों में इतनी होशियार हो गयी थी कि वह अब दूसरों की सहायता करने लायक हो गयी थी।

अगले दो सालों में लियू कॉग ने उसको वह सब कुछ सिखा दिया जो उसको आता था और फिर उसने उसको दुनियॉ में उस जादू को अक्लमन्दी के साथ इस्तेमाल करने के लिये छोड़ दिया। पर उसको दुनियॉ में भेजने से पहले उसने उसको तिंग लिंग देवी का नाम दे दिया।

ताओ पुजारी के जाने के एक महीने बाद एक गरीब आदमी आह तू[113] उस गॉव से गुज़रा तो इत्तफाक से वह हाई लिंग के मकान के पास ही ठहरा और उसके घर पर खाना मॉगने के लिये गया।

आह तू एक पढ़ा लिखा तरीके वाला आदमी था। उसने उस लड़की को बताया कि एक साल पहले उसको डाकुओं ने लूट लिया था। इसकी वजह से उसको खाने की और रहने की जगह की भीख मॉगने पर मजबूर होना पड़ा।

तिंग लिंग के माता पिता भी बहुत दयावान थे सो उन्होंने उसको अपने घर में ठहरा लिया। वह आदमी उनको बहुत पसन्द आया तो जल्दी ही उन्होंने एक शादी कराने वाले[114] को बुलाया ताकि वे अपनी तिंग लिंग और आह तू की शादी करा सकें।

[113] Ah Tu – the name of the Chinese man

[114] Translated for the word "Matchmaker"

तिंग लिंग की शादी करने की मर्जी तो नहीं थी पर वह अपने माता पिता की खुशी के लिये इस शर्त पर शादी करने के लिये राजी हो गयी कि वह शादी के बाद भी अपने जादू का अभ्यास करती रहेगी।

तिंग लिंग अपनी इच्छा से गायब और प्रगट हो सकती थी। दिन में कम से कम दो बार तो वह अपने जादू के अभ्यास के लिये ऐसा करती ही थी।

वह कभी भी गायब हो जाती और फिर कभी भी प्रगट हो जाती। आह तू हमेशा ही उससे पूछता कि वह कहॉ थी और क्या कर रही थी पर वह हमेशा ही उसको यह बताने से मना कर देती कि वह कहॉ थी और क्या कर रही थी।

जब तिंग लिंग घर पर होती तो उसका घर बहुत सारे लोगों से भरा रहता जो उसके पास सहायता के लिये आते थे। जैसे जैसे समय गुजरता गया आह तू अपनी पत्नी की लोकप्रियता से जलने लगा।

इस जलन की वजह से अक्सर वह आने वालों से यह कह देता कि उसकी पत्नी के पास उनसे मिलने का समय नहीं था पर तिंग लिंग के पास इतनी ताकत थी कि वह यह सब दूर से भी देख सुन सकती थी सो जैसे ही उसका पति उन आने वालों से यह कहता कि वह वहॉ नहीं थी तो वह वहॉ प्रगट हो जाती।

आह तू अपनी पत्नी के इस बर्ताव से इतना ज़्यादा परेशान हो गया कि उसने उसको सोने के कमरे में बन्द कर दिया और कह दिया कि उससे कोई नहीं मिल सकता।

पर जैसे ही उसने तिंग लिंग को कमरे में बन्द किया वह अपने जादू से उस कमरे की दीवार में से निकल गयी और शहर में घूमने लगी।

जब आह तू ने देखा कि वह अब अपनी पत्नी को काबू में नहीं रख सकता तो उसने उसको पीटना शुरू कर दिया और वह उसको यहाँ तक पीटता कि उसका सारा शरीर घायल हो जाता।

वह बेचारी अपने उन जख्मों को अपने ताओ जादू से भी नहीं छिपा पाती सो शहर के लोग जब उसके जख्मों के देखते तो उसके पति को बुरा भला कहते।

शादी के दो साल बाद आह तू जिला जज के पास गया और अपनी पत्नी के ऊपर बुरा जादू करने का इलजाम लगाया और उससे कहा कि उसकी पत्नी की ताओ की होशियारियाँ ही उसके बुरा जादू करने का सबूत है। यह सब सुन कर मजिस्ट्रेट के पास उसको गिरफ्तार करने के सिवा और कोई चारा नहीं था।

तिंग लिंग अपनी सच्चाई के सबूत में कुछ नहीं कह सकी क्योंकि उसका कोई भी जादू उसका बुरा जादू बता दिया जाता सो वह वहीं जेल में रह कर कई दिन तक ध्यान करती रही।

दूसरी तरफ उसके माता पिता अपनी बेटी के दुख में फिर बीमार पड़ गये। उन्होंने उस दिन को कोसा जिस दिन उन्होंने आह तू के लिये अपने घर का दरवाजा खोला था।

उस प्रान्त के लोग तो तिंग लिंग से नाराज रहने लगे पर हाई लिंग में रह रहे उसके दोस्त और पड़ोसी अभी भी उसको प्यार करते थे।

उधर आह तू ने तिंग लिंग के माता पिता को खाना खिलाने से मना कर दिया। उसने परिवार का पैसा उस शहर से गुजरने वाले दूसरे भिखारियों और अजनबियों के साथ जुआ खेलने में और शराब पीने में खर्च करना शुरू कर दिया।

अब वह केवल ॲधेरे में ही और अपने आपको ढक कर ही घर से बाहर निकल पाता था क्योंकि लोग जब भी उसको देखते तो उसके ऊपर थूकते और पत्थर फेंकते।

जब घर का सारा पैसा खत्म हो गया तो आह तू अपने सास और ससुर को वहीं घर में अकेला छोड़ कर घर से चला गया। उसने मन ही मन यह भी निश्चय कर लिया कि वह अब कभी भी हाई लिंग नहीं लौटेगा।

इस बीच जेल में तिंग लिंग के चौकीदारों को यह हुक्म मिला कि वे तिंग लिंग को खाना न दें। हो सकता है कि शायद इसी तरीके से उसकी बुरी आत्मा उसके शरीर से निकल जाये।

इस हालत में अब वह पूरी तरीके से जेल में अपने दोस्तों के चोरी से लाये गये खाने पर ही निर्भर करती थी।

एक बार उसको अपने चावलों में एक परचा छिपा हुआ मिला जिससे उसे पता चला कि उसका पति उसका घर छोड़ कर चला गया और उसके माता पिता की हालत बहुत खराब है।

उसी समय से उसने अपना शरीर छोड़ देने का पर अपनी आत्मा को रखने का निश्चय किया। उसने खाना छोड़ दिया। रोज वह एक जादू[115] में चली जाती। उस समय में उसके चौकीदार कुछ भी कहते या करते किसी का कोई भी काम उसको उस जादू से नहीं जगा सकता था।

एक सुबह जेल के चौकीदार पानी का एक लोटा ले कर उसकी कोठरी में घुसे तो उन्होंने देखा कि तिंग लिंग तो वहाँ थी ही नहीं।

उन्होंने उस कोठरी की खिड़की से आती केवल हवा की आवाज सुनी। उन्होंने उधर देखा तो वहाँ उनको एक हरी चिड़िया उस खिड़की में लगी लोहे की सलाखों से बाहर जाती दिखायी दी।

तिंग लिंग ने अपन शरीर हमेशा के लिये छोड दिया था पर उस की आत्मा अमर थी[116]। उसके शरीर छोड़ने के कुछ ही दिन बाद उसके माता पिता की भी मृत्यु हो गयी। पड़ोसियों ने बताया कि

[115] Translated for the word “Trance”

[116] This concept is similar to Indian philosophy that our physical body is destroyed but our soul is immortal.

उन्होंने एक हरे रंग की चिड़िया उसके घर के ऊपर उड़ती देखी थी।

उसके बाद के दिनों जब भी कोई अपनी बीमारी से ठीक होता या फिर कोई जुर्म करने वाला पकडा जाता तो बहुत सारे लोगों का कहना था कि वे एक हरे रंग की चिड़िया को उसके आस पास में उड़ते देखते।

धीरे धीरे लोगों को यह लगने लगा कि तिंग लिंग अभी भी उनके साथ थी और आगे भी उनके साथ ही रहेगी।

उसकी याद में उन्होंने हाई लिंग के बाहर एक पहाड़ के पास एक मन्दिर बनवाया जिसकी एक दीवार में उस हरे रंग की चिड़िया ने अपना घोंसला बना लिया था।

तिंग लिंग रोज रात को उसी घोंसले में आ कर सोती पर जब भी कभी कहीं उसकी जरूरत होती तो वह बड़ी तेज़ी से प्रान्त भर में वहीं पहुँच जाती। लोगों ने उसको सैंकड़ों जगह एक साथ देखा।

अब लोग कोई जुर्म करने की हिम्मत नहीं कर सकते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि अगर वे ऐसा करेंगे तो वह हरी चिड़िया उनके ऊपर वहीं कहीं उड़ रही होगी। और इसी लिये उन तीन राज्यों के समय में रहने के लिये किऑग्सू प्रान्त सबसे ज़्यादा सुरक्षित जगह बन गया था।

33 छोटा लोमड़ा और अनार राजा[117]

मू ताई[118] एक बहुत ही गरीब आदमी था जो सीन चिऑग शहर[119] के बाहर की तरफ रहता था। वहॉ मू ताई के घर की छोटी सी जमीन पर उसके घर के अलावा केवल एक अनार का पेड़ था। उस अनार के पेड़ पर बहुत रसीले अनार के फल लगते थे।

मू ताई अपने अनार के पेड़ को बहुत प्यार करता था। वह उस से ऐसे बात करता था जैसे कि वह उसका बच्चा हो। जब वह देर से फूलता था तो उसको डॉटता था और जब उसके ऊपर फल आते थे तब उसकी बहुत तारीफ करता था।

मू ताई अपने अनार के पेड़ के अनार रोज गिनता था। एक पतझड़ में उसने देखा कि उसके दो अनार रोज कम हो रहे हैं। सो उसने सोचा कि वह रात को सारी रात जागेगा ताकि वह यह पता लगा सके कि उसके ये दो अनार कौन चुरा कर ले जाता है।

एक रात जब चॉद पूरा था तो उसने एक लोमड़े को देखा जो उसके अनार के पेड़ में कुछ गड़बड़ कर रहा था। सो अगली शाम उसने उस पेड़ के चारों तरफ बिना रंग के गोंद का एक गोला बना दिया और सोने चला गया।

---

[117] The Little Fox and the Pomegranate King – a legend from China, Asia.

[118] Mu Tai – a Chinese name for a man

[119] Hsin Chiang town of China

सुबह को जब वह अपने अनार के पेड़ के पास आया तो उसने देखा कि एक छोटा सा लोमड़ा उस गोंद में चिपका हुआ है और दर्द से चिल्ला रहा है। वह अपने पंजों को उस गोंद में से छुड़ाने की पूरी कोशिश कर रहा है पर वह उनको छुड़ा नहीं पा रहा है।

मू ताई ने उसको उसके कानों से पकड़ लिया और उसको मारने की धमकी दी पर वह लोमड़ा चालाक था उसने मू ताई से एक सौदा किया जिसे मू ताई मना नहीं कर सका।

लोमड़ा बड़े विश्वास के साथ बोला — "अगर तुम मुझे आजाद कर दोगे तो मैं तुम्हारी शादी के लिये एक राजकुमारी ढूँढ दूँगा।"

पर मू ताई ने उसको हिलाते हुए कहा — "मुझे विश्वास नहीं होता।"

लोमड़ा बोला — "मेरा विश्वास करो। मै तुमसे वायदा करता हूँ कि इस महीने के आखीर तक तुम एक बादशाह के दामाद[120] बन जाओगे।"

मू ताई लोमड़े के इस वायदे के लालच में आ गया और उसने लोमड़े को उस गोंद की पकड़ से आजाद कर दिया और उसको उसका वायदा पूरा करने के लिये एक हफ्ते का समय और ज़्यादा दे दिया।

लोमड़ा यह सुन कर अपना वायदा पूरा करने के लिये प्लान बनाने के लिये अपने घर भाग गया।

[120] Son-in-law – husband of the daughter

कई दिन बाद लोमड़े ने बादशाह के चौकीदार की पोशाक चुरा ली। उसने उसको पहना, अपनी पूँछ सॅवारी और पड़ोस के राज्य के एक बूढ़े राजा से मिलने चल दिया।

किसी तरह से पीछे पड़ कर उसने वहॉ के बादशाह के चौकीदारों से बादशाह से मिलने की इजाज़त ले ली।

बादशाह के सामने जा कर उसने अपने आपको बादशाह मू ताई का सलाहकार और उसके चौकीदारों का सरदार बताया।

उसने उस बादशाह को यह भी बताया कि कैसे उसने मू ताई के बागीचे की मिट्टी में हजारों मोती लाल हीरे देखे हैं और अब वह पड़ोस के राज्य से एक छलनी मॉगने आया है ताकि वह उनको छान कर उस मिट्टी में से निकाल सके।

वह बूढ़ा बादशाह उस लोमड़े की यह बात सुन कर बहुत प्रभावित हुआ। उसने ओक की लकड़ी की बनी एक बड़ी सी छलनी उसको दे दी।

उसी रात लोमड़ा उस बादशाह के महल में घुस गया और उसके खजाने से मुट्ठी भर मोती चुरा लाया। दो दिन बाद वह फिर उसी बादशाह के महल लौटा और वह छलनी बादशाह के पैरों के पास रख दी। ऐसा करते समय उसने जान बूझ कर आठ मोती उसी छलनी में छोड़ दिये।

जब महल के नौकरों ने उस छलनी को बादशाह के हाथों में दिया तो वे मोती बादशाह की गोद में जा कर गिर गये। बादशाह उन मोतियों की सुन्दरता देख कर बहुत प्रभावित हुआ।

लोमड़े ने उन मोतियों को बादशाह को भेंट में दे दिया और बोला — "मेरे पास तो ऐसे और भी बहुत सारे मोती हैं पर वे मोती तो उन मोतियों के सामने कुछ भी नहीं जो मैंने अभी देखे ही नहीं हैं।"

बादशाह उस लोमड़े के शब्दों पर कुछ देर तक विचार करता रहा फिर अपने पास खड़े अपने दरबार के एक मन्त्री के कान में कुछ फुसफुसाया।

फिर वह बादशाह अपने सिंहासन से नीचे उतर कर आया और लोमड़े को एक तरफ ले जा कर बोला — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और मैं अपनी बेटी की शादी के बारे में बहुत चिन्तित हूँ। क्या तुम मेरी बेटी और अपने बादशाह के बीच में शादी कराने वाले[121] बन कर उनकी शादी कराओगे?"

लोमड़ा बोला यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी। फिर उसने बादशाह को विश्वास दिलाया कि बादशाह मू ताई से उसकी बेटी की शादी उसकी बेटी के लिये बहुत ही बढ़िया रिश्ता रहेगा।

उसने बादशाह से यह भी वायदा किया कि वह अगले हफ्ते शादी की तैयारी के साथ लौट कर आयेगा। फिर उसने बहुत नीचे

[121] Translated for the word "Matchmaker"

झुक कर और अपनी पूँछ से बादशाह के सामने की जमीन साफ कर के उसको विदा कहा और वहाँ से चल दिया।

जब लोमड़े ने यह सब मू ताई को बताया तो वह बहुत खुश भी हुआ और थोड़ा दुखी भी हुआ।

वह खुश इसलिये हुआ कि उसकी शादी एक राजकुमारी से होने जा रही थी और दुखी इसलिये था कि उसके पास न तो राजकुमारी को देने के लिये कुछ था और न उसके पास शादी के समय पहनने के लिये ही कोई सूट और कोई अच्छा जूता था।

लोमड़े ने उसको विश्वास दिलाया कि वह घबराये नहीं सब ठीक हो जायेगा। बस वह अगले हफ्ते पड़ोस के राज्य को चलने के लिये तैयार हो जाये।

अगले हफ्ते लोमड़ा एक कम्बल ले कर मू ताई के घर आया और उस घबराये हुए दुलहे को उस बूढ़े बादशाह के महल ले गया। महल के दरवाजे पर पहुँचने से ठीक पहले लोमड़े ने मू ताई को एक झील में कूद जाने को कहा।

मू ताई ने वैसा ही किया जैसा उस लोमड़े ने उससे करने के लिये कहा। वह झील के ठंडे पानी में कूद गया और जब वह झील में से बाहर निकला तो लोमड़े ने उसके फटे हुए कपड़े तो निकाल दिये और उसको अपने लाये हुए कम्बल में लपेट दिया।

इसके बाद वे दोनों महल चले और बादशाह के सामने पहुँचे।

लोमड़ा बादशाह से बोला — "मैं बादशाह मू ताई को ले आया हूँ पर रास्ते में हमारे ऊपर बड़ी आफत आ पड़ी। जब हम अपने सिल्क और जवाहरातों से लदे चालीस ऊँटों के साथ आपके राज्य को ले कर आ रहे थे तो आपके राज्य के सामने वाली नदी का पुल पार करते समय वह पुल टूट गया।

हमारे सारे ऊँट उस नदी में डूब गये। शादी के लिये जो भेंटें हम ले कर आ रहे थे वे सब भी पानी की धारा में बह गयीं। बस हमारी किस्मत अच्छी थी कि हम लोग किसी तरह से बच कर निकल आये।

बादशाह तो यही सुन कर बहुत प्रभावित हो गया कि वे चालीस ऊँटों पर इतना कीमती सामान लाद कर ला रहे थे। उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वह बादशाह मू ताई को सबसे अच्छे कपड़े पहनायें।

उसी शाम मू ताई और राजकुमारी की शादी हो गयी और दावत भी। पर मू ताई बहुत चिन्तित था उससे तो खाना भी नहीं खाया जा रहा था।

जब कोई नहीं सुन रहा था तो वह लोमड़े से बोला — "क्या यह सब ठीक है कि एक राजकुमारी से शादी की जाये और अपने आपको एक बादशाह कहलवाया जाये? पर तब क्या होगा जब वह मेरे घर आयेगी और उसको मेरी गरीबी का पता चलेगा?"

लोमड़े ने मू ताई की चिन्ताओं को बेकार की चिन्ताऐं बताते हुए कहा कि अभी वह कोई चिन्ता न करे और आनन्द से इस मौके का आनन्द उठाये। वह उसकी भी कोई तरकीब निकाल लेगा।

अगले दिन सुबह सवेरे जब दावत खत्म हो गयी तो नया शादीशुदा जोड़ा महल से चल दिया। उनके साथ काफी सारे घोड़े गधे और गाड़ियाँ थीं, राजकुमारी के नौकर थे और दहेज का सामान था।

मू ताई फिर से इतना परेशान था कि वह अपनी पत्नी से बात भी नहीं कर पा रहा था सो उसने लोमड़े को फिर बुलाया पर वह तो वहाँ था ही नहीं।

लोमड़ा तो इस बीच वहाँ से दूर भाग गया था और सौदागरों के एक समूह के पास जा पहुँचा जो तीस ऊँटों के साथ यात्रा कर रहे थे। लोमड़ा जब उनसे मिला तो उसकी आँखों में डर था।

वह दूर से आते हुए कारवाँ की तरफ इशारा करते हुए उन सौदागरों से चिल्ला कर बोला — "चोरों का एक समूह इसी सड़क पर आ रहा है और अगर तुम लोग अपनी जान बचा कर नहीं भागे तो तुम सब मारे जाओगे।"

सौदागरों ने उस दिशा की तरफ देखा तो उन्होंने सचमुच में ही घोड़ों की टापों से उठती धूल देखी। उन्होंने देखा कि जान बचाने के लिये भी समय कम है सो उन्होंने लोमड़े से ही सलाह माँगी कि वे क्या करें।

लोमड़े ने उनको सलाह दी कि उनके पास बच के भागने का केवल एक ही तरीका है। जब वे उनके पास से गुजरें तो वे उनको सिर झुकायें और उनसे कहें कि वे लोग बादशाह मू ताई के लोग हैं। यह सुन कर वे उनको छोड़ देंगे। वे सौदागर मान गये।

सो जब मू ताई अपने कारवॉ के साथ वहॉ से गुजरा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे सब उसको झुक झुक कर सलाम कर रहे थे।

उधर वह लोमड़ा उन सौदागरों से यह कह कर आगे बढ़ गया। आगे जा कर वह कुछ चरवाहों के झुंड और उनके घोड़ों से मिला। उसने उनको भी अपनी डरी हुई आवाज में डाकुओं की वही कहानी दोहरायी। उन चरवाहों ने भी धूल उड़ती हुई देखी और बचने का समय न देख कर लोमड़े से ही सलाह मॉगी।

लोमड़े ने उनको भी वही सलाह दी कि वे उस कारवॉ को सिर झुकायें और उनसे कहें कि वे बादशाह मू ताई के लोग है तो वे लोग उनको छोड़ देंगे। उन चरवाहों ने भी ऐसा ही किया।

राजकुमारी इस बादशाह के लोगों की वफादारी देख कर तो आश्चर्य में पड़ गयी। मू ताई भी आश्चर्य में पड़ गया जब उसको रास्ते में मिले सब लोगों ने सिर झुका कर सलाम किया – किसानों ने, चरवाहों ने, भिखारियों ने, दूकानदारों ने।

सारे दिन भागते भागते अब तक लोमड़ा थक कर चूर हो चुका था कि तभी उसको एक शैतान का महल दिखायी दे गया जो मू ताई के घर के पास के एक पहाड़ के पास था।

वह उस महल के चौकीदारों की ऑख बचा कर उस महल में घुस गया और सीधा उस शैतान के सोने के कमरे मे पहुॅच गया। वह शैतान बस सोने ही वाला था कि तभी लोमड़ा उसके बिस्तर में कूद पड़ा और उसको जमीन पर गिरा दिया।

वह बेचैन हो कर उससे बोला — "मैजेस्टी, अपनी जान बचाइये। इस समय सैंकड़ों चोर आपके महल पर हमला करने आ रहे हैं। उन्होंने तो आज आपको मारने की कसम खायी हुई है। इस समय आपके लिये यही सबसे अच्छा है कि आप अपने रसोईघर में रखे स्टोव के पीछे छिप जाइये।"

सो जब वह शैतान अपने उस स्टोव के पीछे की छोटी सी जगह में छिपने गया तो लोमड़े ने आग में बहुत सारी लकड़ियॉ डाल दी। वे लकड़ियॉ इतने ज़ोर से जली कि वह शैतान लोमड़े से दया की भीख मॉगने लगा कि वह उसको किसी तरह से बचा ले।

पर लोमड़ा उसकी यह बात कहॉ सुनने वाला था वह तो बस उस आग में लकड़ी डालता ही रहा और उस स्टोव की गर्मी बढ़ती ही रही जिससे वह शैतान बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में ही वह उस आग की गर्मी में ज़िन्दा ही भुनता रहा।

बाद में लोमड़े ने उसकी राख को बाहर फेंक दिया और उसके पूरे महल में यह घोषणा कर दी कि उनका शैतान राजा मर गया है और अब उनका नया बादशाह आ रहा है।

महल के नौकरों ने नये बादशाह के आने की खुशी में सारे कमरे सजा दिये। मू ताई उनका नया बादशाह हो गया। मू ताई ने उस लोमड़े को अपना वजीर[122] बना लिया।

कई महीनों के राज करने के बाद वहाँ के नौकर मू ताई और उसकी पत्नी को प्यार करने लगे थे। मू ताई ने वहाँ कई साल तक सफलतापूर्वक राज किया पर जब भी उसने कुछ करने का विचार किया तो उसने लोमड़े से सलाह जरूर ली। लोमड़ा भी उसको बहुत अक्लमन्दी की सलाह देता था।

दस साल बाद लोमड़ा मर गया तो मू ताई ने वहाँ सबको कह दिया कि सभी उसके प्यारे दोस्त को हमेशा याद रखें। उसने उस लोमड़े के सुनहरी बालों का टोप बनवा लिया जिसको वह हमेशा पहने रहता था।

सारे सीन चिआँग के लोगों को वह टोप इतना अच्छा लगा कि उसके बाद जब भी कोई लोमड़ा मरता तो वे भी उसके बालों का टोप बनवा लेते। इसी लिये सीन चिआँग आज भी लोमड़े के बालों के टोप के लिये बहुत मशहूर है।

[122] Chief Minister

34 पाई हुआ झील[123]

ज़ैचुआन शहर[124] के अन्दर से एक बहुत बड़ी नदी बहती है। ऐसा कहा जाता है कि तॉग सामाज्य[125] के समय में उसके किनारों पर बहुत सारी दूकानें और घर थे। वहॉ की कुऑरी लड़कियॉ रोज शाम को उस नदी पर कपड़े धोने जाती थीं।

उस दिन भी शाम को वहॉ बहुत सारी लड़कियॉ कपड़े धो रही थीं। उस दिन उस शाम को एक आदमी वहॉ भागता हुआ आया और उसने उन लड़कियों से कहा कि वे सब एक अजीब से बौद्ध साधु[126] को देखने चलें। वह बौद्ध साधु तभी तभी शहर में आया था।

उस समय लड़कियॉ वहॉ पत्थरों पर पीट पीट कर अपने कपड़े धो रही थीं। वे उस अजनबी साधु को देखने के लिये बहुत बेचैन हो गयीं सो उन्होंने जल्दी जल्दी अपना काम खत्म किया, उन कपड़ों को अपनी अपनी भूसे की बनी टोकरी में रखा और शहर की तरफ चल दीं।

---

[123] Pai Hua Lake – a legend from China, Asia.

[124] Szechuan City

[125] Tang Dynasty (618-907 AD) – preceded by Sui Dynasty followed by the FIve Dynasties and Ten Kingdoms period.

[126] Translated for the word “Monk”

केवल एक लड़की जुंग चिंग[127] वहाँ रह गयी। उसको दूसरी लड़कियों ने बहुत कहा कि अगर वह भी अपना काम जल्दी से खत्म कर ले तो वह भी उस साधु को देखने के लिये उनके साथ चले पर उसने कहा कि जब तक उसका काम ठीक से नहीं होगा वह वहाँ से नहीं जा सकती।

उसकी सब साथिनें शहर की तरफ चल दीं पर वे सब रास्ते में ही रुक गयीं क्योंकि वह अजनबी साधु उन्हीं की तरफ चला आ रहा था। वे लड़कियाँ तो उसको देख कर बहुत डर गयीं क्योंकि वह उनकी फुसफुसाहट को अनसुना कर के चुपचाप नदी की तरफ चला जा रहा था।

वे उसके दागदार और झुर्रियों भरे चेहरे, घाव वाले पैर और फटी और धूप से पड़ी सफेद पोशाक को देख कर ही डर गयी थीं। उस साधु ने पानी के किनारे जा कर घुटनों के बल बैठ कर दोनों हाथों का एक प्याला सा बना कर उस नदी में से पानी पिया।

उसके शरीर की बू से सिवाय जुंग चिंग के हर लड़की उससे पीछे की तरफ हट गयी। जब उसने खाना माँगा तो सबने उसकी तरफ से पीठ फेर ली पर जुंग चिंग उसको खाना खिलाने के लिये अपने घर ले गयी।

[127] Jung Ching – a name of a Chinese girl

उसकी सहेलियों ने उससे बहुत कहा कि वह उस साधु के पास न जाये पर वह भीड़ को हटाती हुई शहर की अँधेरी तंग गलियों में से हो कर उसको अपने घर ले गयी।

घर जा कर जुंग चिंग ने दाल चावल का सादा सा खाना बनाया जिसे उस साधु ने बिना उसको बिना धन्यवाद दिये ही बड़े शौक से खाया। खाना खा कर उसने उस लड़की से सोने के लिये एक बिस्तर माँगा तो जुंग चिंग ने बिना किसी हिचकिचाहट के उसको अपना बिस्तर दे दिया।

सुबह को जब वह साधु उठा तो उसने फिर खाना माँगा। जुंग चिंग ने उसको खाने के लिये रात का बचा हुआ चावल दिया।

जब वह साधु चुपचाप वह चावल खा रहा था तो जुंग चिंग सोने वाले कमरे में गयी, साधु के बिस्तर से उसकी गन्दगी से भरी और खून के धब्बे वाली चादर निकाली और उसको अपनी कपड़े धोने वाली टोकरी में तह कर के रख दिया।

जब वह चादर उस कपड़े धोने वाली टोकरी में रख रही थी तो उस साधु ने उससे पूछा कि क्या वह उसके पहनने के कपड़े भी धो सकती थी?

वह उसको मना नहीं कर सकी। उसने कहा "हाँ हाँ क्यों नहीं।"। जब उसने उसके पहनने वाले कपड़े उठाये तो उसकी सूखी खाल की भूसी उसकी अपनी पोशाक पर गिर पड़ी और उसकी वजह से कई मक्खियाँ उसके चेहरे और बालों पर आ गयीं।

उसको यह अच्छा नहीं लगा पर तुरन्त ही उसको ख्याल आया कि उसने उसके कपड़े तो केवल एक मिनट के लिये ही पकड़े थे पर वह साधु तो उनको हर समय पहनता था।

फिर वे दोनों वहाँ से नदी की तरफ चल दिये। दूसरी लड़कियाँ जुंग चिंग और उस साधु से कुछ दूर दूर चल रही थीं पर फिर भी उत्सुकता की वजह से वे सब उन दोनों के पीछे पीछे नदी के किनारे तक चलती ही रहीं।

नदी पर जा कर जुंग चिंग ने साधु की पोशाक धोने के लिये पानी में डुबोयी तो वह अचानक बहुत ही चमकीली सफेद हो गयी। वहाँ जो भीड़ खड़ी थी उस पोशाक का यह जादू देखने के लिये जुंग चिंग के पास तक खिसक आयी।

फिर जुंग चिंग ने उसको अपने हाथ से मला तो एक कमल का फूल उस पोशाक में से निकल कर नदी के पानी पर तैर गया। उसने उसको दोबारा मला तो वैसा ही एक और फूल वहाँ प्रगट हो गया और वह भी नदी के पानी पर तैर गया।

भीड़ यह जादू बड़े आश्चर्य से देख रही थी। वह काफी देर तक उस पोशाक को मलती रही और जब तक मलती रही जब तक कि फूलों की एक लम्बी लाइन पानी में नहीं लग गयी। वह लाइन आखिर नदी के आखीर में पाई हुआ[128] झील तक पहुँच गयी थी।

[128] Pai Hua Lake

एक लड़की उस पोशाक को छूने के लिये नदी की तरफ भागती हुई चिल्लायी — "अरे यह तो बड़ी कीमती जादुई पोशाक है।"

पर इससे पहले कि वह उस पोशाक तक पहुँच पाती वह पोशाक जुंग चिंग के हाथों से उड़ कर उस साधु के पैरों पर गिर पड़ी।

साधु ने उस पोशाक को उठा लिया और उसको पहन लिया। जैसे ही उस पोशाक ने उसके शरीर को छुआ उसके शरीर के सारे घाव ठीक हो गये।

साधु के शरीर से एक सुनहरी रोशनी निकलने लगी। साधु धन्यवाद देने के लिये जुंग चिंग की तरफ देख कर मुस्कुराया और फिर हवा उसको उड़ा कर आसमान में ले गयी।

जब उन कपड़े धोने वाली लड़कियों ने उस साधु की आखिरी झलक देखी तो वह एक बादल पर खड़ा हुआ था। तब उनको लगा कि उन्होंने एक अमर आदमी का मजाक बनाया था।

जुंग चिंग को उस साधु से अपने इस दयापूर्ण बर्ताव का उस साधु की दुआओं के रूप में यह इनाम मिला कि बहुत जल्दी ही वह एक ऐसे आदमी से मिली जो बहुत ही ईमानदार और अक्लमन्द था। उसने उस आदमी से शादी कर ली।

जब उसकी खुशकिस्मती की खबर फैली तो नदी की वह जगह शादी करने के लिये बहुत मशहूर हो गयी।

आज तक वह नदी "कपड़े धोने वाली नदी"[129] के नाम से मशहूर है और पाई हुआ झील कमल के फूलों से हमेशा भरी रहती है।

हर साल चौथे महीने के उन्नीसवें दिन जुंग चिंग और उस अमर आदमी की याद में वहाँ हुआन फूल की रस्म[130] मनायी जाती है।

[129] Washing River
[130] Huan Flower Ceremony

35 पागल साधु[131]

बहुत साल पहले की बात है कि एक किसान था जिसका नाम था तान ता हू[132]। वह चैकिआॅग के हैंगचाऊ[133] शहर में रहता था। बहुत दिन तक वह एक अजीब सी बीमारी से बीमार रहा। इस बीमारी में उसका पेट बहुत फूल गया था।

कभी कभी उसका पेट इतना फूल जाता था कि वह खड़ा भी नहीं हो सकता था। सालों तक उसकी माॅ तान ता लिआॅग[134] ने हर तरह की दवा उसको दे कर देखी पर कोई दवा उसके बेटे को ठीक नहीं कर सकी।

एक बार एक सामान बेचने वाला उनके घर आया तो उसने उनको सलाह दी कि वे ची कुंग से मिलें जो अकेला लिंग यिन मन्दिर में रहता था जो चैकिआॅग में पश्चिमी झील के पास था।[135] वह एक अजीब साधु[136] था।

उस बेचने वाले ने उस स्त्री को उस साधु की उसकी दैवीय ताकत[137] की कई कहानियाॅ बहुत ज़्यादा विस्तार से सुनायीं।

---

[131] Mad Monk – a folktale from China, Asia.
[132] Tan Ta Hu
[133] Hangchow town of Chehkiang
[134] Tan Ta Liang – mother of the Tan Ta Hu
[135] They should see Chi Kung who lived in Ling Yin Temple which was in Hangchow area of Chehkiang.
[136] Translated for the word "Monk"
[137] Supernatural powers

उसने उसको बताया कि किस तरह एक अन्धा आदमी एक मिनट से भी कम समय में ठीक हो गया था। या फिर कैसे एक कुबड़ी स्त्री चालीस साल में पहली बार सीधी चलने लगी। या फिर कैसे एक आदमी की टूटी टॉग पर एक मरहम मलने से उसकी वह टॉग हमेशा के लिये ठीक हो गयी थी।

वह बेचने वाला तान ता लिआॅग को उस साधु के तब तक कई ऐसे किस्से बताता रहा जब तक उसने उसको यह विश्वास नहीं दिला दिया कि वह साधु उसके बेटे को बिल्कुल ठीक कर देगा बस एक बार वह उसके पास चली जाये।

हालॉकि तान ता लिआॅग बूढ़ी थी फिर भी वह दो दिन का सफर कर के लिंग यिन पहाड़ पर अकेली गयी और उसकी चट्टानी चढ़ान चढ़ कर लिंग यिन के मन्दिर पहुॅची जो उस पहाड़ की चोटी पर था।

यह मन्दिर काफी बड़ा था और सीलन से भरा था। उसके कई कमरों में ढूॅढने के बाद वह ची कुंग को देख पायी। वह एक खम्भे के सहारे बैठा हुआ ऊॅघ रहा था और अपने आप ही आप कुछ कुछ बड़बड़ा रहा था।

हालॉकि वह उस साधु से कुछ दूरी पर ही रुक गयी थी फिर भी जब वह साधु सॉस लेता था तो उसकी हर सॉस के साथ शराब की बड़ी तेज़ बू उसके पास तक आती थी।

वह जब ऊँघ रहा था तो उस स्त्री ने देखा कि उसके तिनकों के जूते बिल्कुल फट गये हैं। उसका चेहरा बहुत गन्दा है। उसकी एक टॉग बहते हुए घावों से भरी है। उसके पास ही पत्तों का एक पंखा पड़ा हुआ है जिससे वह समय समय पर अपनी टॉग पर आती हुई मक्खियॉ उड़ा लेता है।

तान ता लिऑग को अपने बेटे की इतनी चिन्ता थी कि उसने इस साधु के इतने गन्दे और बीमार होने की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं की और वह उसके सामने जमीन पर गिर पड़ी।

वह बोली — "ओ अमर आदमी, मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।" पर इसके जवाब में उस साधु के गले में से केवल गरगराती सी आवाज ही निकली और उसने करवट बदली।

वह उससे एक घंटे से भी ज़्यादा प्रार्थना करती रही तब कहीं जा कर वह कुछ होश में आया और उसने उस स्त्री की तरफ अपनी खाली खाली ऑखों से देखा।

तान ता लिऑग ने तब उसको अपने बेटे की कहानी सुनायी तो भी वह डकारें[138] लेता हुआ अपने आपसे ही कुछ कुछ बड़बड़ाता हुआ बैठा रहा। आखीर में जब उसने अपनी कहानी खत्म कर ली तो ची कुंग ने एक जॅभाई [139]ली और अपने पेट के ऊपर अपना हाथ फेरने लगा।

---

[138] Translated for the word "Burping"

[139] Translated for the word "Yawn"

वह वहॉ अपने गन्दे मॉस पर तब तक हाथ फेरता रहा जब तक कि उसकी गन्दगी से दो छोटी छोटी गोलियॉ नहीं बन गयी। उसने उनको अपने हाथ में रख लिया।

वह साधु बोला — "चौंको नहीं केवल यही गोलियॉ तुम्हारे बेटे को ठीक कर पायेंगी। इनको घर ले जाओ और कोशिश कर के देखो। शायद इनके खाने से वह ठीक हो जाये।"

कह कर उसने वे दोनों गोलियॉ तान ता लिऑग को दे दीं। तान ता लिऑग ने उनको बड़े बेमन से ले लिया। गोलियॉ तान ता लिऑग को दे कर वह फिर से ऊँघने लगा था।

उधर तान ता लिऑग ने वे गोलियॉ अपने स्कर्ट में रख लीं और उस ऊँघते हुए साधु को वहीं ऊँघता हुआ छोड़ कर वहॉ से चली आयी।

जब वह घर आयी तो उसने उस मैल की वे दो गोलियॉ अपने बेटे को दीं पर उसने उन गोलियों को खाने से मना कर दिया। फिर भी उसने उन गोलियों को जबरदस्ती उसके गले में डाल दिया।

तान ता हू ने वे गोलियॉ अपने पेट में एक तरफ को जाती महसूस कीं और फिर पेट की दीवार से चिपकती और फटती महसूस कीं। उसको लगा जैसे उसके पेट में बहुत ज़ोर से जलन हो रही हो।

इससे पहले कि वह और ज़्यादा बीमार पड़ता उसको एक दौरा सा पड़ा और वह जमीन पर गिर पड़ा। उसने वहॉ बहुत सारा पानी

उगल दिया जो उसके पेट में उसके बचपन से भरा हुआ था। आखिर तान ता हू वहीं फर्श पर ही बेहोश हो गया। पर जब कई घंटे बाद वह उठा तो वह पूरी तरीके से ठीक हो चुका था।

तान ता लिऑग तो अपने बेटे को ठीक देख कर बहुत खुश हुई और उसने यह बात अपने सारे पड़ोसियों में फैला दी कि लिंग यिन मन्दिर में एक ज़िन्दा बुद्ध रह रहा था।

हालॉकि बहुत सारे लोग ची कुंग साधु से मिलने गये पर फिर भी वह एक पागल भिखारी की तरह ही बर्ताव करता था। वह हमेशा बहुत पिये हुए रहता और उसे जो कुछ भी मिल जाता वह वही खा लेता।

एक दिन ची कुंग साधु एक लड़के को उसकी फूस की झोंपड़ी में देखने गया। वह लड़का अपनी मॉ के साथ रहता था और अपना और अपनी मॉ का पेट पालने के लिये मीठे और नमकीन बन बेचा करता था।

असल में वह उसकी मॉ को ही देखने गया था। वह चल नहीं सकती थी। इस लड़के ने कभी इस ज़िन्दा बुद्ध का नाम सुना नहीं था क्योंकि वह कभी अपनी झोंपड़ी से बाहर निकला ही नहीं था।

ची कुंग साधु उस लड़के के पास तक गया और उसकी झोंपड़ी की हवा को सूँघ कर बोला — “ओह कितनी अच्छी गन्ध आ रही है। मुझे तुम्हारे दस बन चाहिये।”

उस लड़के ने ची कुंग को इज़्ज़त के साथ झुक कर नमस्ते की और बोला — "क्या चाहिये आपको। जो कुछ भी आपको चाहिये मैं दूँ आपको।"

फिर उसने अपने गर्म गर्म डिब्बे का ढक्कन उठाया और उसमें से उसने अपनी पसन्द के बन दिखाये। लड़के की इजाज़त के बिना ही ची कुंग ने उस डिब्बे में अपना गन्दा हाथ डाल दिया और सब बनों को एक एक कर के छू लिया। तब कहीं जा कर उसने दस मॉस के बन चुने।

लड़के ने वे बन तिनकों के बने एक छोटे से थैले में रखे और उस साधु को दे दिये। ची कुंग ने उनमें से एक बन को चखा और बुरा सा मुँह बनाते हुए मुँह में भरे उस कौर को थूक दिया।

वह बोला — "मैं इसको नहीं खा सकता इसमें तो बहुत तेल है। इसकी बजाय तुम मुझे दस सब्जी वाले बन दे दो।"

लड़के ने उसका कहा मान कर उसको दस सब्जी वाले बन दे दिये। ची कुंग ने फिर उनमें से एक बन को चखा और बुरा सा मुँह बनाते हुए उसको भी थूक दिया। "यह तो बिल्कुल ही कूड़ा है। मुझे कुछ ऐसा दो जिसमें मॉस हो।"

साधु ने उस लड़के को एक तरफ किया और खुद उस गर्म डिब्बे मे रखे हर बन को फिर एक एक कर के अपनी उँगली से छुआ जब तक कि उसको अपनी पसन्द के दस बन नहीं मिल गये।

उसने एक पूरा बन अपने मुँह में रखा और बाकी बचे नौ बन उसने अपनी पोशाक की जेब में रखे और वहाँ से चल दिया।

लड़का पीछे से चिल्लाया — "सुनिये आपने किसी चीज़ के कुछ पैसे तो दिये ही नहीं।" पर उस साधु ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपना चलना जारी रखा।

लड़का फिर चिल्लाया — "रुकिये, जाइये नहीं।" और वह ची कुंग साधु के पीछे पीछे दौड़ गया।

लड़के ने जब ची कुंग साधु को पकड़ लिया तो उससे अपने बन के पैसे माँगे तो साधु ने आश्चर्य में अपने हाथ उठा दिये और उस लड़के के मुँह पर थूकते हुए बोला — "पर मेरे ऊपर तो तुम्हारा कोई पैसा उधार नहीं। मैंने तो ये बन सब्जी वाले बनों के बदले में लिये हैं।"

लड़का कुछ गुस्से से बोला — "पर आपने सब्जी वाले बनों के पैसे तो दिये ही नहीं।"

"हाँ मैंने नहीं दिये। वह इसलिये क्योंकि सब्जी वाले बन तो मैंने माँस वाले बनों से बदल लिये।"

लड़का उस साधु की इस दलील नहीं समझ सका वह कुछ देर उसको समझने के लिये वहीं खड़ा रह गया। इतने में वह साधु चलता चला गया।

जब तक लड़के को यह महसूस हुआ कि वह साधु बच कर भाग रहा है वह फिर से उसके पीछे भागा। जब वह भाग रहा था

तो उसने अपने पीछे पहाड़ की तरफ से गरज की आवाज आती सुनी।

वह उसको देखने के लिये पीछे मुड़ा तो उसने देखा कि पहाड़ के बहुत सारे पत्थर उसकी झोंपड़ी पर लुढ़कते चले आ रहे हैं। वे इतने ज़ोर से वहाँ आ कर वहाँ गिरे कि सारी धरती हिल गयी।

उस समय उस लड़के को लगा कि बनों के पैसे देने को मना कर के उस साधु ने उसकी ज़िन्दगी बचा ली थी। जब वह उस साधु को धन्यवाद देने के लिये मुड़ा तो उसने देखा कि वह साधु एक पेड़ के नीचे सो रहा है और उसके बराबर में दो आधे खाये हुए बन पड़े हैं।

जब वह लड़का ची कुंग साधु के पास आया तो ची कुंग साधु ने उसको अपनी एक ऑख खोल कर देखा और अपने पास पड़े बनों की तरफ इशारा करते हुए बोला — "इन बनों को ले जाओ और अपनी मॉ को दे दो। यहॉ अपना समय बर्बाद मत करो।" वह सोने के लिये ज़्यादा इच्छुक दिखायी दे रहा था।

एक बार फिर ची कुंग साधु की दवा काम कर गयी। जैसे ही उस लड़के की मॉ ने वे बन खाये तो वह तो बिल्कुल ठीक हो गयी।

जब उसने अपने बेटे की कहानी सुनी तो उसको तो लगा कि उस अमर बुद्ध ने उन दोनों की ज़िन्दगी बचा ली है। उस दिन के

बाद से तो वह रोज स्वर्ग की ही पूजा करती रही और उसी को भेंट चढ़ाती रही।

36 अमर लोगों का टापू[140]

यह हजारों साल पुरानी बात है जब अमर लोग पूर्वी समुद्र[141] के टापुओं पर खुश खुश और शान्ति से रहा करते थे। वे सुबह की ओस पीते थे, दिन भर दैवीय[142] फल खाते थे और जेड[143] के महलों में रहते थे।

उनके पास कोई और काम था नहीं और कोई चिन्ता भी नहीं थी सो वे अमर लोग या तो एक दूसरे के घर जा कर और उनसे मिल जुल कर अपना समय गुजारा करते थे या फिर बादलों पर सवार हो कर आसमान में घूम कर अपना समय बिताते थे।

केवल एक ही समय था जब वे आपस में बहस करते थे जब उनकी यह आलसी जिन्दगी किसी तूफान के आने से इधर उधर हो जाती थी। या तो समुद्र में ऊँची ऊँची लहरें आ जातीं या फिर तूफान आ जाते और वे टापू हिल जाते।

ऐसे समय में उन अमर लोगों को अपनी सुरक्षा के लिये स्वर्ग चले जाना पड़ता और वहाँ रह कर अपने घर लौटने का तब तक इन्तजार करना पड़ता जब तक वह तूफान थम नहीं जाता।

---

[140] The Islands of the Immortals – a myth from China, Asia.
[141] Eastern Sea
[142] Translated for the word “Divine”
[143] Jade is a semi-precious gemstone. It is found in many colors but its most common color is green. See its picture above.

एक तूफान के शान्त होने में अक्सर कई दिन लग जाते और उनको अपने टापू को ढूँढने में तो बल्कि और भी ज़्यादा समय लग जाता। ये तूफान सारे पूर्वी समुद्र में आते ही रहते थे।

एक बार एक शाम को बहुत ज़ोर का तूफान आया तो अमर लोगों ने जेड बादशाह[144] से कहा कि वह समुद्र के देवता से कहे कि वह ये टापू समुद्र की तली में कहीं सुरक्षित रूप से रख ले ताकि उनकी ज़िन्दगी में बार बार उथल पुथल न हो।

जब समुद्र के देवता ने जेड बादशाह का हुक्म सुना तो वह सारे पूर्वी समुद्र में चारों तरफ यह देखने के लिये तैरा कि ऐसे कौन से जानवर हैं जो यह काम कर सकते हैं कि वे उन टापुओं को पकड़ कर रख सकें।

इस खोज का तो कोई नतीजा नहीं निकला पर जब वह अपने महल में लौटा तो अपने कछुए चौकीदारों को देख कर उसके दिमाग में एक प्लान आया। उसने उन कछुओं को उन टापुओं को अपनी पीठ से बॉधने के लिये कहा।

वे कछुए इतने सख्त और ताकतवर थे कि अगर एक बार सारे कछुए अपनी जगह पर ठहर गये और टापू भी उनकी सख्त पीठ पर बॅध कर ठहर गये तो फिर उन टापुओं को वहॉ से कोई हिला भी नहीं सकता था। और इस तरह अमर लोग सन्तुष्ट हो जाते।

---

[144] Jade Emperor – the God of Sky. See his picture above

इसलिये समुद्र के देवता ने ऐसा ही किया। उन सब टापुओं को कछुओं की पीठ से बाँध दिया तो कोई तूफान उनको नहीं हिला सका। इस तरह कई साल तक अमर लोग वहाँ आराम से रहे।

पर कुछ सालों बाद अमर लोगों ने महसूस किया कि उनके टापू धरती के भूचालों से हिल जाते हैं। अमर लोग एक बार फिर जेड बादशाह के पास गये और उनको अपनी परेशानी बतायी।

जेड बादशाह ने फिर समुद्र के देवता से पूछा कि क्या बात है ऐसा क्यों हो रहा है तो समुद्र के देवता बोले कि ये कछुए इतने सालों तक एक जगह बैठे बैठे तंग हो गये हैं इसलिये अब उनको कुछ अपने हाथ पैर हिलाने की जरूरत है।

इस काम को कराने के लिये समुद्र के देवता के दिमाग में एक प्लान आया। उसने कछुओं से कहा कि वे साल में एक बार एक टापू से दूसरे टापू पर चले जाया करें। कछुए राजी हो गये और देवता भी इस तरह फिर तीन हजार साल तक शान्ति से रहे।

लुंग पो कुओ[145] नाम की बड़े साइज़ के आदमियों[146] की एक जाति थी जो पूर्वी समुद्र के सबसे ज़्यादा दूर वाले पूर्वीय टापू के भी दूर वाले किनारे पर रहती थी।

वे इतने बड़े साइज़ के लोग थे कि जब वे उठ कर खड़े होते तो उनके सिर बादलों को छूते और जब वे चलते तो उनके पैरों के

[145] Lung Po Kuo named race of giants
[146] Translated for the word “Giants”

निशानों से बहुत गहरे गहरे गड्ढे बन जाते। उनके पैर का एक एक निशान इतना बड़ा होता जितना कि कोई आदमी अपनी सारी ज़िन्दगी चल कर बनाता।

ये लोग टापुओं के अमर लोगों के साथ और स्वर्ग के साथ हमेशा शान्ति से मिल कर रहते थे पर एक दिन एक नौजवान बड़े साइज़ के आदमी ने टापुओं की शान्ति नष्ट कर दी।

एक दिन उसने निश्चय किया कि वह आज मछली पकड़ेगा सो वह समुद्र में उठी हुई एक चट्टान पर अपना मछली का कॉटा ले कर बैठ गया ताकि वहॉ से उसको समुद्र की तली बिल्कुल साफ दिखायी दे सके।

सुबह के समय तो समुद्र बिल्कुल खाली था पर दोपहर के बाद उस नौजवान को कुछ कछुए दिखायी दे गये। ये कछुए वे कछुए थे जो अपना सालाना काम यानी एक टापू से दूसरे टापू पर जाने का काम कर रहे थे।

उन कछुओं को देख कर उसने अपनी मछली पकड़ने वाले कॉटे में चारा लगाया और उसको नीचे पानी में डाल दिया। लालची कछुओं ने ताजा मछली देखी तो कई कछुए उस पर दौड़ पड़े और इस खाने की होड़ में टापू इधर उधर तैर गये।

एक कछुआ कॉटे में फॅस गया। कछुआ फॅसा देख कर उस नौजवान ने अपना कॉटा खींच लिया। जैसे ही वह नौजवान वह

कछुआ पकड़ कर किनारे पर ले कर आया तो दूसरा कछुआ चारे के लिये आ पहुँचा। दूसरा पकड़ा तो तीसरा आ पहुँचा।

इस तरह एक घंटे के अन्दर अन्दर उस नौजवान ने पाँचों कछुए पकड़ लिये और उनको अपने मछली ले जाने वाले डंडे पर उलटा लटका कर घर ले चला।

उसी रात वहाँ बहुत बड़ा तूफान आया। उस तूफान ने उन सब टापुओं को पानी में से उखाड़ कर समुद्र में चारों तरफ फैला दिया। उनमें से दो टापुओं को तो हवा उड़ा कर उत्तरी ध्रुव ले गयी और वहाँ उनको समुद्र में डुबो दिया। बाकी के तीन टापू भी पूर्वी समुद्र के बहुत दूर के कोने में चले गये।

उस नौजवान की लापरवाही देख कर अमर लोग बहुत नाराज हो गये और जब तक वह तूफान शान्त हुआ तब तक के लिये वे सब फिर बादलों में चले गये। जब तूफान रुक गया उसके बाद भी उनके टापू कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे।

यह देख कर वे फिर से जेड बादशाह के पास गये। जेड बादशाह ने उस नौजवान को सजा देने के लिये अपना सबसे ताकतवर जादू बुलाया और उस जादू से उसने लुंग पो कुओ देश के हर बड़े साइज़ के आदमी को सिकोड़ दिया।

एक पल में ही वे पहले तो बादलों को नहीं छू सके और दूसरे ही पल में वे एक पाइन के पेड़ से ज़्यादा लम्बे नहीं थे और बस फिर वे हमेशा के लिये ऐसे ही रह गये।

इस बीच समुद्र के देवता को किसी तरह तीन टापू मिल गये सो उसने तीन दूसरे कछुओं को उन टापुओं को सँभाले रखने के लिये भेज दिया पर साथ में उनको वहाँ से हिलने को भी मना कर दिया।

एक बार फिर पूर्वी समुद्र में सब कुछ शान्त हो गया पर अमर लोगों ने अब वहाँ वापस आने से मना कर दिया। उन्होंने अपना अपना सामान बाँधा और धरती और आसमान में जहाँ भी उनको सुरक्षित जगह मिली वहीं इधर उधर फैल गये।

उस तूफान के बाद से पूर्वीय समुद्र के वे तीन टापू अपनी जगह से कहीं नहीं हिले हैं। नाविक जो बिना नक्शे वाले समुद्र[147] में खो जाते हैं उन्होंने सुबह के कोहरे में से उठते हुए तीन पहाड़ देखे हैं पर जब भी उन्होंने वहाँ जाना चाहा तो वे वहाँ तक कभी पहुँच नहीं पाये।

[147] Translated for the words "Uncharted Waters"

37 शेर के मुँह में[148]
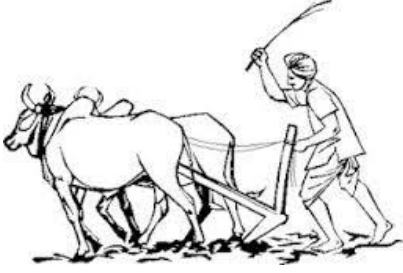
वॉग चुंग और उसका छोटा भाई वॉग सायो[149] दक्षिण चीन के एक छोटे से गॉव में रहते थे। वे आपस में कभी अच्छे दोस्त तो नहीं रहे पर वे अपने माता पिता के दिये हुए एक ही जमीन के टुकड़े से अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये मजबूर थे।

छोटा भाई वॉग सायो बहुत ही दयावान था जबकि बड़ा भाई वॉग चुंग बहुत ही मतलबी था। अब जैसी जिसकी किस्मत होती है। बड़े भाई वॉग चुंग की शादी भी इत्तफाक से एक ऐसी स्त्री से हो गयी जो बहुत ही मतलबी और बेरहम थी।

वॉग चुंग की पत्नी को अपने पति का छोटा भाई बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। वह उसको घर से निकालने का कोई न कोई मौका ढूँढ रही थी।

एक दिन वॉग सायो खेत के काम से थका हारा आया तो उससे चाय का एक प्याला टूट गया। बस उसकी भाभी को बहाना मिल गया और उसने उसको इसी बात पर घर से बाहर निकाल दिया।

वॉग चुंग ने जाते समय उसको लकड़ी का एक हल और पतला सा एक भूसे का गद्दा दे दिया और उसको घर से बाहर जाने दिया।

---

[148] Into the Mouth of the Lion – a legend from China, Asia.

[149] Wang Chung and his younger brother Wang Hsaio

दोनों चीज़ें ले कर वॉग सायो कई दिनों तक ऐसे गॉवों और शहरों से हो कर चलता रहा जिनके उसने नाम तो सुने थे लेकिन उनको कभी देखा नहीं था।

पॉचवी रात वह एक सुनसान अकेली जगह आ गया। उस जगह के बीच में एक टूटा फूटा मन्दिर खड़ा था। आज उसके उन फर्शों पर घास उग आयी थी जो कभी चमकते रहे होंगे। मन्दिर की दीवारें टूटी फूटी थी छत भी खराब थी सो उन छतों में से उसको आसमान दिखायी दे रहा था।

उसको तो कहीं ठहरने की जगह चाहिये थी सो वह इसी मन्दिर की तरफ बढ़ा। इतनी सब टूट फूट के बाद भी उस मन्दिर के ऑगन में एक बहुत ही सुन्दर पत्थर का शेर खड़ा हुआ था। वह आज भी वैसा ही चमक रहा था जैसा कि शायद अपने बनने के पहले दिन चमक रहा होगा।

वॉग सायो को यह एक अच्छा शकुन लगा सो उसने उस जगह को कुछ दिनों के लिये अपना घर बनाने के लिये सोच लिया।

उसने एक पैसा उधार देखने वाले से थोड़ा सा पैसा उधार ले लिया था सो उस पैसे से उसने इतना अनाज खरीद लिया था कि वह वहॉ मन्दिर के आस पास की जमीन पर खेती कर सकता था।

अनाज खरीद कर उसने वहॉ वह अनाज बो दिया और अपनी खेती के बड़े होने का इन्तजार करता रहा। इस बीच में वह जंगली फलों और जानवरों के मॉस पर अपना गुजारा करता रहा।

वह अपने दिन खेत पर और शाम मन्दिर की सीढ़ियों पर बैठ कर गुजारता। वहॉ अकेली जगह में कौन तो उसके पास उससे मिलने आता और वह खुद भी गॉव के लोगों से मिलने जाना नहीं चाह रहा था सो वह वहॉ अकेला ही रहता रहा।

पत्थर का वह शेर जो मन्दिर की रखवाली कर रहा था बस वही उसका एक दोस्त था। अपने अकेलेपन में वह बस उसी से एकतरफा दोस्ती में लग गया।

उसने उस शेर की सुरक्षा के लिये सरकंडे[150] का एक कमरा बनाया। वह रोज सुबह उसको खाना खिलाता था और शाम को उससे बात करता था। वह शेर भी शान से उसके सामने बैठा तो रहता पर ऐसा लगता नहीं था कि वह उसकी कुछ सुन भी रहा था।

गर्मी की एक शाम जब सब कुछ बहुत गर्म था सो वॉग सायो पंखा झलता जा रहा था और अपने उस शेर से अपनी फसल के बारे में बात करता जा रहा था।

"ओ मेरे पत्थर के शेर, तुमको पता नहीं है कि तुम कितने खुशकिस्मत हो। तुम यहॉ सारा दिन दुनियॉ की सारी चिन्ताओं से आजाद बैठ सकते हो पर मुझे देखो मैं सारा दिन खेत में लगा रहता हूॅ और फिर भी मुझे यह नहीं मालूम कि मेरी फसल ठीक से उगेगी भी या नहीं।"

[150] Translated for the word "Reed". See its picture above.

और दिनों की तरह से वह शेर सुन रहा था या नहीं सुन रहा था पर वॉग सायो ने इसके आगे कुछ कहा ही नहीं। वह अपने ख्यालों में खोया हुआ शेर के पैरों के पास चुपचाप बैठा रहा।

इतने में जमीन हिलनी शुरू हुई। पहले तो वह धीरे से हिली पर फिर वह ज़ोर के शोर में बदल गयी। वॉग सायो डर गया। उसको लगा कि शायद कोई तूफान आ गया है सो वॉग सायो वहॉ से उठ कर शेर के सरकंडे वाले मकान में घुस गया और अपने ठंडे शरीर को सिकोड़ कर बैठ गया।

उसके सिर के ऊपर से किसी की बड़ी गहरी सी आवाज आयी — "तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"

वॉग सायो को तो यकीन ही नहीं हुआ कि वह शेर की आवाज थी। वह बोला — "तुम कैसे बोल सकते हो तुम तो पत्थर के बने हो?"

"मैंने तुमसे कह दिया न कि तुम चिन्ता न करो। और तुम मुझसे और सवाल भी मत पूछो।"

शेर ने वॉग सायो से फिर कहा — "मेरे मुॅह में हाथ डालो और वहॉ जो कुछ भी हो निकाल लो।"

वॉग सायो ने शेर के मुॅह में हाथ डाला और उसके मुॅह में से चॉदी का एक टुकड़ा निकाल लिया। उसने शेर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

शेर बोला — "अभी मुझे धन्यवाद मत दो। अभी तो मेरे मुँह में बहुत कुछ है। तुम इसमें से जितना चाहो निकाल लो।"

वॉग सायो ने उस शेर के मुँह में फिर से हाथ डाला तो मुट्टी भर कर सोने चॉदी के टुकड़े निकाल लिये। उसने उनको सावधानी से अपने थैले में रख लिया जो उसके पैरों के पास ही पड़ा हुआ था।

शेर ने अपना मुँह खूब चौड़ा खोल रखा था इससे वॉग सायो उसके मुँह में से और भी बहुत कुछ निकाल सकता था पर उसने अब तक जितना निकाल लिया था वह उससे सन्तुष्ट था।

वॉग सायो अपना यह पैसा अपने बड़े भाई को भी देना चाहता था सो वह अपने घर की तरफ लम्बी यात्रा पर चल दिया। जब वह अपने भाई के घर पहुँचा तो वह इतना खुश था कि वह उसके घर में बिना दरवाजा खटखटाये ही अन्दर चला गया और सोने चॉदी का वह थैला उसके पैरों अपने भाई के पैरों के पास पलट दिया।

जैसे ही उसने वह थैला खाली किया और उसको शेर की कहानी सुनायी तो उसके बड़े भाई ने उसको उसकी गर्दन से पकड़ लिया और उससे उस मन्दिर का पता पूछा।

वॉग सायो ने जैसे ही उसका पता बताया वॉग चुंग दरवाजे से बाहर भाग गया और ॲंधेरी गलियों में गुम हो गया। वह भी जैसे उसका भाई अनजाने शहरों और गॉवों से होता हुआ वहॉ पॉचवें दिन वहॉ पहुँचा था वह भी पॉचवें दिन उस मन्दिर में पहुँच गया।

खजाने का लालची वह मन्दिर के ऑगन की तरफ दौड़ा और जा कर उस पत्थर के शेर से चिल्ला कर बोला — "अपना मुॅह खोलो। अपना मुॅह खोलो।" पर शेर न तो कुछ बोला और न ही उसने अपना मुॅह खोला।

इस पर वॉग चुंग को गुस्सा आ गया। उसने मन्दिर की दीवार के पास पड़ा एक पत्थर उठा लिया और उसे घुमा कर शेर के मुॅह पर मारा। जैसे ही वह पत्थर शेर के चेहरे पर लगा तो वह दर्द से दहाड़ा और उसने अपना मुॅह खोल दिया।

वॉग चुंग ने भी तुरन्त ही उसके मुॅह में नीचे तक अपना हाथ डाल दिया। इससे पहले कि शेर अपना मुॅह बन्द करता उसने उसके मुॅह में से काफी पैसा निकाल लिया।

जैसे ही वह अपना निकाला हुआ पैसा अपने थैले में रख कर उस थैले का मुॅह बॉध रहा था कि शेर को बोलने का मौका मिल गया।

वह बोला — "तुमने काफी सामान ले लिया है। मैं हमेशा के लिये अपना मुॅह खुला नहीं रख सकता और तुम्हारे पास तुम्हारी ज़िन्दगी के लिये अब काफी पैसा है।"

इतना कह कर शेर अपना मुॅह बन्द करने लगा पर इससे पहले कि शेर अपना मुॅह बन्द करता वॉग चुंग ने उसके मुॅह में अपना हाथ एक बार और डाल दिया।

पर इस बार शेर ने अपना मुँह बन्द कर लिया और उसकी बाँह उसके मुँह में फँस कर रह गयी। अब वाँग चुंग कितनी भी ज़ोर से अपना हाथ उसके मुँह से खींच रहा था पर शेर का मुँह ही नहीं खुल रहा था।

वाँग चुंग सहायता के लिये बहुत चीखा चिल्लाया पर उसकी चीख तेज़ हवा की आवाज में दब गयी जो अभी अभी चल निकली थी।

जल्दी ही आसमान में बारिश के बादल छा गये और एक एक दो दो मिनट बाद बिजली चमकने लगी। आखिर तूफान आ गया। बहुत ज़ोर की बारिश होने लगी और पानी मन्दिर की नालियों से हो कर जमीन पर नदियों की तरह बहने लगा।

वाँग चुंग ने अपने दूसरे हाथ से पैसे का थैला सँभाला और फिर से अपना हाथ शेर के मुँह से निकालने की कोशिश की पर उसके डर का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि बारिश से भीग कर उसका वह थैला साइज़ में छोटा होता जा रहा था। उसके थैले का सोना चाँदी उस बारिश के पानी से भीग कर पिघल कर धरती पर बहा जा रहा था।

आखिर वह तूफान थमा और रात हो गयी पर शेर उसका हाथ अपने मुँह में लिये हुए नहीं थका था।

उधर जब वाँग चुंग कई दिन तक घर नहीं आया तो उसकी पत्नी उसको ढूँढने निकली। एक हफ्ता ढूँढने के बाद उसने वाँग

चुंग को शेर के सहारे बेहोश सा बैठा हुआ पाया। उसका हाथ अभी भी शेर के मुँह में फँसा हुआ था।

उसने आ कर अपने पति से पूछा कि उसको वह पैसा कैसे तो मिला और कैसे खो गया। जब वॉग चुंग अपनी पत्नी को यह सब बता रहा था तो पत्थर का शेर चुपचाप सब सुन रहा था।

वॉग चुंग की पत्नी ने पूरी कहानी सुनने से पहले ही नीचे से एक पत्थर उठाया और शेर के सिर पर दे मारा। पत्थर तो शेर के सिर से टकरा कर टूट गया पर शेर के सिर पर उस पत्थर का कोई असर नहीं पड़ा।

यह देख कर वॉग चुंग चिल्लाया — "ऐसा नहीं करो। तुम अपने ऐसे बर्ताव से हालात और खराब कर दोगी और वह शेर मुझे यहॉ कैद कर के रखने के लिये और ज़्यादा पक्का इरादा कर लेगा।

अगर वह चाहता तो मेरा हाथ अपने दॉतों से कुचल कर उसका बिल्कुल चूरा ही कर देता परन्तु उसने ऐसा किया नहीं इसलिये हमको बस अब समय का इन्तजार करना चाहिये। तुम जाओ और वॉग सायो को ढूँढ कर लाओ। शायद वही शेर को अपना मुँह खोलने के लिये राजी कर सके।"

वाग चुंग की पत्नी मुँह फुला कर वॉग सायो को ढूँढने चल दी। वह वॉग सायो को ढूँढने के लिये अपने घर वापस आयी। सारे शहर में ढूँढने पर भी वह उसको कहीं नहीं मिला। वह तो अपने खजाने के साथ पहले ही वहॉ से चला गया था।

अब वॉग चुंग की पत्नी ऐसे किसी आदमी को नहीं जानती थी जो उसके पति को उस शेर से आजाद करा सकता। सो अगले तीन महीनों के लिये उसने उस मन्दिर के पास के गॉव में एक कमरा किराये पर ले लिया और रोज अपने पति को खाना खिलाने के लिये वह वहीं से जाती रही।

तीन महीने बाद उनका बचा हुआ पैसा भी खत्म हो गया और वह अपने पति को केवल चावल के पुराने बन[151] ही खिला सकी।

वॉग चुंग अब इतना पतला और कमजोर हो चुका था कि वह अब अपने आप खाना भी नहीं खा सकता था। उसकी पत्नी उसको बच्चे की तरह खाना खिलाती फिर बचा हुआ खाना खुद खाती।

यह सब देख कर उसको रोना आ गया।

तभी वह किसी के ज़ोर के हॅसने की आवाज सुन कर कुछ होश में आयी। यह हॅसी की आवाज शेर के मुॅह से आयी थी। जैसे ही शेर हॅसा तो उसका मुॅह खुला, और उसका मुॅह खुला तो वॉग चुंग का हाथ उसके मुॅह से छूट गया।

शेर गरज कर बोला — "तुमने अपना सबक सीख लिया? मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि अगर तुम मेरा ख्याल रखोगे तो मैं भी तुम्हारा ख्याल रखूॅगा।"

उस दिन के बाद से इन दोनों पति पत्नी ने वॉग सायो का छोड़ा हुआ खेत ले लिया। मन्दिर का ऑगन साफ किया। वहॉ की जमीन

[151] Bun – a kind of bread in the form of round balls

की सफाई की। मन्दिर में भेंटें चढ़ायीं और रोज शेर के पैरों पर फूल चढ़ाये।

उसके बाद शेर फिर कभी नहीं बोला पर उनकी देखभाल के बदले में उसने उनके खेत को हमेशा हरा भरा रखा।

38 मा चैन और अमर कलम[152]

मा चैन पन्द्रह साल का एक बेसहारा लड़का था जो एक माली और एक मजदूर की तरह से काम कर के अपना पेट पालता था।

उसको ड्राइंग का बहुत शौक था इसलिये वह अपने थोड़े से खाली समय में ड्राइंग बनाना चाहता था पर उसके पास कोई ब्रश या पेन्सिल या कागज नहीं था जिस पर वह ड्राइंग बना सकता सो वह लकड़ी की डंडियों से रेत में ही कुछ कुछ बनाता रहता था।

एक दिन जब वह सो रहा था तो उसके सपने में एक बूढ़ा आया जिसके हाथ में एक कलम था। वह मा चैन के बिस्तर के ऊपर झुका और उस कलम को उसके माथे से छुआ दिया। वह धीरे से बोला "बेटे यह अमर कलम है।"

उस कलम की नोक इतनी चमकीली थी कि उसकी रोशनी मा चैन के सारे घर में फैल रही थी। और जब उसने उस बूढ़े को धन्यवाद देना चाहा तब तक तो वह गायब हो चुका था।

उसके बाद मा चैन की आँख खुल गयी तो उसने देखा कि उस के हाथ में तो वही कलम था जो उस बूढ़े ने उसे उसके सपने में दिया था।

मा चैन तुरन्त ही घर से बाहर दौड़ गया और तेल का एक लैम्प जला कर उस कलम से उसने रेत में एक चिड़िया बनायी। पर जैसे

---

[152] Ma Chen and Immortal Brush Pen – a myth from China, Asia.

ही उसने उस चिड़िया के पंख बना कर खत्म किये तो वह चिड़िया अँधेरे में ही उड़ गयी।

फिर मा चैन ने एक मछली बनायी। उसको भी उसने बना कर जब खत्म किया तो वह भी रेत में पहले तो इधर उधर उछली और फिर पास की एक नदी में जा कर कूद गयी।

मा चैन की पहले तो कुछ समझ में नहीं आया कि यह क्या हो गया पर बाद में उसको लगा कि अपनी उस कलम से वह कुछ भी बना सकता था। और जैसे ही वह तस्वीर खत्म करता उसके सामने ही सामने उसमें जान पड़ जाती।

मा चैन एक बहुत ही दयालु लड़का था सो उसने अपनी यह होशियारी गॉव के उन लोगों की सहायता करने में इस्तेमाल करने का निश्चय किया जिनको उसकी इस सहायता की जरूरत थी।

अगर उसके किसी पड़ोसी को हल की जरूरत होती तो वह उसके लिये हल की एक तस्वीर बनाता और जैसे ही वह उसको खत्म करता वह ज़िन्दा हो जाता तो वह हल वह उसको दे देता।

अगर उसके पड़ोसी को लैम्प की जरूरत होती तो वह एक लैम्प की तस्वीर बनाता और जब वह ज़िन्दा हो जाता तो वह लैम्प अपने उस पड़ोसी को दे देता। यहॉ तक कि वह उन लोगों के लिये दवा वाले पौधों की तस्वीरें खींचता जो वैद्यों को पैसा नहीं दे सकते थे।

गॉव के सारे गरीब लोग मा चैन को बहुत प्यार करते थे और इस तरह वह उनमें अमर कलम वाला मा चैन के नाम से मशहूर हो गया था।

यह खबर एक अमीर जमींदार के पास भी पहुँची तो उसने अपने कुछ नौकरों को उस अमर कलम वाले मा चैन को अपने घर लाने के लिये भेजा। उस जमींदार के नौकर मा चैन को जमींदार के घर ले आये।

पर मा चैन को मालूम था कि यह जमींदार बहुत लालची था और वह लालची जमींदार उसकी इस होशियारी को अपने किसी बुरे इरादे को पूरा करने के लिये इस्तेमाल करेगा।

सो जब उसने उससे कुछ बनाने के लिये कहा तो उसने उसको वह बनाने के लिये मना कर दिया।

उसको सजा देने के लिये उस जमींदार ने मा चैन को अपनी घुड़साल में डाल दिया और वहॉ उसको बिना खाने और कम्बल के तब तक बन्द कर के रखा जब तक वह उसके लिये जो वह कहता था वह बनाने के लिये तैयार नहीं हो जाता था।

पर मा चैन के पास उसका कलम अभी भी उसकी कमीज की जेब में रखा था। उसने उससे एक स्टोव और कुछ पेस्ट्रीज़ की तस्वीरें खींचीं ताकि वह कुछ गर्म रह सके और कुछ खा सके।

उन पेस्ट्रियों की खुशबू उस जमींदार के खाने वाले कमरे में पहुँची तो उसने अपने नौकरों को उससे वह कलम छीन कर लाने के

लिये कहा। उसके दस नौकर उसको लाने के लिये दौड़े पर मा चैन एक सीढ़ी से हो कर उस घुड़साल की छत पर चढ़ गया।

जब वे नौकर उस सीढ़ी पर चढ़ कर उसको पकड़ने दौड़े तो वह सीढ़ी उनके पैरों के नीचे से गायब हो गयी और वे सब नीचे गिर पड़े। जितनी देर में वे अपने गिरने से सॅभले तब तक तो मा चैन वहॉ से गायब ही हो चुका था।

वह बेचारा दिन रात भागता ही रहा जब तक कि वह एक ऐसे गॉव में नहीं पहुॅच गया जो उसको अपने गॉव जैसा लग रहा था। वह वहॉ बाजार की जगह के पास एक झोंपड़ी में ठहर गया और वहॉ रेत में कई दिनों तक बहुत सारी और बहुत तरह की तस्वीरें बनाता रहा।

जो कोई भी बाजार जाता या बाजार से आता हर आदमी उस की तस्वीरों को देखता और तारीफ करता पर मा चैन इस बात का खास ख्याल रखता कि वह वहॉ कोई भी तस्वीर पूरी नहीं करता क्योंकि उसको मालूम था कि किसी भी तस्वीर को पूरा करने से उसकी वह तस्वीर ज़िन्दा हो जाती और लोग उसको पहचान जाते।

अगर वह किसी आदमी की तस्वीर बनाता तो या तो उसका हाथ छोड़ देता या पैर छोड़ देता। अगर वह कोई चिड़िया बनाता तो उसकी ऑख नहीं बनाता और अगर वह कोई घर बनाता तो उस घर के दरवाजे नहीं होते।

एक दिन मा चैन ने एक सारस बनाया तो उसकी झोंपड़ी के आस पास बहुत सारे लोग इकट्ठे हो गये और उन्होंने उस सारस की बहुत तारीफ की।

जैसे ही वह उनको धन्यवाद देने के लिये पीछे मुड़ा तो गलती से काली स्याही की दो बूँद उस चिड़िया के सिर पर गिर पड़ीं। बस वह सारस तुरन्त ही ज़िन्दा हो गया और उड़ गया और मा चैन का भेद खुल गया। जल्दी ही वहॉ के बादशाह ने उसको अपने पास बुलवा लिया।

वह बादशाह भी बहुत लालची था। मा चैन उस लालची बादशाह के लिये भी कुछ बनाना नहीं चाहता था। सो जब बादशाह ने उसको एक ड्रैगन[153] बनाने के लिये कहा तो उसने एक सॉप बना दिया जिसने उसके ऊपर थूक दिया।

और जब उसने उसको एक फीनिक्स[154] बनाने के लिये कहा तो उसने एक काला कौआ बना दिया जो बादशाह के सिर के ऊपर से बीट करता उड़ गया।

[153] A dragon is a legendary creature, typically with serpentine or reptilian traits, that features in the myths of many cultures. There are two distinct cultural traditions of dragons: the European dragon, derived from European folk traditions and ultimately related to Greek and Middle Eastern mythologies, and the Chinese dragon, with counterparts in Japan, namely the Japanese dragon, Korea and other East Asian countries. See its picture above.

[154] A phoenix or phenix is a long-lived bird that is cyclically regenerated or reborn. Associated with the Sun, a phoenix obtains new life by arising from the ashes of its predecessor. See its picture above.

अब तक बादशाह उस लड़के की चालों से थक गया था सो उसने मा चैन से उसका कलम छीन लिया और खुद उस कलम से तस्वीरें बनाने लगा।

उसने जेड, लाल, हीरे, क्रिस्टल का एक पहाड़ बनाया। वह उसको तब तक बनाता रहा जब तक कि वह उसके सिंहासन से ऊँचा नहीं हो गया। जब बादशाह ने देखा कि उसकी दौलत काफी हो गयी तो उसने वह कलम तो एक तरफ को फेंक दिया और वह खुद उन जवाहरातों पर कूद गया।

कूदते ही उसके मुँह से एक चीख निकली क्योंकि वह जवाहरात का ढेर तो जानवरों की गन्दगी का एक ढेर बन गया था। बादशाह उस ढेर में मुश्किल से साँस ले पा रहा था और उस ढेर में से निकलने के लिये परेशान हो रहा था।

बादशाह हर साँस पर मा चैन को गालियाँ दे रहा था। उसके चौकीदारों ने उस ढेर की बदबू से बचने के लिये और बादशाह को उस ढेर में से निकालने के लिये अपनी अपनी नाकों और मुँहों पर रूमाल रखे हुए थे।

इस बदबू से निकलने के लिये बादशाह को चार दिन लग गये। यह बदबू उसकी खाल तक में घुस गयी थी।

जब वह ठीक हो गया तो उसने एक बार फिर मा चैन को अपने राज दरबार में बुलाया और उससे कहा — "इस बार मैं तुमको कहता हूँ कि तुम कोई ऐसी तस्वीर बनाओ जो आँखों को

सुन्दर लगे। तुम समुद्र का एक ऐसा दृश्य बनाओ जिसको मैं जब भी मेरा मन उदास हो तो मैं उसको देख कर अपना मन बहला सकूँ।"

मा चैन तो वह दरबार छोड़ने के लिये बेचैन था सो उसने एक शान्त समुद्र का दृश्य बनाया।

बादशाह यह दृश्य देख कर बहुत खुश हुआ तो उसने उससे कहा कि वह उसमें कुछ मछलियाँ भी बनाये। सो मा चैन ने उस समुद्र में सैंकड़ों तरह की, सब साइज़ की और सब शक्लों की, मछलियाँ बना दीं।

बादशाह अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। वह उसमें एक नाव भी चाहता था सो मा चैन ने उस समुद्र में एक बड़ी सी लकड़ी की नाव भी बना दी। बादशाह उस नाव को देख कर इतना खुश हुआ कि वह तुरन्त ही उस नाव में कूद कर बैठ गया।

पर अब बादशाह को उस नाव को चलाने के लिये हवा चाहिये था। मा चैन ने वैसा ही किया जैसा बादशाह ने उससे करने के लिये कहा। पर बादशाह को और ज़्यादा हवा चाहिये थी सो उस लड़के ने हवा के लिये पाँच गहरे काले निशान बना दिये।

ये निशान इतने गहरे थे कि उन निशानों से इतनी तेज़ बारिश हो गयी और इतने ज़ोर का तूफान पैदा हो गया कि उसने नाव को बहुत ज़ोर से झंझोड़ दिया और फिर करीब करीब डुबो दिया।

बादशाह ने उस नाव के मस्तूल को कस कर पकड़ रखा था और वह सहायता के लिये चिल्ला रहा था। सो मा चैन ने समुद्र में उठे उस तूफान को शान्त करने के लिये एक बहुत बड़े सूरज की तस्वीर बनायी।

इसके बाद कि इससे पहले उसको कोई वहाँ रोक सकता वह महल से अपनी जान बचा कर भाग लिया। जब मा चैन वहाँ से भाग गया तो वह समुद्र और तूफान सभी गायब हो गये।

बादशाह ने अपने आपको अपने सिंहासन के पास बने पानी के एक गड्ढे में पड़ा पाया। वह डर गया था कि मा चैन उसकी जगह ले सकता था सो उसने उस लड़के को अपने राज्य में कहीं भी रहने और घूमने की इजाज़त दे दी।

उस दिन से सब अमीर लोग मा चैन से डरने लगे थे और वह अब केवल चीन के गाँवों के गरीब लोगों को बीच में ही काम करता था। और गाँव के लोग उससे बहुत खुश थे क्योंकि वह हमेशा उनकी सहायता में ही लगा रहता था।

List of the Stories of “China: Myths and Legends-1”

1. Pan Ku's Creation
2. Ten Red Crows
3. Nu Wa Repairs the Sky
4. The Child No One Wanted
5. Rice From Heaven
6. The First Cat
7. Why the Sea Is Salty
8. The Water Ghost and the Fisherman
9. The Merchant's Revenge
10. The Loud-Mouthed Woman
11. Rat's Wedding
12. The Spotted Dear and the Tiger
13. Kuan Yin's Prophecy
14. Kuan Yin
15. Chang Ku Lao's Test
16. Emperor's Commands
17. Donkey's Powers
18. The Sun and Moon Lake

List of the Stories of "China: Myths and Legends-2"

19. Wang Erh and the Golden Hair Pin
20. The Wild Cat's Mistake
21. Liang Yu Ching's Punishment
22. The Child of Mulberry Tree
23. Yo Lung Mountain
24. Dragon Gate Mountain
25. The Silver Pot and the Boiling Sea
26. Five Men Mountains
27. The Story of the Cockscomb
28. The Dumb Flute Player
29. The Pagoda Tree
30. Why an Earthworm Does Not Have Eyes
31. Min River
32. Ting Ling Godess
33. The Little Fox and the Pomegranate King
34. Pai Hua Lake
35. Mad Monk
36. The Island sof Immortals
37. Into the Mouth of the Lion
38. Ma Chen and His Immortal Brush Pen

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश् लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022